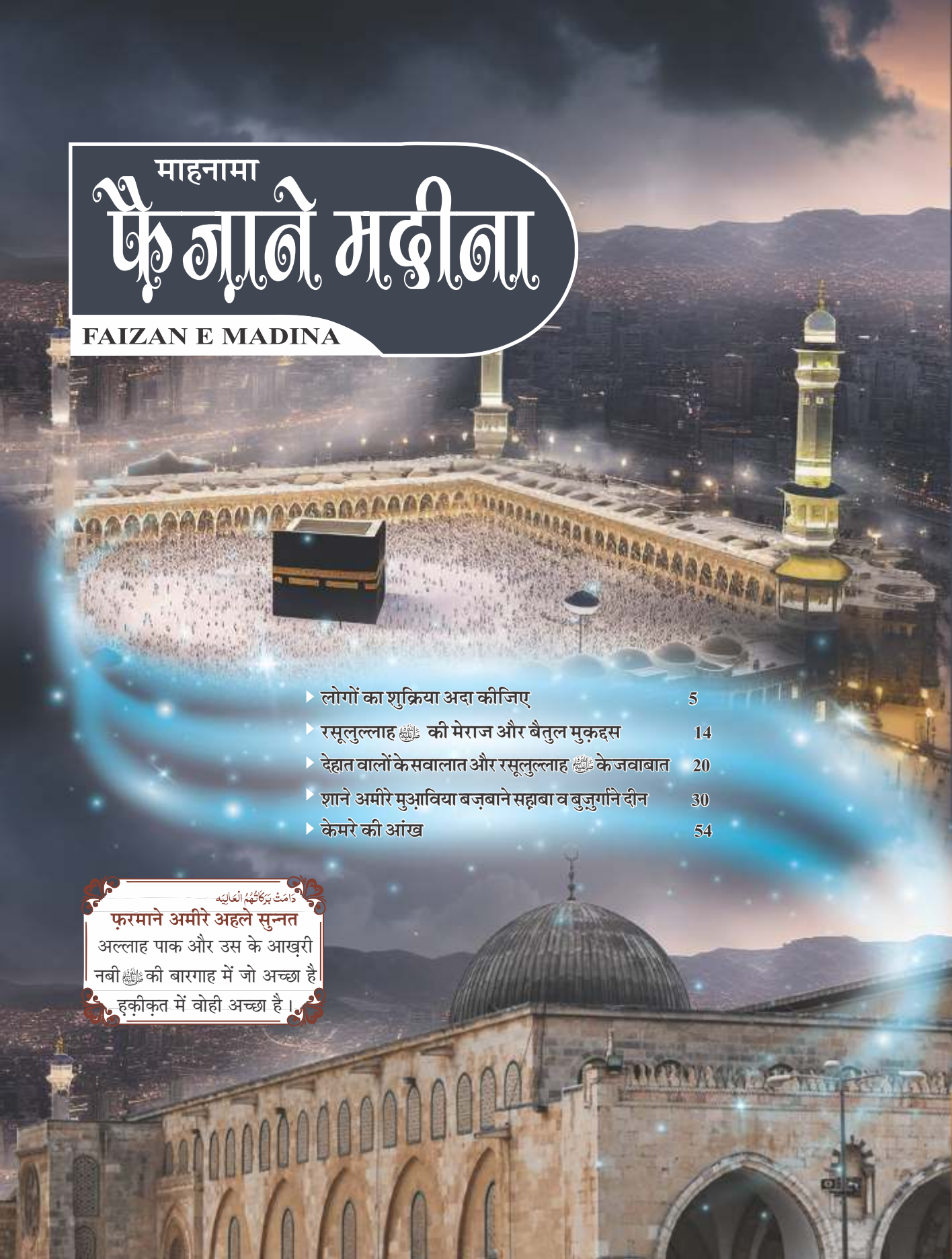

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

FAIZAN E MADINA

- लोगों का शुक्रिया अदा कीजिए 5
- रसूलुल्लाह ﷺ की मेराज और बैतुल मुक़द्दस 14
- देहात वालों के सवालात और रसूलुल्लाह ﷺ के जवाबात 20
- शाने अमीरे मुआविया बज़बाने सहाबा व बुज़ुर्गाने दीन 30
- केमरे की आंख 54

دامت بركاتهم العاليه

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत

अल्लाह पाक और उस के आख़री नबी ﷺ की बारगाह में जो अच्छा है हक़ीक़त में वोही अच्छा है।

बे औलाद जोड़े मुतवज्जेह हों !

یَااَوَّلُ 41 बार रोज़ाना पढ़िए, साहिबे औलाद हो जाएंगे। اِن شَآءَاللہ (मुद्दत : 40 दिन)

(ज़िन्दा बेटी कुंवें में फेंक दी, स. 22)

एपेन्डिक्स का रूहानी इलाज

आयतुल कुर्सी 11 बार और یَاعَظِیْمُ 7 बार (अव्वल आख़िर तीन बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर एक चुटकी नमक पर दम कर के उस को पानी में डाल कर पी लीजिए। येह अमल दिन में तीन बार कीजिए। اِن شَآءَاللہ एपेन्डिक्स ख़त्म हो जाएगा। (बीमार आबिद, स. 43)

कमर के दर्द का रूहानी इलाज

फ़ज्र की सुन्नतों और फ़र्ज़ के दरमियान 41 बार सूरतुल फ़ातिहा पढ़िए, हर बार पेहले बिस्मिल्लाह शरीफ़ भी पढ़िए। (बीमार आबिद, स. 37) اِن شَآءَاللہ कमर के दर्द से नजात मिलेगी।

कमर और जोड़ों का दर्द

हदीसे पाक में है : اِسْتَشْفُوْا بِالْحُلْبَةِ यानी "मेथी से शिफ़ा हासिल करो।" (تزیین الشریعۃ، 2/246)

मेथी को अरबी में हुल्बा, फ़ारसी में शम्बलीला, पश्तो में मल्ख़ूज़ा और अंग्रेज़ी में (फ़ेनूग्रीक) FENUGREEK बोलते हैं।

1 मेथी का इस्तेमाल कमर दर्द, तिल्ली के वरम और गंठिया (जोड़ों के दर्द) वग़ैरा में नाफ़िअ (यानी फ़ाइदेमन्द) है। 2 मेथी दाने गुड़ के साथ जोश दे कर इस्तेमाल करने से कमर और जोड़ों के दर्द में आराम आता है। 3 गंठिया (यानी जोड़ों के दर्द) के लिए मेथी के दस ग्राम ताज़ा पत्ते पानी में पीस कर सुब्ह नहार मुंह इस्तेमाल कीजिए। (मेथी के पत्ते सब्ज़ी वालों से मिल सकते हैं)

(रिसाला : मेथी के 50 मदनी फूल, स. 1, 3)

माहनामा
फ़ैज़ाने मदीना
Monthly Magazine
FAIZANE MADINA (HINDI)

ब फ़ैज़ाने नज़र
सिराजुल उम्मह, काशिफुल गुम्मह,
इमामे आज़म फ़क़ीहे अफ़ख़म हज़रते सैयदना
इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

ब फ़ैज़ाने करम
आला हज़रत इमामे एहले सुन्नत
मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह
इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर
(अज़ : अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER
HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI
BUTVALA'S CHAWL,
NR. CENTRAL WARE HOUSE,
DANILIMDA, AHMEDABAD-380028.
(GUJARAT)

PLACE OF PRINTING
MODERN ART PRINTERS
OPP : PATEL TEA STALL,
DABGARWAD NAKA,
DARIYAPUR, AHMEDABAD-380001.

क़ीमत : Rs. 45=00
पोस्ट ख़र्च एकस्ट्रा
bookmahnama@gmail.com

कुरआनो हदीस
राहे ख़ुदा में ख़र्च की तरग़ीब के क़ुरआनी असालीब (क़िस्त : 01) — 3
लोगों का शुक्रिया अदा कीजिए — 5
फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत — रजब के नफ़्ली रोज़े छूट जाएं तो क्या करें ? मअ़ दीगर सवालात — 8
दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत — वुज़ू में सर का मस्ह करने से पेहले उंगलियां चूमना कैसा ? मअ़ दीगर सवालात — 10
मज़ामीन
खाने पीने की चीज़ें ज़ाएअ़ ना कीजिए — 12
रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मेराज और बैतुल मुक़द्दस — 14
गुनाह हो जाए तो..... — 16
इस्लाम और तालीम (क़िस्त : 01) — 18
देहात वालों के सवालात और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जवाबात (क़िस्त : 02) — 20
रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सहाबियात के साथ अन्दाज़ (दूसरी और आख़री क़िस्त) — 22
जन्नत वाजिब करवाने वाली नेकियां (क़िस्त : 03) — 23
मेहंगाई (Inflation) — 24
ताजिरों के लिए — कामयाब तिजारत में इस्तेक़ामत का किरदार — 25
बुज़ुर्गाने दीन की सीरत
हज़रते सैयदना शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام (क़िस्त : 01) — 27
हज़रत मुहम्मद बिन हातिब जुमही رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا — 29
शाने अमीरे मुआ़विया व ज़बाने सहाबा व बुज़ुर्गाने दीन — 30
अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए — 32
मुतफ़र्रिक़
यमन और अहले यमन के मुतअ़ल्लिक़ अहादीसे मुबारका (चौथी और आख़री क़िस्त) — 34
अढ़ाई साल में अ़वामी ख़ुशहाली का राज़ (क़िस्त : 01) — 37
सेहत व तन्दुरुस्ती
रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ग़िज़ाएं (शहद) — 38
गुर्दे की पथरी (अस्बाब, अ़लामात व इलाज) — 40
क़ारेईन के सफ़हात
नए लिखारी — 42
ख़्वाबों की ताबीरें — 46
बच्चों का "फ़ैज़ाने मदीना"
अज़ान की फ़ज़ीलत व अहमिय्यत / हुरूफ़ मिलाइए ! — 47
बा बरकत कुर्ता — 48
होम वर्क — 49
बच्चों के इस्लामी नाम — 50
इस्लामी बहेनों का "फ़ैज़ाने मदीना" — ख़वातीन की विरासत — 51
केमरे की आंख — 53
इस्लामी बहेनों के शरई मसाइल — 54

अ़र्ज़ : फ़ैज़ाने मदीना का बुकिंग करवाना हो या इस के बारे में कोई मश्वरा देना हो या कोई शिकायत हो या कोई भूल नज़र आए तो इस नम्बर पर कॉल, मेसेज या वोट्स एप कर सकते हैं । 7284872841

(क़िस्त : 01)

राहे ख़ुदा में ख़र्च

की तरग़ीब के क़ुरआनी असालीब (त़रीक़े)

अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया :

﴿مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَیُضٰعِفَهٗ لَهٗۤ اَضْعَافًا كَثِیْرَةًؕ وَ اللّٰهُ یَقْبِضُ وَ یَبْصُۜطُ۪ وَ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ(۲۴۵)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : है कोई जो अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दे तो अल्लाह उस के लिए उस क़र्ज़ को बहुत गुना बढ़ा दे और अल्लाह तंगी देता है और वुस्अ़त देता है और तुम उसी की त़रफ़ लौटाए जाओगे। (پ02، البقرۃ:245)

तफ़्सीर : राहे ख़ुदा में इख़्लास के साथ ख़र्च करना बहुत मेह़बूब अ़मल है। अल्लाह पाक ने इसे ख़ुदा को क़र्ज़ देने से ताबीर फ़रमाया, येह अल्लाह पाक का कमाल दरजे का लुत़्फ़ो करम है, क्यूंकि मख़्लूक़ की जानो माल सब का ख़ालिक़ो मालिक ख़ुदा है और बन्दा उस की अ़त़ा से सिर्फ़ मजाज़ी मालिक है, मगर इस के बा वुजूद फ़रमाया कि सदक़ा देने वाला, गोया ख़ुदा को क़र्ज़ देने वाला है। यानी जैसे क़र्ज़ देने वाले को इत़्मीनान होता है कि उसे उस का माल वापस मिल जाएगा ऐसा ही राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वाला मुत़्मइन रहे कि उसे ख़र्च करने का बदला यक़ीनन मिलेगा और वोह भी मामूली नहीं, बल्कि कई गुना बढ़ा कर, जो सात सौ गुना भी हो सकता है और इस से लाखों गुना ज़ाइद भी, जैसा कि सूरतुल बक़रह की आयत 261 में है। सदक़े से माल में बरकत और आख़ेरत में अज्रो सवाब मिलता है।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं : जब येह आयत "مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا" नाज़िल हुई तो ह़ज़रते अबू दह़दाह़ अन्सारी رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! क्या अल्लाह पाक चाहता है कि हम क़र्ज़ दें ? नबी ए करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم ने फ़रमाया : हां ऐ अबू दह़दाह़ ! उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! अपना दस्ते अक़्दस मुझे दिखाइए, ह़ज़रते अबू दह़दाह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने दस्ते अक़्दस थाम कर अ़र्ज़ की : मैं ने अपना बाग़ अपने रब्बे करीम की बारगाह में बत़ौरे क़र्ज़ पेश कर दिया। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं : "उन के बाग़ में 600 खजूर के दरख़्त थे और उन के बीवी, बच्चे भी उसी में रेहते थे, ह़ज़रते अबू दह़दाह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ अपने घर के क़रीब आए और अहले ख़ाना को आवाज़ दी कि ऐ उम्मे दह़दाह़ ! बीवी ने कहा : जी, मैं ह़ाज़िर हूं। ह़ज़रते अबू दह़दाह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : चलो, इस बाग़ से निकल चलें, क्यूंकि मैं ने इस बाग़ को अपने रब्बे करीम की बारगाह में बत़ौरे क़र्ज़ पेश कर दिया है। (شعب الایمان، 3/249، حدیث:3452)

राहे ख़ुदा में ख़र्च की तरग़ीब के मुनफ़रिद अन्दाज़

क़ुरआने मजीद में इस मौज़ूअ़ पर इतनी आयात हैं कि उ़लमा ने इस से ज़ख़ीम किताबें मुरत्तब की हैं, चन्द सफ़्ह़ात के मज़्मून में उन का इह़ात़ा मुमकिन ही नहीं। चन्द एक का यहां ज़िक्र किया जाता है।

तरग़ीब का पेहला अन्दाज़ : "मिसाल" इन्सानी फ़ेहम के क़रीब और ज़ियादा दिल नशीन होती है। अल्लाह पाक ने मुतअ़द्दद आयात में मिसालों के ज़रीए राहे ख़ुदा में ख़र्च की तरग़ीब दी, जैसा कि ख़ुद ऊपर उ़न्वान में बयान कर्दा आयत भी मिसाल ही की सूरत है और इस के इ़लावा फ़रमाया :

﴿مَثَلُ الَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِیْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍؕ وَ اللّٰهُ یُضٰعِفُ لِمَنْ یَّشَآءُؕ وَ اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ(۲۶۱)﴾

तर्जमा : उन लोगों की मिसाल जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उस दाने की त़रह है जिस ने सात बालियां

उगाई, हर बाली में सौ दाने हैं और अल्लाह इस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिए चाहे और अल्लाह वुस्अ़त वाला, इल्म वाला है। (پ03، البقرۃ:261) मिसाल की वज़ाहत येह है कि जैसे कोई आदमी ज़मीन में एक दाना बीज डालता है, जिस से सात बालियां उगती हैं और हर बाली में सौ दाने पैदा होते हैं। गोया एक दाना बीज के तौर पर डालने वाला सात सौ गुना ज़ियादा हासिल करता है, इसी तरह़ जो शख़्स राहे ख़ुदा में ख़र्च करता है, अल्लाह पाक उसे उस के इख़्लास के एतेबार से सात सौ गुना ज़ियादा सवाब अ़ता फ़रमाता है और येह भी कोई ह़द नहीं, बल्कि अल्लाह पाक के ख़ज़ाने भरे हुवे हैं और वोह करीम व जव्वाद है, जिस के लिए चाहे, उसे इस से भी ज़ियादा सवाब अ़ता फ़रमा दे।

तरग़ीब का दूसरा अन्दाज़ : कई मक़ामात पर अल्लाह पाक ने राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वाले के जज़्बे, अन्दाज़ और सिला व इन्आ़म को बयान कर के तरग़ीब दी है, चुनान्चे फ़रमाया :

﴿اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّیْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّ عَلَانِیَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ﴾

तर्जमा : वोह लोग जो रात में और दिन में, पोशीदा और अ़लानिया अपने माल ख़ैरात करते हैं, उन के लिए उन का अज्र उन के रब के पास है। उन पर ना कोई ख़ौफ़ होगा और ना वोह ग़मगीन होंगे। (پ03، البقرۃ:274) यानी बहुत से लोग अल्लाह पाक की राह में ख़र्च करने का निहायत शौक़ रखते हैं और शबो रोज़ ख़ुदा की राह में ख़र्च करते हैं, यूंही मौक़अ़ महल की मुनासबत से कहीं अ़लानिया देते हैं और कहीं छुपा कर।

तरग़ीब का तीसरा अन्दाज़ : इन्सान दूसरों के अ़मल से जज़्बा ह़ासिल करता है। अल्लाह पाक ने राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वालों के ईमान अफ़रोज़ वाक़ेआ़त बयान फ़रमा कर तरग़ीब दी। चुनान्चे फ़रमाया :

﴿وَ یُؤْثِرُوْنَ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ وَ لَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ﴾

तर्जमा : और वोह अपनी जानों पर तरजीह़ देते हैं, अगर्चे उन्हें ख़ुद ह़ाजत हो। (پ 28، الحشر:9) येह अन्सार सह़ाबा के वाक़ेआ़त की त़रफ़ इशारा है, जिन्हों ने मुहाजिरीन को अपने घरों में ठेहराया, अपना आधा माल मुहाजिरों को दे दिया और यूं ईसार कर के मुहाजिरीन को अपनी जानों पर तरजीह़ देते हैं, अगर्चे उन्हें ख़ुद भी माल की ह़ाजत थी। इस जज़्बए ईसार का मर्तबए कमाल मुलाह़ज़ा करें कि ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान फ़रमाते हैं कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बह़रैन (अ़लाक़े) में जागीरें बख़्शने के लिए अन्सार को बुलाया, तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : अगर आप ने येही करना है, तो हमारे क़ुरैशी भाइयों के लिए लिख दीजिए, ह़ालांकि क़ुरैश उस वक़्त नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ना थे। (بخاری، 2/102، حدیث:2377) इसी जज़्बए ईसार का वाक़ेआ़ दूसरी जगह यूं बयान फ़रमाया : ﴿وَ یُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِیْنًا وَّ یَتِیْمًا وَّ اَسِیْرًا﴾ तर्जमा : और वोह अल्लाह की मह़ब्बत में मिस्कीन और यतीम और क़ैदी को खाना खिलाते हैं। (پ29، الدھر:08)

तरग़ीब का चौथा अन्दाज़ : बा हिम्मत इन्सान के मिज़ाज में चेलेन्ज का मुक़ाबला करना, दुश्वार उमूर को सर अन्जाम देना और कठिन कामों में हाथ डाल कर बहादुरी दिखाना है। अल्लाह पाक ने इसी इन्सानी नफ़्सिय्यात के एतेबार से तरग़ीब देते हुवे फ़रमाया :

﴿فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۟ وَ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ؕ فَكُّ رَقَبَةٍ ۙ اَوْ اِطْعٰمٌ فِیْ یَوْمٍ ذِیْ مَسْغَبَةٍ ۙ یَّتِیْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۙ اَوْ مِسْكِیْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ؕ﴾

तर्जमा : फिर बग़ैर सोचे समझे क्यूं ना घाटी में कूद पड़ा ? और तुझे क्या मालूम कि वोह घाटी क्या है ? किसी बन्दे की गर्दन छुड़ाना या भूक के दिन में खाना देना रिश्तेदार यतीम को, या ख़ाक नशीन मिस्कीन को। (پ30، البلد:11...16)

तरग़ीब का पांचवां अन्दाज़ : इन्सान अपने हम जिन्स यानी इन्सान की परेशानियों पर दुख मेह़सूस करता है और ऐसे मवाक़ेअ़ पर मदद ना करने को निहायत मज़मूम शुमार करता है। अल्लाह पाक ने मेह़रूम त़बक़े के ज़िक्र और उन की मदद ना करने पर मज़म्मत कर के ख़र्च करने की तरग़ीब दी। चुनान्चे फ़रमाया :

﴿اَرَءَیْتَ الَّذِیْ یُكَذِّبُ بِالدِّیْنِ ؕ فَذٰلِكَ الَّذِیْ یَدُعُّ الْیَتِیْمَ ۙ وَ لَا یَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِیْنِ ؕ﴾

तर्जमा : क्या तुम ने उस शख़्स को देखा जो दीन को झुटलाता है, फिर वोह ऐसा है जो यतीम को धक्के देता है और मिस्कीन को खाना देने की तरग़ीब नहीं देता। (پ30، الماعون:1...3) और फ़रमाया : ﴿كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْیَتِیْمَ ۙ وَ لَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِیْنِ ۙ﴾ तर्जमा : हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम यतीम की इ़ज़्ज़त नहीं करते और तुम एक दूसरे को मिस्कीन के खिलाने की तरग़ीब नहीं देते। (پ30، الفجر:17.18)

बक़िय्या अगले माह के शुमारे में

लोगों का शुक्रिया अदा कीजिए

सोश्यल लाइफ़ में कई मुआ़मलात में लोग एक दूसरे से तआ़वुन करते हैं, इस पर कुछ लोग दूसरों का शुक्रिया अदा करते हैं और कुछ लोग नहीं करते ! इस्लामी तालीमात में लोगों का शुक्रिया अदा करना बहुत ही अहम है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَا يَشْكُرُ اللهَ مَنْ لَّا يَشْكُرُ النَّاسَ जो लोगों का शुक्र अदा नहीं करता वोह अल्लाह पाक का शुक्र गुज़ार नहीं हो सकता ।[1]

शर्हे ह़दीस

बन्दों का शुक्रिया अदा ना करने वाला शख़्स रब्बे काइनात का ना शुक्रा (Unthankful) क्यूं होता है ? इस की वज्ह मुख़्तलिफ़ शारेहीने ह़दीस ने येह बयान की :

1 इस लिए कि ऐसे शख़्स ने उन लोगों का शुक्रिया अदा करने में अल्लाह के हुक्म पर अ़मल नहीं किया कि उन लोगों का शुक्र अदा करो जो मेरी नेमतें तुम तक पहुंचने का वसीला (Means) बने ।[2]

2 क्यूंकि बन्दे को देने वाले दो हैं, एक ह़क़ीक़ी मोअ़ती (देने वाला, (Bestower) और दूसरा ज़ाहिरी मोअ़ती (देने वाला, (Bestower) (1) ह़क़ीक़ी मोअ़ती अल्लाह रब्बुल आ़लमीन है जिस ने अस्बाब और ज़राएअ़ मुक़र्रर फ़रमा दिए हैं, मसलन किसी की रोज़ी का वसीला किसी पेशे (Profession) को बनाया, किसी के लिए तिजारत को, किसी के लिए ज़राअ़त को और कुछ के लिए सदक़ात व ज़कात वग़ैरा को वास्ता व वसीला बनाया । (2) ज़ाहिरी मोअ़ती वोह शख़्स है जिस ने हमें कोई चीज़ दी या हमारे साथ कोई भलाई या ख़ैर ख़्वाही की ।

जब मोअ़ती दो हैं तो अगर हम बन्दों का शुक्रिया अदा नहीं करेंगे तो अल्लाह पाक को येह ना पसन्द होगा चुनान्चे वोह हमारे शुक्र को क़बूल नहीं फ़रमाएगा या उस शुक्र को कामिल क़रार नहीं देगा क्यूंकि हम से उस के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी हुई है कि उस शख़्स का शुक्रिया अदा नहीं किया जिस का शुक्र अदा करने का ख़ुद अल्लाह करीम ने फ़रमाया था ।[3]

शुक्रे इलाही और शुक्रे वालिदैन का एक साथ हुक्म

रब्बे करीम ने क़ुरआने पाक में शुक्र के बारे में फ़रमाया : ﴿اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَ لِوَالِدَيْكَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मेरा और अपने वालिदैन का शुक्र अदा करो ।[4]

ह़ज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि जिस ने पांचों नमाज़ें अदा कीं वोह अल्लाह करीम का शुक्र बजा लाया और जिस ने पांचों नमाज़ों के बाद वालिदैन के लिए दुआ़एं कीं तो उस ने वालिदैन की शुक्र गुज़ारी की ।[5]

शौहर की नाशुक्री की वज्ह से जहन्नम में जाने वालियां

बीवी का शौहर की नाशुक्री करना, उसे दुन्या और आख़िरत में नुक़्सान पहुंचा सकता है, रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने औ़रतों से फ़रमाया : ऐ औ़रतो ! सदक़ा किया करो क्यूंकि मैं ने अक्सर तुम को जहन्नमी देखा है । ख़वातीन ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किस सबब से ? फ़रमाया : इस लिए कि तुम लानत बहुत करती हो और अपने शौहर की नाशुक्री करती हो ।[6]

शुक्रिया किस त़रह़ अदा किया जाए ?

रहा येह सवाल कि बन्दों का शुक्रिया किस त़रह़ अदा किया जाए ? तो इस्लामी तालीमात में इस के कई अन्दाज़ बयान किए गए हैं जिन में से कोई एक या सारे भी अपनाए जा सकते हैं : ❁ किसी ने कोई चीज़ दी तो बदले में हो सके तो येह भी कोई शै दे दे ❁ किसी ने उस के साथ अच्छाई या भलाई की तो उस की तारीफ़ कर दे ❁ उस के लिए दुआ कर दे बल्कि येह केह दे : جَزَاكَ اللّٰهُ خَيراً ❁ उस के एह़सान को याद रखे ।

अलह़ाज मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : बन्दे का शुक्रिया हर त़रह़ का चाहिए : 1 दिली 2 ज़बानी 3 अ़मली । यूंही रब का शुक्रिया भी हर क़िस्म का करे, बन्दों में मां-बाप का शुक्रिया और है ! उस्ताद का शुक्रिया कुछ और ! शैख़, बादशाह का शुक्रिया कुछ और !(7)

सोश्यल मीडिया के इस दौर में मज़ीद आसानी हो गई है कि हज़ारों किलो मीटर दूर मौजूद किसी शख़्स का शुक्रिया टेक्स्ट, ऑडियो या वीडियो मेसेज के ज़रीए भी अदा किया जा सकता है ।

शुक्रिया के त़रीक़े के बारे में 4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

1 जिसे कोई चीज़ अ़त़ा की गई अगर वोह त़ाक़त रखे तो उस का बदला दे, अगर त़ाक़त ना हो तो उस की तारीफ़ कर दे क्यूंकि जिस ने तारीफ़ की उस ने शुक्र अदा किया और जिस ने इसे छुपाया उस ने ना शुक्री की ।(8)

2 जो तुम से भलाई के साथ पेश आए तो उसे अच्छा बदला दो और अगर तुम इस की इस्तेत़ाअ़त ना रखो तो उस के लिए इतनी दुआ करो कि तुम्हें यक़ीन हो जाए कि उस का बदला चुका दिया है ।(9)

3 जिस के साथ अच्छा सुलूक किया जाए उसे चाहिए कि इसे याद रखे क्यूंकि जिस ने एह़सान को याद रखा गोया उस ने इस का शुक्र अदा किया और जिस ने इसे छुपाया बेशक उस ने ना शुक्री की ।(10)

4 जिस के साथ भलाई की गई और उस ने भलाई करने वाले को جَزَاكَ اللّٰهُ خَيراً (यानी अल्लाह पाक तुझे बेहतरीन जज़ा दे) कहा तो वोह सना को पहुंच गया ।(11)

दुआ के बदले दुआ दिया करतीं

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की येह आदते मुबारका थी कि जब कोई सवाली आप को दुआ देता तो आप भी उसे वैसी ही दुआ देतीं जैसी वोह आप के लिए करता और फिर उसे कुछ माल अ़त़ा फ़रमातीं, किसी ने पूछा : आप साइल को माल भी अ़त़ा फ़रमाती हैं और वोही दुआ भी दे देती हैं जो साइल आप के लिए करता है ? ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इरशाद फ़रमाया : अगर मैं वैसी ही दुआ ना दूं तो साइल की दुआ की वज्ह से उस का जो ह़क़ मुझ पर है वोह उस ह़क़ से बढ़ जाएगा जो मेरे सदक़े की वज्ह से उस पर है, लेहाज़ा वोह जैसी दुआ मेरे लिए करता है मैं भी उस के लिए वैसी ही दुआ कर देती हूं, ताकि मेरी दुआ से उस की दुआ का पूरा बदला उतर जाए और मेरा सदक़ा (किसी एह़सान का बदला बनने के बजाए) ख़ालिस रिज़ा ए इलाही के लिए हो जाए ।(12)

शुक्रिया अदा करने के मवाक़ेअ़

रोज़ाना की बुन्याद पर ना जाने कितने लोग हमारी ज़िन्दगी को आसान बनाते हैं, हमारी परेशानियां दूर करते हैं, हमें सहूलतें देते हैं, अगर हम नोट करें तो रोज़ाना शायद सेंकड़ों मवाक़ेअ़ (Opportunities) ऐसे मिलेंगे जहां हमें लोगों का शुक्रिया अदा करना चाहिए, मसलन ❁ किसी ने रास्ता बता दिया ❁ हमारे लिए दुआ कर दी ❁ हमें ठन्डा पानी पिला दिया ❁ इल्मे दीन सिखा दिया ❁ शरीअ़त का कोई मस्अला समझा दिया ❁ ट्रेफ़िक में रास्ता दे दिया ❁ पब्लिक ट्रान्सपोर्ट में हमें बैठने के लिए जगह दे दी ❁ शदीद सर्दी में गर्म चादर ओढ़ा दी ❁ बिजली जाने पर हाथ के पंखे से हवा दी ❁ अंधेरा होने पर मोबाइल या टॉर्च की लाइट रौशन कर दी ❁ हमारा कुछ सामान ख़ुद उठा कर हमारा बोझ हल्का कर दिया ❁ बग़ैर मुत़ालबे के माली मदद की ❁ लम्बी

क़तार में अपनी जगह हमें दे दी ❁ हमें दफ़्तरी पेचीदगियों से बचाते हुवे हमारे काग़ज़ात वग़ैरा मत़लूबा काउन्टर पर जम्अ़ करवा दिए ❁ शादी बियाह में दूसरे शेहरों से आने वाले मेहमानों की मेज़बानी में अ़मली तआ़वुन किया ❁ कम्प्यूटर चलाना सिखा दिया ❁ बिजली गेस के बिल, टेक्स, गाड़ियों की रजिस्ट्रेशन फ़ीस जम्अ़ करवाने के लिए मोबाइल एप्लीकेशन की मालूमात फ़राहम कीं बल्कि चलाने का त़रीक़ा भी सिखा दिया ❁ ड्राईविंग सिखा दी ❁ मुल्की क़वानीन के बारे में ज़रूरी और मुख़्तसर मालूमात दे दी ❁ हमारी अ़दमे मौजूदगी में हमारे वालिद साहिब या बेटे को अस्पताल की ईमरजन्सी पहुंचा दिया ❁ मुल्क से बाहर होने की सूरत में हमारे किसी रिश्तेदार के ग़ुस्ल, कफ़न और दफ़न वग़ैरा के इन्तेज़ामात संभाले ❁ हमारी ज़रूरत की चीज़ कहे बग़ैर ला कर दे दी ❁ हमें किरदार साज़ी, एज्यूकेशन, माली और घरेलू मसाइल और दुन्या ओ आख़ेरत के ह़वाले से मुफ़ीद तरीन अ़मली मश्वरे दिए। क़ारेईन ! आप ख़ुद ग़ौर करना शुरूअ़ करें तो येह फ़ेहरिस्त बहुत त़वील भी हो सकती है।

हम शुक्रिया अदा क्यूं नहीं करते ?

शुक्रिया अदा करने की इतनी अहमिय्यत और फ़वाइद और मवाक़ेअ़ मिलने के बा वुजूद अक्सर लोग दूसरों का शुक्रिया अदा क्यूं नहीं करते ? इस की कई वुजूहात हो सकती हैं :

❁ सुस्ती की वज्ह से ❁ शुक्रिया के फ़ज़ाइल और फ़वाइद से ला इल्मी ❁ तरबियत में कमी ❁ कोई हमारा शुक्रिया अदा नहीं करता तो हम क्यूं किसी का शुक्रिया अदा करें ! ❁ जो उस ने किया वोह उस की ड्यूटी थी ❁ येह छोटे लोग हैं, इन का शुक्रिया अदा किया तो सर पर चढ़ जाएंगे ❁ अपनों का शुक्रिया थोड़ी अदा किया जाता है ? ❁ एह़सान फ़रामोशी ❁ इतनी छोटी सी बात पर शुक्रिया क्यूं अदा करूं ?

ख़ुद को तब्दील कीजिए

लोगों का शुक्रिया अदा कर के हम अपने रब्बे करीम के शुक्र गुज़ार बन्दे बन सकते हैं। शुक्रिया अदा करना किस शख़्स को अच्छा नहीं लगता ? आप ने जिस जिस का शुक्रिया अदा नहीं किया वोह सोचेगा तो सही कि मैं ने उन के साथ भलाई की उस के जवाब में उन्हों ने ज़बान हिला कर शुक्रिया तक अदा करना गवारा नहीं किया। शुक्रिया अदा करना हमारे अख़्लाक़ी मेयार को बुलन्द भी करता है और आइन्दा के लिए मदद का रास्ता भी खोलता है। फिर आज के मफ़ाद पसन्दी के दौर में किस को पड़ी है कि वोह आप के लिए अपना वक़्त, क़ुव्वत और माल ख़र्च करे, ऐसे लोगों के ख़ुलूस की क़द्र करनी चाहिए, शुक्रिया अदा ना कर के गोया आप उन की ना क़द्री कर रहे होते हैं। एक दिलचस्प वाक़ेआ़ पढ़िए :

पानी पिलाने के शुक्रिया का अनोखा अन्दाज़

ह़ज़रते सईद बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीने शरीफ़ में एक घर के पास से गुज़रे और पानी मांगा, मालिके मकान ने पानी पिला दिया। कुछ अ़र्से बाद जब उस घर से गुज़र हुवा तो एक शख़्स उस घर की बोली लगा रहा था, आप ने अपने ग़ुलाम से कहा : पूछो, येह घर क्यूं फ़रोख़्त किया जा रहा है ? ग़ुलाम ने आ कर बताया कि मालिके मकान पर क़र्ज़ा है। आप मालिके मकान के पास आए तो देखा कि क़र्ज़ ख़्वाह उस के साथ बैठा हुवा है। आप ने पूछा कि तुम मकान क्यूं बेच रहे हो ? उस ने कहा कि इस का मेरे ऊपर चार हज़ार दीनार क़र्ज़ा है, बहरह़ाल आप उस के साथ बैठ कर बातें करने लगे और ग़ुलाम को घर भेजा तो वोह घर से दीनारों से भरी एक थैली ले आया। आप ने चार हज़ार दीनार क़र्ज़ ख़्वाह को और बाक़ी मालिके मकान को दे दिए और सवार हो कर वहां से चल दिए।[13]

अल्लाह पाक हमें शुक्र करने वाला बनाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) ابو داؤد، 4/335، حدیث: 4811 (2) التیسیر بشرح الجامع الصغیر، 2/443 (3) تفصیل کیلئے دیکھئے: مرقاۃ المفاتیح، 1/176، تحت الحدیث: 19 (4) پ21، لقمٰن: 14 (5) بغوی، لقمٰن، تحت الآیۃ: 14، 3/423 (6) بخاری، 1/123، حدیث: 304 (7) مراٰۃ المناجیح، 4/357 (8) ترمذی، 3/417، حدیث: 2041 (9) نسائی، ص422، حدیث: 2565 (10) معجم کبیر، 1/115، حدیث: 211 (11) ترمذی، 3/417، حدیث: 2042 (12) مرقاۃ المفاتیح، 4/431، تحت الحدیث: 1943 (13) روضۃ العقلاء لابن حبان، ص263۔

मदनी मुज़ाकरे के सवाल जवाब

1 रजब के नफ़्ली रोज़े छूट गए तो क्या हुक्म है ?

सवाल : मैं हर साल रजब व शाबान के रोज़े रखता हूं, इस बार मेरे रजब शरीफ़ के दो रोज़े छूट गए हैं। क्या मुझे वोह दो रोज़े रखने पड़ेंगे ?

जवाब : येह नफ़्ल रोज़े हैं, अगर रख कर नहीं तोड़े थे और वैसे ही दिन चले गए हैं तो ज़ाहिर है कि उन की क़ज़ा नहीं होगी। गए दिन वापस तो नहीं आ सकते ! अलबत्ता अफ़्सोस किया जा सकता है और मुमकिन है कि अफ़्सोस की वज्ह से रोज़ा ना रख पाने पर भी सवाब मिल जाए।

2 बच्चों को "येह गुनाह का काम है" केहना कैसा ?

सवाल : बच्चों को बुरी आ़दत से रोकने के लिए इस त़रह़ केहना कैसा : "येह गुनाह का काम है !"

जवाब : अगर वोह गुनाह का काम है तो इस त़रह़ केहने में ह़रज नहीं। अलबत्ता बच्चों को येह ना कहा जाए कि "तुम को गुनाह मिलेगा" क्यूंकि नाबालिग़ को गुनाह नहीं मिलता। अब मुश्किल येह है कि बड़े को समझाओ कि येह गुनाह का काम है तो वोह नहीं समझता तो बच्चा कैसे समझेगा ! और बच्चे को क्या मालूम कि गुनाह क्या होता है ! लेहाज़ा बच्चों को उन ही के अन्दाज़ में समझाना चाहिए। हां, बाज़ बच्चे समझदार होते हैं इस लिए उन्हें यूं समझाना चाहिए कि मसलन "अल्लाह व रसूल नाराज़ हो सकते हैं, जो गुनाह करता है उस को सज़ा मिल सकती है या उस को आग में डाला जा सकता है वग़ैरा" मगर येह ना कहा जाए कि तुम को आग में डाला जाएगा। ह़िक्मते अ़मली के साथ ज़रूरतन मोह़तात़ जुम्ले केह दे तो कोई ह़रज नहीं ताकि बच्चा डरे और गुनाह से बचे। बहर ह़ाल डायरेक्ट बड़ों को भी नहीं केह सकते कि अल्लाह पाक तुझे आग में डालेगा, क्यूंकि हो सकता है कि अल्लाह पाक उसे मुआ़फ़ फ़रमा दे और बे ह़िसाब बख़्श दे।

3 ज़कात में नक़्द (केश) रक़म के इलावा दूसरी चीज़ें देना कैसा ?

सवाल : क्या ज़कात अदा करने के लिए नक़्द (केश) रक़म ही देना ज़रूरी है ?

जवाब : जी नहीं ! ज़कात की अदाएगी के लिए नक़्द रक़म ही देना ज़रूरी नहीं, कोई भी चीज़ माले मुतक़व्विम हो (यानी वोह माल जो जम्अ़ किया जा सकता हो और शरअ़न उस से नफ़्अ़ उठाना मुबाह़ हो। (रद्दुल मुह़तार 7/8) तो वोह मार्केट वेल्यू के ह़िसाब से ज़कात में दी सकती है। मसलन आप पर ज़कात फ़र्ज़ हो गई जिस की रक़म दस हज़ार रुपिये है और आप के पास सूट पीस रखा हुवा है जो मार्केट रेट के ह़िसाब से ढाई हज़ार रुपिये का है, अगर आप वोह सूट पीस बत़ौरे ज़कात किसी शरई फ़क़ीर को दे दो तो आप की कुल ज़कात के ढाई हज़ार रुपिये अदा हो

जाएंगे । इसी तरह मार्केट वेल्यू के हिसाब से सोफ़ा सेट, बरतन और अनाज वग़ैरा के ज़रीए भी ज़कात अदा की जा सकती है । लेहाज़ा येह ख़याल ज़ेहन से निकाल दीजिए कि "ज़कात में सिर्फ़ रक़म ही देनी होती है" ऐसा नहीं है, मार्केट रेट के हिसाब से दीगर चीज़ें भी ज़कात में दी जा सकती हैं ।

4 किसी को उ़म्रे ख़िज़्री की दुआ देना कैसा ?

सवाल : "अल्लाह करीम आप को उ़म्रे ख़िज़्री अ़ता फ़रमाए" येह दुआ देना कैसा है ?

जवाब : येह दुआ देने में कोई ह़रज नहीं है क्यूंकि "उ़म्रे ख़िज़्री" से मुराद "लम्बी उ़म्र" है कि अल्लाह पाक आप को लम्बी उ़म्र अ़ता फ़रमाए ।

5 जन्नत कहां है ?

सवाल : क्या जन्नत आस्मानों पर है ?

जवाब : जन्नत सातों आस्मानों से ऊपर और जहन्नम सातों ज़मीनों के नीचे है । (بحر الکلام للنسفی، ص245) जन्नत बहुत ऊंची और जहन्नम बहुत नीची है । अल्लाह करीम हमें जन्नत में प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोसी बनाए ।

जन्नत में आक़ा का पड़ोसी बन जाए अ़त्तार इलाही
मौला अ़ज़ पए क़ुत्बे मदीना या अल्लाह मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम) स. 123)

6 एक घर के चन्द अफ़राद की एक साथ शादी करना कैसा ?

सवाल : क्या एक घर के चन्द अफ़राद की शादी एक साथ कर सकते हैं ? बाज़ लोग इसे नुक़्सान का सबब समझते हैं, आप इस बारे में राहनुमाई फ़रमा दीजिए कि क्या ऐसा समझना दुरुस्त है ?

जवाब : एक वक़्त में भाई बहेनों की इकठ्ठी शादियां करने में कोई नुहूसत या नुक़्सान नहीं, चाहे तीन हों या तीन सौ तेरह ! इस्लाम में बद शुगूनी की कोई हैसिय्यत नहीं है । येह सिर्फ़ लोगों के ख़यालात हैं कि तीन शादियां इकठ्ठी करना नुक़्सान का सबब है, हालांकि फ़ी ज़माना जिस अन्दाज़ से गाने बाजों के साथ और घर की ख़वातीन को नचा कर शादियां होती हैं इस तरह तो एक शादी में भी नुक़्सान है, फिर तीन शादियों में कितना नुक़्सान होगा ! याद रखिए ! नुक़्सान शादियों से नहीं बल्कि उन में होने वाले गुनाहों की वज्ह से होता है । ज़ाहिर है जब गुनाहों भरी शादियां होंगी तो रेह़मते इलाही का नुज़ूल क्यूं कर होगा ? हो सकता है ऐसों के लिए रेह़मत के दरवाज़े बन्द हो जाएं जो यक़ीनन नुक़्सान का सबब है ।

7 बहू का अपनी सास को ज़कात देने का हुक्म

सवाल : शौहर ने बीवी को शादी में जो सोना दिया था क्या उस पर भी ज़कात होगी ? नीज़ क्या बहू अपनी सास को ज़कात दे सकती है ?

जवाब : बीवी के पास जो सोना है अगर वोह उस की मालिका (यानी शौहर ने उस सोने का उस को मालिक बना दिया) है फिर तो ज़कात की शराइत़ पाई जाएंगी तो ज़कात देना होगी । रही बात सास को ज़कात देने की, तो सास अगर ह़क़दार है तो उसे ज़कात देना जाइज़ है ।

8 क्या वालिदैन के गुनाहों की सज़ा औलाद को मिलती है ?

सवाल : कहा जाता है कि "मां-बाप का किया औलाद को भुगतना पड़ता है" तो क्या वाक़ेई मां-बाप के गुनाह औलाद को भुगतना पड़ते हैं ?

जवाब : ऐसा नहीं है, मह़ज़ दुन्यवी तौर पर बोला जाता है कि "मां-बाप का किया हम भुगत रहे हैं" आख़ेरत के मुआमले में ऐसा नहीं है । क़ुरआने करीम की आयते मुबारका है : ﴿وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरी का बोझ ना उठाएगी । (پ22، الفاطر: 18) इस में मां-बाप और औलाद सब शामिल हैं ।

9 सब से आख़िर में मौत

सवाल : सब से आख़िर में मौत किसे आएगी ?

जवाब : मलकुल मौत ह़ज़रते इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام को ।

(मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत, स. 522)

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

1 साहिबे तरतीब का जुम्आ का वक़्त निकल रहा हो तो वोह क्या करे ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि साहिबे तरतीब का जुम्आ जा रहा हो और कहीं नहीं मिलेगा, यानी जुम्आ की जमाअ़त जा रही हो लेकिन ज़ोहर का वक़्त अभी बाक़ी हो, तो क्या पेहले जुम्आ पढ़ेगा या क़ज़ा नमाज़ ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में ऐसा शख़्स पेहले क़ज़ा नमाज़ पढ़ेगा, फिर जुम्आ के बदले ज़ोहर की नमाज़ पढ़ेगा।

इस मस्अले की तफ़्सील येह है कि जब कोई शख़्स साहिबे तरतीब हो और जुम्आ के वक़्त उसे याद आ गया कि मेरी एक नमाज़ रेहती है, लेकिन सूरते ह़ाल येह हो कि अगर क़ज़ा नमाज़ पढ़ेगा तो जुम्आ की जमाअ़त चली जाएगी लेकिन ज़ोहर की नमाज़ का वक़्त बाक़ी रहेगा, तो ऐसे शख़्स पर ज़रूरी है कि पेहले क़ज़ा नमाज़ पढ़े फिर जुम्आ के बदले ज़ोहर की नमाज़ पढ़ ले। और अगर सूरते ह़ाल येह हो कि जुम्आ की जमाअ़त चले जाने के साथ साथ ज़ोहर का वक़्त भी ख़त्म हो जाएगा, तो ऐसी सूरत में बिल इत्तेफ़ाक़ वोह शख़्स पेहले जुम्आ अदा कर ले फिर क़ज़ा नमाज़ पढ़ ले। और अगर सूरते ह़ाल येह हो कि क़ज़ा नमाज़ पढ़ के इमाम के साथ जुम्आ में शरीक हो सकता हो, तो बिल इत्तेफ़ाक़ पेहले क़ज़ा नमाज़ पढ़ेगा, फिर जुम्आ अदा करेगा।

बहारे शरीअ़त में है : ''जुम्आ के दिन फ़ज्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई अगर फ़ज्र पढ़ कर जुम्आ में शरीक हो सकता है तो फ़र्ज़ है कि पेहले फ़ज्र पढ़े अगर्चे ख़ुत्बा होता हो और अगर जुम्आ ना मिलेगा मगर ज़ोहर का वक़्त बाक़ी रहेगा जब भी फ़ज्र पढ़ कर ज़ोहर पढ़े और अगर ऐसा है कि फ़ज्र पढ़ने में जुम्आ भी जाता रहेगा और जुम्आ के साथ वक़्त भी ख़त्म हो जाएगा तो जुम्आ पढ़ ले फिर फ़ज्र पढ़े इस सूरत में तरतीब साक़ित़ है।'' (बहारे शरीअ़त, 1/704)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 वुज़ू में सर का मस्ह़ करने से पेहले उंगलियां चूमना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि बाज़ लोग सर का मस्ह़ करने से पेहले हाथों पर पानी डाल कर उंगलियां चूमते हैं बाज़ तो आंखों से भी लगाते हैं फिर उसी इस्तेमाल शुदा हाथ की तरी से मस्ह़ करते हैं। तो क्या इस त़रह़ करने से सर का मस्ह़ दुरुस्त हो जाएगा ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछे गए मस्अले की दो सूरतें हैं : पेहली सूरत येह है कि चूंकि सर का मस्ह़ करने के लिए हाथ का तर होना ज़रूरी है अब ख़्वाह येह तरी आज़ाए वुज़ू धोने के बाद हाथ में रेह गई हो या फिर नए सिरे से हाथ को तर किया हो, बहर सूरत वोह तरी मस्ह़ के लिए काफ़ी होगी। अब अगर किसी शख़्स ने मस्ह़ से पेहले उस तर हाथ से इ़मामे को छू लिया या फिर जिस्म के किसी ऐसे हिस्से पर वोह हाथ फेरा जिसे वुज़ू में धोया जाता है तो अब अगर उस के हाथ में तरी बाक़ी है तो सर का मस्ह़ हो जाएगा इस त़रह़ करने से उस के मस्ह़ पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

हां ! दूसरी सूरत येह है कि उस शख़्स ने हाथ की उस तरी से मोज़ों पर मस्ह कर लिया तो चूंकि येह तरी एक फ़र्ज़ को साक़ित करने के काम आ चुकी है, लेहाज़ा अब उस मुस्तामल तरी से सर का मस्ह नहीं होगा।

खुलासए कलाम येह है कि अगर कोई शख़्स हाथ तर करने के बाद उंगलियों को चूमता और आंखों से लगाता है तो येह पेहली सूरत में दाख़िल है, पस अगर उस के हाथ में तरी बाक़ी है तो सर का मस्ह हो जाएगा इस तरह करने से उस के मस्ह पर कोई असर नहीं पड़ेगा। लेकिन येह ज़रूर याद रहे कि मस्ह करने से पेहले यूं उंगलियां चूमना और आंखों से लगाना शरअन साबित नहीं, ना ही ऐसा करने में कोई दुन्यवी फ़ाइदा है लेहाज़ा एक अबस और लग़्व फ़ेल से बचना ज़रूरी है।

(فتاوٰی عالمگیری، 1/6۔ رد المحتار مع الدر المختار، 1/264۔ المحیط البرھانی، 1/38۔ بہارِ شریعت، 1/291)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 वुज़ू के बारे में एक ह़दीसे पाक और इस का जवाब

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि मैं ने एक पोस्ट पढ़ी जिस में सुनने इब्ने माजा शरीफ़ के ह़वाले से येह ह़दीसे पाक लिखी थी : ''रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस का वुज़ू नहीं, उस की नमाज़ नहीं और जिस ने बिस्मिल्लाह नहीं कहा उस का वुज़ू नहीं हुवा।'' आप से पूछना येह है कि वाक़ेई ऐसी ह़दीस मौजूद है ? और क्या वाक़ेई ऐसी सूरत में वुज़ू नहीं होता ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

सवाल में जिस ह़दीसे पाक का ज़िक्र किया गया है, वोह सुनने इब्ने माजा शरीफ़ में मौजूद है मगर इस का येह माना नहीं कि जिस ने वुज़ू करते वक़्त बिस्मिल्लाह ना पढ़ी तो उस का वुज़ू नहीं होगा बल्कि उस ह़दीसे पाक का माना येह है कि जिस ने अल्लाह पाक का नाम लिए बग़ैर वुज़ू किया तो उस का वुज़ू कामिल ना हुवा, नाक़िस हुवा यानी उसे वुज़ू की मुकम्मल बरकतें ह़ासिल नहीं होंगी। येही वज़ाह़त एक दूसरी ह़दीसे पाक में भी मौजूद है।

याद रहे : वुज़ू से पेहले बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ना अफ़्ज़ल है जबकि मुत़लक़न अल्लाह पाक का नाम लेना सुन्नते मुअक्कदा है, अगर किसी ने जान बूझ कर वुज़ू से पेहले अल्लाह पाक का नाम ना लेने की आ़दत बनाई तो वोह शख़्स गुनहगार होगा अलबत्ता इस मौक़ेअ़ पर कोई दूसरा ज़िक्र कर लिया तो सुन्नत अदा हो जाएगी। (रद्दुल मुह़तार, 1/241)

इब्ने माजा शरीफ़ की ह़दीसे पाक येह है :

لا صلاۃ لمن لا وضوء لہ ولا وضوء لمن لم یذکر اسم اللہ علیہ

तर्जमा : जिस का वुज़ू नहीं, उस की नमाज़ नहीं और जिस ने वुज़ू में अल्लाह पाक का नाम ना लिया, उस का वुज़ू नहीं।

(ابن ماجہ، 1/140)

अल्लाह पाक का नाम लिए बग़ैर वुज़ू करने से बरकतें कम होने से मुतअ़ल्लिक़ इमाम बैहक़ी علیہ الرحمہ सुनने कुबरा में रिवायत करते हैं कि नबी ए पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : من توضا وذکر اسم اللہ علی وضوئہ کان طھورا لجسدہ، ومن توضا ولم یذکر اسم اللہ علی وضوئہ کان طھورا لاعضائہ तर्जमा : जिस ने अल्लाह पाक का नाम ले कर वुज़ू किया तो येह वुज़ू उस के सारे जिस्म के लिए पाकी का सबब होगा और जिस ने अल्लाह पाक का नाम लिए बग़ैर वुज़ू किया तो सिर्फ़ आज़ा ए वुज़ू को पाक करने वाला होगा। (سنن کبری للبیہقی، 1/73)

इब्ने माजा शरीफ़ की ह़दीस के मुतअ़ल्लिक़ मिरआतुल मनाजीह़ में है : ''यहां कमाल की नफ़ी है यानी जो कोई वुज़ू करते वक़्त बिस्मिल्लाह ना पढ़े उस का वुज़ू कामिल नहीं, जैसे ह़दीस शरीफ़ में है कि मस्जिद से क़रीब रेहने वाले की बग़ैर मस्जिद नमाज़ नहीं होती, यानी नमाज़ कामिल नहीं होती क्यूंकि रब ने फ़रमाया : जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपना मुंह हाथ धोओ **इलख़**, वहां बिस्मिल्लाह की क़ैद नहीं, नीज़ तीसरी फ़स्ल में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, इब्ने मसऊ़द और इब्ने उ़मर की ह़दीस आ रही है कि जो वुज़ू के अव्वल में बिस्मिल्लाह पढ़े उस का तमाम जिस्म पाक हो जाता है और जो ना पढ़े तो उस के सिर्फ़ आज़ा ए वुज़ू पाक होते हैं।'' (मिरआतुल मनाजीह़, 1/383)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

खाने पीने की चीज़ें ज़ाएअ़ ना कीजिए !

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! खाने पीने की चीज़ों को ज़ाएअ़ करना एक International Problem (बैनल अक़्वामी मस्अला) है । लोगों की एक तादाद है कि जो इस्तेमाल के क़ाबिल होने के बा वुजूद खाने पीने की बहुत सी चीज़ों को ज़ाएअ़ कर देती है, शादी बियाह वग़ैरा की तक़रीबात, रमज़ानुल मुबारक में आ़म लोगों के इफ़्तार के लिए मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर बिछाए गए दस्तरख़्वान या फिर बड़े लोगों की इफ़्तार पार्टियां, होटल्ज़ और घर, अल ग़रज़ बहुत सी जगहों पर खाने पीने की चीज़ें ज़ाएअ़ होती हुई नज़र आती हैं । हमारे वत़ने अ़ज़ीज़ हिन्दुस्तान के साथ साथ कई ममालिक में रोज़ाना लाखों करोड़ों रुपिये की खाने पीने की चीज़ें फेंक दी जाती हैं जो कि किसी इन्सान के पेट में नहीं जातीं ।

कई अमीर ममालिक तो ऐसे हैं कि जिन में इस्तेमाल के क़ाबिल होने के बा वुजूद खाने की चीज़ को ज़ाएअ़ करने के बा क़ाइदा क़वानीन बने हुवे हैं । जैसा कि एक अमीर मुल्क के बारे में पता चला कि वहां होटल वाले क़ानूनी लेह़ाज़ से इस बात के पाबन्द होते हैं कि बचा हुवा खाना शाम को फेंक दें, मसलन अगर कोई होटल वाला मछलियां पका कर या तल कर या डीप फ़्राई कर के बेचता हो, तो शाम में जितनी मछलियां बची होंगी चाहे पकी हुई हों या फिर कच्ची जो कि फ़्रीज़र में मौजूद हों, सारी ही फेंक देना ज़रूरी है । अब चाहे वोह एक हज़ार रुपिये की हों या फिर एक लाख रुपिये की, उन्हें दूसरे दिन नहीं खिला सकते । आप इसी से अन्दाज़ा लगा लें कि जब फ़्रीज़र में रखी कच्ची मछलियां दूसरे दिन नहीं चला सकते तो फिर पका हुवा खाना अगले दिन के लिए किस ने फ़्रीज में रखने देना है ? येह भी लाज़मी तौ़र पर फेंकना ही होगा ।

दावतों में खाना खाते हुवे टेबल्ज़, दस्तरख़्वानों और दरियों पर खाना गिराया जाता है, जिन हड्डियों के साथ गोश्त लगा होता है उन्हें बराबर साफ़ नहीं किया जाता, बरतन से गर्म मसालहे और ना खाई जाने वाली चीज़ों को निकालने के साथ खाने के बहुत से ज़र्रात भी साथ ही चले जाते और ज़ाएअ़ हो जाते हैं, खाने के बाद बरतनों और देगों में बचा हुवा थोड़ा सा खाना दोबारा इस्तेमाल करने का बहुत से लोगों का ज़ेहन नहीं होता, बची हुई रोटियां या फिर उन के टुकड़े और बचे हुवे चावल भी फेंक दिए जाते हैं ।

आदाद व शुमार की आ़लमी वेब साइट theworldcounts.com के मुत़ाबिक़ दुन्या की ख़ूराक का त़क़रीबन एक तिहाई हिस्सा ज़ाएअ़ हो जाता है जो तक़रीबन 1.3 बिल्यन टन यानी 13 खरब किलो ग्राम सालाना है ।

जेहालत और दीनी तालीमात से दूरी के सबब कुछ लोगों के दिमाग़ बहेक जाते हैं, फिर उन्हें मुसलमानों के जूठे में भी जरासीम और बेक्टेरिया नज़र आते हैं और वोह अपने मुसलमान भाई का जूठा खाने पीने से घिन खाते और कतराते हैं, इस त़रह़ भी खाने पीने की चीज़ों के ज़ाएअ़ होने की मिक़्दार बढ़ जाती है, ह़ालांकि मुसलमान का जूठा खाना पीना एक तो आ़जिज़ी वाला काम है।(1) और दूसरा येह कि "मोमिन के जूठे में शिफ़ा" की ख़ुश ख़बरी भी है।(2)

आज हर एक बे बरकती और तंगदस्ती के सबब परेशान है कहीं ऐसा तो नहीं कि येह परेशानी खाने पीने की चीज़ों का एह़तेराम ना करने और रिज़्क़ की बे ह़ुरमती करने के सबब हो। रेह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मकाने आ़लीशान में तशरीफ़ लाए, रोटी का टुकड़ा पड़ा हुवा देखा तो उसे उठा कर पोंछा फिर खा लिया और फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! अच्छी चीज़ का एह़तेराम करो कि येह चीज़ (यानी रोटी) जब किसी क़ौम से भागी है तो लौट कर नहीं आई।"(3) हमारा दीने इस्लाम तो हमें दस्तरख़्वान पर गिरे हुवे खाने के ज़र्रात भी उठा कर खा लेने और उन्हें ज़ाएअ़ ना करने का दर्स देता है, चुनान्चे नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स दस्तरख़्वान से खाने के गिरे हुवे टुकड़ों को उठा कर खाए वोह ख़ुशह़ाली की ज़िन्दगी गुज़ारता है और उस की औलाद और औलाद की औलाद कम अ़क़्ली से मेह़फ़ूज़ रेहती है।(4)

याद रखिए ! जान बूझ कर जिस ने पानी का एक क़त़रा और अनाज का एक दाना भी ज़ाएअ़ किया तो वोह आख़ेरत में फंस सकता है, माल ज़ाएअ़ करना नाजाइज़ व गुनाह और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। नीज़ अगर हम खाने पीने की चीज़ों को ज़ाएअ़ करेंगे तो क़ियामत के दिन इस पर ह़िसाब नहीं बल्कि अ़ज़ाब है, ह़िसाब तो उस ह़लाल माल पर है जो हम ने खाया पिया और इस्तेमाल किया, बाक़ी जो हम ने ज़ाएअ़ कर दिया उस पर तो अ़ज़ाब है।

अगर हम सब भी अपना येह ज़ेहन बना लें कि खाने पीने की चीज़ों का एक ज़र्रा और एक क़त़रा भी हम ज़ाएअ़ नहीं करेंगे और ना ही ज़ाएअ़ होने देंगे, नीज़ दूसरे मुसलमान भाई का जूठा भी खा पी लेंगे तो इस से जहां खाने पीने की चीज़ें ज़ाएअ़ होने से बचेंगी वहीं तंगदस्ती और गुर्बत में भी अच्छी ख़ासी कमी आ सकती है, मेहंगाई पर भी कंट्रोल हो सकता है, क्यूंकि आ़म त़ौर पर मेहंगाई उस वक़्त होती है जब ख़रीदारी ज़ियादा की जाती है, अगर लोग ख़रीदारी कम करेंगे तो दुकानों, कारख़ानों और फ़ेक्ट्रियों में माल स्टोक पड़ा रहेगा, बिकेगा नहीं तो फिर बेचने वाले सस्ता करेंगे। ह़ज़रते सैयदना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने मुरीदों से खाने की अश्या की क़ीमतें पूछते तो आप से कहा जाता : उन की क़ीमतें ह़द से बढ़ गई हैं। इरशाद फ़रमाते : उन्हें ख़रीदना छोड़ दो, सस्ती हो जाएंगी।(5)

मेरी तमाम आ़शिक़ाने रसूल से **फ़रियाद** है कि खाने पीने की चीज़ों का एह़तेराम कीजिए, उन्हें ज़ाएअ़ होने से बचाइए और दूसरों को भी इस बात का ज़ेहन दीजिए। रोटी, सालन, चावल और इसी त़रह़ दीगर खाने पीने की चीज़ें अगर बच जाएं और खाने पीने के क़ाबिल हों तो दोबारा इस्तेमाल करने के लिए फ़्रीज में रख दीजिए या फिर किसी ऐसे को दे दीजिए कि जो उन्हें इस्तेमाल कर ले या फिर गाय, बकरियों, चिड़ियों, मुर्ग़ियों या बिल्लियों को खिला पिला कर उन चीज़ों की बे अदबी और इसराफ़ के जुर्म से बचिए। अल्लाह पाक हमें अपनी नेमतों की क़द्र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) کنز العمال، جزء:3، 2/51، حدیث:5745 (2) الفتاوی الکبری الفقہیۃ لابن حجر الھیتمی، 4/117 (3) ابن ماجہ، 4/50، حدیث: 3353 (4) جامع الاحادیث، 7/144، حدیث:21480 (5) احیاء العلوم، 3/108۔

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मेराज और बैतुल मुक़द्दस

अल्लाह पाक ने नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बे शुमार मोजिज़ात व ख़ुसूसिय्यात से नवाज़ा जिन में से एक मोजिज़ा ए मेराज भी है, येह एक हैरत अंगेज़ वाक़ेआ है कि अल्लाह पाक ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हिजरत से 2 साल पेहले एलाने नबुव्वत के ग्यारहवें साल 27 रजब को रात के थोड़े से हिस्से में मक्कए मुकर्रमा से बैतुल मुक़द्दस तक और फिर वहां से ला मकां तक की सैर करवाई। सफ़रे मेराज के ज़मीनी हिस्से की मसाफ़त और हिक्मत को क़ुरआने करीम ने यूं बयान फ़रमाया है :

﴿سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِیَهٗ مِنْ اٰیٰتِنَاؕ-اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ(۱)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : पाकी है उसे जो रातों रात अपने बन्दे को ले गया मस्जिदे हराम (ख़ाना ए काबा) से मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मुक़द्दस) तक जिस के गिर्दा गिर्द हम ने बरकत रखी कि हम उसे अपनी अज़ीम निशानियां दिखाएं बेशक वोह सुनता देखता है।[1]

मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मुक़द्दस) ले जाने की हिक्मतें

उ़लमा ए किराम ने मेराज की रात मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मुक़द्दस) तक ले जाने की कई हिक्मतें बयान की हैं जिन में से 5 येह हैं :

1. इस रात रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिए दोनों क़िब्लों की ज़ियारत जम्अ़ हो जाए।
2. रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पेहले अक्सर नबियों की जाए हिजरत बैतुल मुक़द्दस है, इसी वज्ह से आप को भी बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ सफ़र करवाया गया ताकि आप की दीगर फ़ज़ीलतों में येह फ़ज़ीलत भी शामिल हो जाए।[2]
3. मस्जिदे अक़्सा के सब सुतूनों ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की दुआ़ की थी इसी वज्ह से पेहले आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मस्जिदे अक़्सा की त़रफ़ ले जाया गया, जैसा कि तफ़्सीरे रूहुल मआ़नी में है : मस्जिदे अक़्सा के तमाम सुतूनों ने दुआ़ की : ऐ हमारे रब ! हमें हर नबी की बरकत से हिस्सा मिला है और अब हमें मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत का शौक़ है, ऐ अल्लाह ! हमें उन की ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमा। उन सुतूनों की दुआ़ की वज्ह से मेराज (के आस्मानी सफ़र) का आग़ाज़ मस्जिदे अक़्सा से हुवा।
4. वोह ज़मीन जिस पर मेह़शर बर्पा होना है नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आने जाने से शरफ़याब हो जाए।
5. बैतुल मुक़द्दस ले जाने की एक हिक्मत येह भी थी कि ज़ाहिर हो जाए कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सब के इमाम हैं।[3]

बैतुल मुक़द्दस क्या है ? बैतुल मुक़द्दस मुसलमानों का क़िब्लए अव्वल है। इस की वज्हे तस्मिया बयान करते हुवे ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : चूंकि इस ज़मीन में ह़ज़राते अम्बिया के मज़ारात बहुत हैं इस लिए इसे क़ुद्स कहा जाता है।[4] येह अम्बिया और सुलह़ा (नेक लोगों) का मर्कज़ रहा है ह़ज़रते सैयदना सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام का मज़ारे

अक़्दस[5] और आ़लमे इस्लाम की मशहूरो मारूफ़ मस्जिदे अक़्सा भी इसी में वाक़ेअ़ है।[6]

बैतुल मुक़द्दस की फ़त्ह़ की बिशारत रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तशरीफ़ लाने से पेहले बैतुल मुक़द्दस रूमियों के क़ब्ज़े में था और नसरानी राहिब अपनी मज़हबी किताबों में पढ़ चुके थे कि आख़री नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबा में से एक सह़ाबी बैतुल मुक़द्दस को फ़त्ह़ करेगा । रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी इस की फ़त्ह़ की बिशारत ग़ज़्वए अह़ज़ाब के मौक़ेअ़ पर इरशाद फ़रमाई चुनान्चे जब ग़ज़्वए अह़ज़ाब के मौक़ेअ़ पर मुसलमान ख़न्दक़ खोद रहे थे तो ख़न्दक़ की खुदाई के दौरान एक चट्टान आ गई जो सह़ाबा ए किराम से ना टूट सकी । रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और कुदाल ले कर "बिस्मिल्लाह" पढ़ कर एक ज़र्ब लगाई जिस से उस का एक तिहाई ह़िस्सा टूट कर रेज़ा रेज़ा हो गया । फ़रमाया : اَللّٰہُ اَکْبَرُ اُعْطِیْتُ مَفَاتِیْحَ الشَّامِ وَاللّٰہِ اِنِّیْ لَاَبْصُرُ قُصُوْرَھَا الْحُمْرَ مِنْ مَکَانِیْ ھٰذَا यानी अल्लाह पाक बहुत बड़ा है ! मुझे मुल्के शाम की कुंजियां अ़त़ा की गई हैं और अल्लाह पाक की क़सम ! मैं सुर्ख़ मह़ल्लात अपनी इस जगह से देख रहा हूं । इसी त़रह़ दूसरी और तीसरी ज़र्ब पर ईरान और यमन की कुंजियों की बिशारत अ़त़ा फ़रमाई ।[7]

येह बिशारत यूं पूरी हुई कि जब मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सैयदना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुबारक दौर में फ़ुतूह़ात का सिलसिला जारी था । इस्लामी लश्कर फ़त्ह़े यरमूक के बाद बैतुल मुक़द्दस की जानिब रवाना हुवा । बैतुल मुक़द्दस का क़ल्आ़ निहायत ही मज़बूत़ था, रूमियों ने यरमूक का ह़ाल सुनकर पूरी पूरी तैयारी कर रखी थी, इस्लामी लश्कर ने जाते ही क़ल्ए़ का मुह़ासरा कर लिया । येह मुह़ासरा और हल्की फुल्की जंग 4 माह तक जारी रही । रूमियों के बड़े राहिब ने अपनी क़ौम को बताया था कि मैं ने पिछली किताबों में पढ़ा है कि मुल्के शाम को मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का एक सुर्ख़ रंग का सह़ाबी फ़त्ह़ करेगा ।

उस नसरानी राहिब ने सिपेह सालारे लश्कर ह़ज़रते सैयदना अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से भी येही कहा और साथ ही अपनी किताबों में लिखी हुई उस सह़ाबी ए रसूल की निशानियां भी बयान कीं । जनाबे अबू उ़बैदा ने सैयदना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मक्तूब रवाना किया । यूं सैयदना उ़मर फ़ारूक़े आज़म की मुल्के शाम में आमद हुई । जब नसरानी राहिब क़मामा ने सैयदना फ़ारूक़े आज़म का चेहरए मुबारक देखा तो फ़ौरन दरवाज़े खुलवा दिए और बैतुल मुक़द्दस आप के ह़वाले कर दिया ।[8]

बैतुल मुक़द्दस में नेकियों का अज्रो सवाब बैतुल मुक़द्दस यानी मस्जिदे अक़्सा में नमाज़ और दीगर नेकियों का अज्रो सवाब बैतुल्लाह शरीफ़ और मस्जिदे नबवी शरीफ़ की त़रह़ ख़ास है चुनान्चे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी का अपने घर में नमाज़ पढ़ना एक नमाज़ के बराबर है और मह़ल्ले की मस्जिद में नमाज़ पढ़ना पच्चीस नमाज़ों के बराबर है और जामेअ़ मस्जिद में नमाज़ पढ़ना पांच सौ नमाज़ों के बराबर है और मस्जिदे अक़्सा और मेरी मस्जिद (यानी मस्जिदे नबवी) में नमाज़ पढ़ना पचास ह़ज़ार नमाज़ों के बराबर है और मस्जिदे ह़राम में नमाज़ पढ़ना एक लाख नमाज़ों के बराबर है ।[9]

मस्जिदे अक़्सा से एह़राम बांधने का सवाब बयान करते हुवे रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने उ़मरह के लिए बैतुल मुक़द्दस से एह़राम बांधा तो उस का येह अ़मल उस के पिछले गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाएगा ।[10]

एक और रिवायत में है : जो उ़मरे के लिए बैतुल मुक़द्दस से एह़राम बांध कर तल्बिया पढ़े उस की मग़्फ़िरत कर दी जाती है ।[11]

---

(1) پ15، بنی اسرآءیل:1(2) عمدۃ القاری، 11/595(3) روح المعانی، جز15، بنی اسرآءیل، تحت الآیۃ:1، 8/18(4) مراۃ المناجیح، 6/457(5) عجائب القراٰن، ص 194 (6) سفر نامے مفتی احمد یار خان، حصہ دوم، ص95ملخصاً (7) مسند احمد، 6/444، حدیث:18716- دلائل النبوۃ للبیہقی، 3/421- سنن کبری للنسائی، 5/269، حدیث:8857۔

(8) نوٹ : फ़त्ह़े बैतुल मुक़द्दस का तफ़्सीली और ईमान अफ़रोज़ तज़्किरा पढ़ने के लिए अल मदीनतुल इल्मिय्या की मुरत्तब कर्दा किताब "फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आज़म, जि. 2, सफ़ह़ा 619 ता 630 मुलाह़ज़ा कीजिए ।

(9) ابن ماجہ، 2/176، حدیث:1413 (10) ابن ماجہ، 3/461، حدیث:3002 (11) ابن ماجہ، 3/461، حدیث:3001۔

गुनाह हो जाए तो...

इस्लाम की रौशन तालीमात में से एक बहुत ही ख़ूब पेहलू येह भी है कि अगर बन्दे से गुनाह सरज़द हो जाए तो वोह ना तो रेह़मते इलाही से मायूस हो जाए और ना ही बेबाक हो कर गुनाहों में ही ग़र्क़ हो जाए बल्कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : وَاَتْبِعِ السَّيِّئَةَ الْحَسَنَةَ تَمْحُهَا यानी और गुनाह हो जाए तो इस के बाद नेकी कर लिया करो (कि) वोह (नेकी) इस गुनाह को मिटा देगी ।[1]

नेकी के ज़रीए गुनाह मिटने की ह़िक्मत जैसे सफ़ेदी से सियाही मिट जाती है, रौशनी से अन्धेरे का ख़ातमा होता है, मरज़ का इलाज उस की ज़िद से होता है इसी त़रह़ गुनाह को भी अपनी ज़िद (Opposite) से मिटाया जाए मसलन गाने बाजे सुनने के गुनाह को (तौबा करने के बाद) कुरआने पाक की तिलावत सुनने और ज़िक्र की मेह़फ़िल में बैठने वाली नेकियों के ज़रीए मिटाया जाए ।[2]

गुनाह मिटने की सूरतें इस ह़दीसे पाक में गुनाह मिटने का ज़िक्र है, अगर गुनाह का तअ़ल्लुक़ अल्लाह पाक के हुक़ूक़ से हो तो इस के मिटने की दो सूरतें बयान की गई हैं : 1 गुनाह के बाद नेकी करने से अल्लाह पाक दिल से गुनाह के निशानात मिटा देता है । या फिर 2 अल्लाह पाक गुनाह के बाद नेकी करने से आमाल नामे से वोह गुनाह मिटा देता है ।

अगर गुनाह का तअ़ल्लुक़ बन्दों के हुक़ूक़ से हो तो इस की दो सूरतें हैं : 1 वोह नेकी मज़लूम को उस पर किए गए ज़ुल्म के इ़वज़ दी जाएगी या फिर 2 अल्लाह पाक उस नेकी की वज्ह से उस बन्दे को अपने फ़ज़्ल से राज़ी कर देगा । याद रहे ! जहां बन्दों के हुक़ूक़ का मुआ़मला हो तो वहां तौबा के साथ उस ह़क़ तलफ़ी का इज़ाला भी करना होगा ।[3]

गुनाह से पाक करने की सूरतें सारी नेकियां मुत़ह्हिर यानी गुनाहों से पाक करने वाली हैं, अब येह होता दो त़रीक़ों से है :

1 कभी नेकियां गुनाहों को मिटा कर (इन्सान को) पाक करती हैं ।[4] इसी की त़रफ़ अल्लाह पाक ने कुरआने पाक में इशारा फ़रमाया है : اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं ।[5]

याद रखिए ! नेकियां सग़ीरा गुनाहों के लिए कफ़्फ़ारा होती हैं ख़्वाह वोह नेकियां नमाज़ें हों या सदक़ा या ज़िक्रो इस्तिग़फ़ार या और कुछ । ह़दीसे पाक में है : "पांचों नमाज़ें और जुम्आ़ दूसरे जुम्आ़ तक और रमज़ान दूसरे रमज़ान तक येह सब कफ़्फ़ारा हैं उन गुनाहों के लिए जो इन के दरमियान वाक़ेअ़ हों जबकि आदमी कबीरा गुनाहों से बचे ।"[6]

2 कभी गुनाहों को नेकियों से तब्दील कर दिया जाता है ।[7] अल्लाह पाक कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

اِلَّا مَنْ تَابَ وَ اٰمَنَ وَ عَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मगर जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा काम करे तो ऐसों की बुराइयों को अल्लाह भलाइयों से बदल देगा ।[8]

अल्लाह की रेह़मत ही जन्नत में दाख़िले का सबब बनी जैसे नेकियां करने वाले को अल्लाह की ख़ुफ़िया तदबीर से बे ख़ौफ़ नहीं होना चाहिए इसी त़रह़ गुनाहगार को अल्लाह

पाक की रेह़मत से मायूस भी नहीं होना चाहिए क्यूंकि रेह़मते इलाही जन्नत में दाख़िले का ज़रीआ़ है चुनान्चे एक मरतबा रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : अल्लाह पाक के एक बन्दे ने समुन्दर में मौजूद एक पहाड़ की तीस गज़ लम्बी तीस गज़ चौड़ी चोटी पर पांच सौ साल तक अल्लाह पाक की इ़बादत की, समुन्दर ने उस पहाड़ को हर त़रफ़ से चार हज़ार फ़रसख़ घेरा हुवा था, अल्लाह करीम ने उस बन्दे के लिए उंगली बराबर मीठे पानी का एक चश्मा निकाल दिया जिस से पानी फूट कर निकलता और पहाड़ की ढलान तक पहुंचता, अल्लाह ने उस के लिए अनार का एक दरख़्त भी पैदा फ़रमा दिया था, उस से हर रात एक अनार निकला करता था ताकि वोह उसे खा सके, जब शाम होती तो वुज़ू के लिए नीचे उतरता और वुज़ू कर के वोह अनार खा लेता और नमाज़ के लिए खड़ा हो जाता, उस ने मौत के वक़्त येह दुआ़ मांगी कि अल्लाह करीम सज्दे की ह़ालत में उस की रूह़ को क़ब्ज़ फ़रमाए और ज़मीन के साथ साथ कोई भी दूसरी चीज़ उस के जिस्म को ख़राब ना करे ह़त्ताकि उसे इसी त़रह़ सज्दे की ह़ालत में उठाया जाए । लेहाज़ा अल्लाह पाक ने उस के साथ ऐसा ही किया (यानी उस की दुआ़ क़बूल फ़रमा ली) ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने बताया : जब हम (आस्मान से) नीचे आते और दोबारा (आस्मान की त़रफ़) जाते तो हमारा गुज़र उस के पास से होता । हम उस शख़्स के बारे में येह जानते हैं कि क़ियामत के दिन उसे उठाया जाएगा और अल्लाह पाक की बारगाह में खड़ा किया जाएगा, रब्बे करीम उस के बारे में फ़रमाएगा : मेरे बन्दे को मेरी रेह़मत से जन्नत में दाख़िल कर दो । वोह बन्दा अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! मेरे अ़मल की वज्ह से (मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा), अल्लाह पाक (दोबारा) फ़रमाएगा : मेरे बन्दे को मेरी रेह़मत के सबब जन्नत में दाख़िल कर दो ! बन्दा कहेगा : बल्कि मेरे अ़मल की वज्ह से (मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा), अल्लाह पाक फ़रिश्तों से फ़रमाएगा : मैं ने अपने बन्दे पर जो नेमत की है उस (नेमत) का इस के अ़मल से मुक़ाबला करो चुनान्चे सिर्फ़ एक आंख की नेमत ही उस के पांच सौ साल की इ़बादत को घेर लेगी और अभी जिस्म की दीगर नेमतें बाक़ी होंगी । अल्लाह पाक फ़रमाएगा : मेरे बन्दे को दोज़ख़ में ले जाओ ! फिर उसे दोज़ख़ की त़रफ़ खींच कर ले जाया जाएगा तो वोह पुकारेगा : ऐ मेरे रब ! मुझे अपनी रेह़मत से जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे । अल्लाह पाक फ़रमाएगा : इसे वापस ले आओ । फिर उसे अल्लाह पाक की बारगाह में लाया जाएगा तो अल्लाह पाक फ़रमाएगा : ऐ मेरे बन्दे ! जब तू कुछ भी नहीं था तब तुझे किस ने पैदा किया ? वोह अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! तू ने । अल्लाह पाक फ़रमाएगा : तेरा पैदा होना येह तेरी त़रफ़ से था या मेरी रेह़मत से ? बन्दा अ़र्ज़ करेगा : तेरी रेह़मत से । अल्लाह पाक फिर इरशाद फ़रमाएगा : पांच सौ साल तक इबादत करने की त़ाक़त तुझे किस ने दी ? वोह अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! तू ने ही दी । अल्लाह करीम फ़रमाएगा : समुन्दर के बीच पहाड़ पर तुझे किस ने उतारा और नमकीन और खारे पानी से तेरे लिए मीठा पानी किस ने निकाला ? अनार तो साल में एक बार निकलता है इस के बा वुजूद हर रात तेरे लिए एक अनार किस ने निकाला ? तू ने मुझ से सज्दे में रूह़ क़ब्ज़ करने की दुआ़ की तो मैं ने तेरे साथ येही किया । वोह अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! तू ने (येह सब किया) अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाएगा : येह सब मेरी रेह़मत से है और मैं तुझे अपनी रेह़मत से जन्नत में दाख़िल करूंगा फिर फ़रिश्तों से फ़रमाएगा : मेरे बन्दे को मेरी रेह़मत से जन्नत में दाख़िल कर दो । ऐ मेरे बन्दे ! तू बहुत अच्छा बन्दा है । चुनान्चे अल्लाह उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा ।[9]

अल्लाह करीम हमारे गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमाए, नेकियां करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और अपनी रेह़मत से जन्नत में दाख़ला अ़त़ा फ़रमाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(1) ترمذی، 3/398، حدیث:1994(2) دیکھئے: شرح الطیبی، 9/277، تحت الحدیث:5083(3) مرقاۃ، 8/811، تحت الحدیث:5083(4) فیض القدیر، 1/521(5) پ12، ھود:114(6) مسلم، ص118، حدیث:552(7) فیض القدیر، 1/521(8) پ19، الفرقان:70(9) شعب الایمان، 4/150، حدیث:4620۔

(क़िस्त : 1)

इस्लाम और तालीम

तालीम किसी भी क़ौम की तामीर व तरक़्क़ी के लिए रीढ़ की हड्डी की हैसिय्यत रखती है। येह रियासतों, मुल्कों, क़ौमों, ख़ानदानों और आने वाली नस्लों को सुधारने और कामयाबी के सुन्हरी ख़्वाबों को अ़मली जामा पहेनाने में कलीदी (बुन्यादी) किरदार अदा करती है।

दीने इस्लाम की हज़ारों ऐसी ख़ूबियां हैं कि दुन्या का कोई निज़ाम, दस्तूर, आईन, दस्तावेज़ात और मज़हब इस की ख़ूबियों का मुक़ाबला नहीं कर सकता। इन आला ख़ूबियों में से एक ख़ूबी और हुस्न "तालीम" भी है। इस मज़्हबे हक़ का तो इब्तेदाई पैग़ाम ही लफ़्ज़ "اِقْرَاْ" से होता है। दीने इस्लाम दुन्या का वाहिद मज़हब है जो इन्सानिय्यत के लिए मुकम्मल ज़ाबिता ए ह़यात है। इस की तालीमात इन्सानिय्यत के तमाम शोबहा ए ज़िन्दगी को मुह़ीत़ हैं।

इस्लाम सिर्फ़ रस्मी तालीम का क़ाइल नहीं बल्कि तालीम के साथ साथ तामीरे शख़्सिय्यत, अफ़्कारो ख़यालात और तसव्वुरात को परवान चढ़ाने का भी ख़्वाहां है येह सलाहिय्यतों को निखारता और कामयाबी की राहें हमवार करता है इस का तअ़ल्लुक़ किसी ज़ात और अ़लाक़े के साथ ख़ास नहीं बल्कि तालीम सब का बुन्यादी ह़क़ है और येह सब को तालीम से आरास्ता करने में बख़ील नहीं।

अहले इस्लाम ने तालीम की बेहतरी और इल्म की इशाअ़त के लिए जो इक़्दामात किए हैं आज सेंकड़ों साल बाद तालीमी इदारे इन्हें अपना कर इनफ़िरादिय्यत का दावा करते हैं। हम यहां इस्लाम के इब्तेदाई दौर में तालीम के लिए किए जाने वाले अहम इक़्दामात को 18 हिस्सों में तक़्सीम कर के बयान करते हैं :

1. इल्म की फ़ज़ीलत बयान कर के अहम्मिय्यत उजागर करना।
2. हुसूले इल्म की तरग़ीब और तर्क पर तम्बीह।
3. तालीम आ़म करने की तरग़ीब।
4. हुसूले इल्म के मवाकेअ़ व ज़राएअ़ का इन्तेज़ाम।
5. तालीम सब के लिए।
6. तालीम मुफ़्त बल्कि वज़ाइफ़ भी।
7. सलाहिय्यत के मुवाफ़िक़ सीखने की तरग़ीब।
8. निज़ामे तालीम की बेहतरी व मज़बूती के इक़्दामात।
9. मिन्हजे तदरीस (तदरीस का अन्दाज़)।
10. क्लास का बेहतरीन नज़्मो ज़ब्त़।
11. तालीमी औक़ात में वुस्अ़त व गुन्जाइश।
12. तालीम में मुख़्तलिफ़ दौरानिये की गुन्जाइश।
13. हुनरमन्द अफ़राद पैदा कीजिए।
14. अहले फ़न से रुजूअ़ और किसी एक फ़न में महारत।
15. इल्म के हुसूल और पुख़्तगी में मुआ़विन अन्दाज़।
16. फ़िक्रे मआ़श से आज़ाद रेह कर हुसूले इल्म।
17. इशाअ़ते इल्म के लिए तस्नीफ़ी ख़िदमात।
18. मसाइले अ़वाम की राहनुमाई का एहतेमाम।

1 इल्म की फ़ज़ीलत बयान कर के अहमिय्यत उजागर करना

इल्म की अहमिय्यत व फ़ज़ीलत : इल्म एक ऐसा वस्फ़ है कि जिस से बा सलाहिय्यत और बा शुऊ़र अफ़राद पैदा होते हैं। फ़ेहमो फ़िरासत, शुऊ़र व आगही और फ़िक्रो दानिश में इज़ाफ़ा होता है, अफ़्कारो नज़रिय्यात मज़बूत़ होते हैं, सह़ीह़ और दुरुस्त फ़ैसले करने की सलाहिय्यत पैदा होती है, क़ौमें तरक़्क़ी करती हैं, बेहतरीन मुआ़शरा मारिज़े वुजूद में आता है और लोगों को बेहतरीन और पुर सुकून माह़ोल फ़राहम होता है इसी लिए इल्म ह़ासिल करने और इस के साथ हमेशा वाबस्ता रेहने की तरग़ीब दिलाई गई है।

इल्म की फ़ज़ीलत : 1 يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ[1] तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह तुम्हारे ईमान वालों के और उन के जिन को इल्म दिया

गया दरजे बुलन्द फ़रमाएगा। (2) قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ۠ ﴿۹﴾[2] तर्जमए कन्जुल ईमान : तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और अन्जान नसीहत तो वोही मानते हैं जो अ़क़्ल वाले हैं। (3) इल्म हासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।[3]

इल्म सीखने की फ़ज़ीलत : (1) थोड़ा इल्म ज़ियादा इबादत से बेहतर है।[4] (2) फ़रिश्ते त़ालिबे इल्म के पांव के नीचे पर बिछाते हैं।[5] (3) जो शख़्स इल्म हासिल करने के लिए किसी रास्ते पर चलता है अल्लाह पाक उस के लिए जन्नत का रास्ता आसान कर देगा।[6]

इल्म सिखाने की फ़ज़ीलत : (1) हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ देते हुवे इरशाद फ़रमाया : अल्लाह पाक उस शख़्स को तरोताज़ा रखे जिस ने हम से ह़दीस सुनी इस को याद किया और दूसरों तक पहुंचाया।[7] (2) इल्म में ग़ौरो फ़िक्र करना रोज़े के बराबर और पढ़ाना रात की इबादत के बराबर है।[8] (3) तुम में से बेहतरीन वोह शख़्स है जो क़ुरआने मजीद सीखे और दूसरों को सिखाए।[9]

इल्मी मजालिस का क़ियाम : मजालिसे इल्म को हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने जन्नत की क्यारियों से तश्बीह दी।[10] रात में एक घड़ी इल्मे दीन का पढ़ना पढ़ाना रात भर की इबादत से बेहतर है।[11]

(2) हुसूले इल्म की तरग़ीब और तर्क पर तम्बीह

इल्म के साथ वाबस्ता रहें : आ़लिम बनो या त़ालिबे इल्म बनो या (इल्मी बातें) सुनने वाले बनो, इन के इलावा चौथा ना बनना, हलाक हो जाओगे।[12]

तालीमी मुआ़मलात में सख़्ती : हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : उन लोगों का क्या ह़ाल है जो अपने हमसायों को दीन में समझ बूझ से आश्ना नहीं करते, उन को तालीम नहीं देते, वाज़ो नसीह़त नहीं करते, नेकी का हुक्म नहीं देते और बुराइयों से नहीं रोकते और उन लोगों का क्या ह़ाल है जो अपने हमसायों से नहीं सीखते, उन से समझ बूझ हासिल नहीं करते, उन से नसीहत हासिल नहीं करते, अल्लाह की क़सम ! या तो वोह अपने हमसायों को ज़रूर तालीम दें उन्हें समझ बूझ दें नसीह़त करें नेकी का हुक्म दें बुराइयों से रोकें नीज़ लोग अपने हमसायों से ज़रूर तालीम हासिल करें, दीन में समझ बूझ हासिल करें और नसीहत लें या फिर मैं उन को जल्द सज़ा दूंगा।[13]

हुसूले इल्म के मक़ासिद : जो भी शख़्स कोई काम करता है तो कोई ना कोई मक़्सद उस के पेशे नज़र ज़रूर होता है जिस के हुसूल के लिए वोह तगो दौ करता है, इल्म तो अल्लाह पाक की बहुत बड़ी नेमत है तो इस के मक़ासिद और फ़वाइद भी मद्दे नज़र होने चाहिएं ताकि इसे यक्सूई से ह़ासिल किया जा सके चुनान्चे, हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : इल्म हासिल करो क्यूंकि इस का हासिल करना अल्लाह पाक की ख़शिय्यत, इसे त़लब करना इबादत, इल्मी मुज़ाकरात करना तस्बीह़, इल्मी तेह़क़ीक़ करना जेहाद, बे इल्म को इल्म सिखाना सदक़ा और अहल लोगों तक पहुंचाने से अल्लाह पाक का क़ुर्ब मिलता है। येह तन्हाई में ग़म ख़्वार, ख़ल्वत का साथी और राहे जन्नत का मीनार है। अल्लाह पाक इस के बाइस क़ौमों को बुलन्दियों से नवाज़ता है और इन्हें नेकी व भलाई के कामों में ऐसा राहनुमा और पेश्वा बना देता है कि इन की पैरवी की जाती है, हर ख़ैरो भलाई के काम में इन से राहनुमाई ली जाती है, इन के नक़्शे क़दम पर चला जाता है, इन के आमाल व अफ़्आ़ल की इक़्तेदा की जाती है, उन की राए ह़र्फ़े आख़िर होती है, फ़रिश्ते इन की दोस्ती को पसन्द करते हैं और उन्हें अपने परों से छूते हैं, हर ख़ुश्को तर शै यहां तक कि समुन्दर की मछलियां, कीड़े मकोड़े, ख़ुश्की के दरिन्दे और जानवर सब इन की मग़्फ़ेरत चाहते हैं। इस लिए कि इल्म अन्धे दिलों की ज़िन्दगी और तारीक आंखों का नूर है। बन्दा इस के सबब दुन्या ओ आख़ेरत में नेक लोगों के मरातिब और बुलन्द दरजात तक जा पहुंचता है। इल्म में ग़ौरो फ़िक्र करना रोज़े रखने के बराबर और इसे पढ़ाना रात के क़ियाम के मसावी है। इसी के सबब सिलए रेह़मी की जाती है, इल्म इमाम है और अ़मल इस का ताबेअ़। इल्म नेक बख़्त लोगों के दिलों में डाला जाता है जबकि बद बख़्तों को इस से मेह़रूम रखा जाता है।[14]

बक़िय्या अगले माह के शुमारे में

(1)پ28، المجادلة:11(2)پ23، الزمر:9(3)ابن ماجہ،1/146، حدیث:224 (4)معجم اوسط،6/257،حدیث:8698(5)ترمذی،5/315،حدیث:3546ملخصاً (6)مسلم، ص1110، حدیث:6853ملخصاً(7)ترمذی،4/298، حدیث:2665 (8)جامع بیان العلم و فضلہ، ص77، حدیث: 240 ملخصاً(9)مسند احمد،1/151، حدیث:500(10)ترغیب وترہیب،1/63ماخوذاً(11)دارمی، 1/94، حدیث: 264ملخصاً(12)دارمی،1/91،حدیث:248(13)مجمع الزوائد، 1/402، حدیث: 748(14)جامع بیان العلم وفضلہ، ص77،حدیث:240ملتقطاً۔

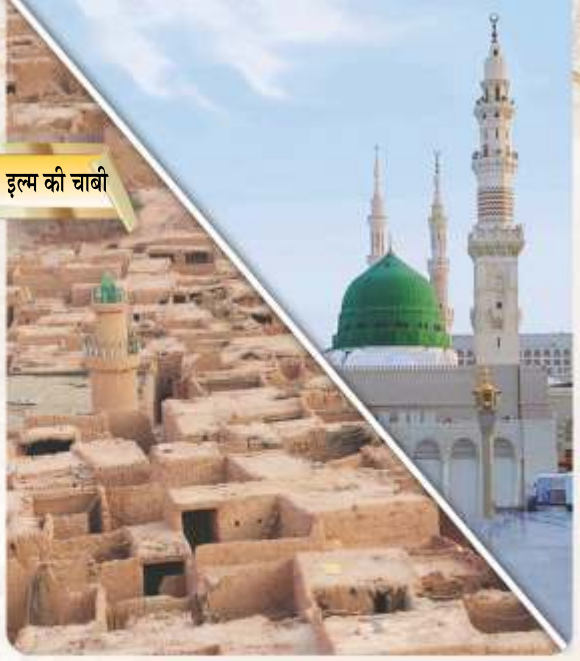

(क़िस्त : 02)

देहात वालों के सवालात और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जवाबात

नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में गांव देहात से हाज़िर होने वाले सहाबा ए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان जो सवालात किया करते थे, उन में से तीन पिछली क़िस्त में बयान हुवे, मज़ीद 5 सवालात और प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जवाबात मुलाहज़ा कीजिए।

1 जन्नत के बाला ख़ाने किस को मिलेंगे ?

मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِنَّ فِی الْجَنَّةِ لَغُرَفًا تُرٰی ظُهُوْرُهَا مِنْ بُطُوْنِهَا وَبُطُوْنُهَا مِنْ ظُهُوْرِهَا यानी जन्नत में ऐसे बाला ख़ाने हैं जिन का बाहर वाला हिस्सा अन्दर से और अन्दर वाला हिस्सा बाहर से नज़र आता है। इतने में एक देहात वाला आदमी खड़ा हुवा और अ़र्ज़ की : لِمَنْ هِیَ یَا رَسُوْلَ الله यानी या रसूलल्लाह ! वोह बालाख़ाने किस के लिए हैं ? रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : هِیَ لِمَنْ اَطَابَ الْكَلَامَ،وَاَطْعَمَ الطَّعَامَ،وَاَدَامَ الصِّيَامَ،وَصَلَّى لله بِاللَّيْلِ وَالنَّاسُ نِيَامٌ यानी वोह उस के लिए हैं जिस ने अच्छी गुफ़्तगू की, खाना खिलाया, हमेशा रोज़ा रखा और रात के वक़्त जबकि लोग सो रहे हों, अल्लाह पाक के लिए नमाज़ पढ़ी।[1]

2 मोतियों के मिम्बरों पर कौन बैठेंगे ?

हज़रते अबू दर्दा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَيَبْعَثَنَّ اللهُ اَقْوَامًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِیْ وُجُوْهِهِمُ النُّوْرُ عَلٰی مَنَابِرِ اللُّؤْلُؤِ يَغْبِطُهُمُ النَّاسُ لَيْسُوْا بِاَنْبِيَاءَ وَلَا شُهَدَاءَ यानी क़ियामत के दिन अल्लाह पाक एक ऐसी क़ौम को ज़रूर उठाएगा जिस के चेहरे नूरानी होंगे, वोह मोतियों के मिम्बरों पर होंगे, लोग उन पर रश्क करेंगे, वोह ना तो अम्बिया होंगे और ना ही शुहदा। इतने में एक देहात वाला आदमी अपने घुटनों के बल खड़ा हुवा और यूं अ़र्ज़ की : يَا رَسُوْلَ اللهِ حَلِّهِمْ لَنَا نَعْرِفْهُمْ यानी या रसूलल्लाह ! हमें उन के औसाफ़ बयान फ़रमा दीजिए ताकि (दुन्या में) हम उन्हें पहेचान सकें। हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : هُمُ الْمُتَحَابُّوْنَ فِی اللهِ مِنْ قَبَائِلَ شَتّٰی وَبِلَادٍ شَتّٰی يَجْتَمِعُوْنَ عَلٰی ذِكْرِ اللهِ يَذْكُرُوْنَهٗ यानी वोह लोग मुख़्तलिफ़ क़बीलों और शेहरों वाले होंगे, अल्लाह के लिए आपस में महब्बत करते होंगे, अल्लाह का ज़िक्र करने के लिए एक जगह जम्अ़ होंगे और उस का ज़िक्र करेंगे।[2]

3 किस अ़मल के करने से फ़ाइदा होगा ?

हज़रते अबू ज़ुरा जाबिर बिन सुलैम हुजैमी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! اِنَّا قَوْمٌ مِنْ اَهْلِ الْبَادِيَةِ فَعَلِّمْنَا شَيْئًا يَنْفَعُنَا اللهُ بِهٖ यानी हम देहात में रेहने वाली क़ौम हैं, आप हमें कोई ऐसी चीज़ सिखा दें जिस के ज़रीए अल्लाह पाक हमें फ़ाइदा अ़ता फ़रमाए। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : यानी किसी नेकी को हरगिज़ मामूली ना समझो अगर्चे वोह तुम्हारा अपने भाई के बरतन में अपने डोल से पानी डालना हो या अपने भाई से गुफ़्तगू करते हुवे मुस्कुराना ही क्यूं ना हो, اِيَّاكَ وَتَسْبِيلَ الْاِزَارِ فَاِنَّهٗ مِنَ الْخُيَلَاءِ وَالْخُيَلَاءُ لَا يُحِبُّهَا اللهُ यानी तेहबन्द लटकाने से बचों क्यूंकि येह तकब्बुर (की निशानी) है और[3] अल्लाह पाक तकब्बुर को पसन्द नहीं फ़रमाता,

وَاِنِ امْرُؤٌ سَبَّكَ بِمَا يَعْلَمُ فِيكَ और अगर कोई आदमी तुम्हें तुम्हारे किसी ऐब पर ताना दे तो तुम उसे उस के ऐब पर हरगिज़ ताना ना दो इस लिए कि तुम्हें उस का (ताना ना देने का) सवाब मिलेगा और ताना देने वाले पर ताना देने का वबाल होगा।[4]

4 क़ियामत कब आएगी ? हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक मजलिस में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों से गुफ़्तगू फ़रमा रहे थे, इतने में एक देहात वाला आदमी आया और बोला : مَتَی السَّاعَۃُ؟ यानी क़ियामत कब आएगी ? रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने गुफ़्तगू जारी रखी तो बाज़ लोग केहने लगे कि नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन का सवाल सुना और उसे ना पसन्द किया, कुछ ने कहा : आप ने सवाल सुना ही नहीं । जब नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी बात पूरी फ़रमा चुके तो फ़रमाया : اَیْنَ اُرَاہُ السَّائِلُ عَنِ السَّاعَۃِ؟ यानी क़ियामत के मुतअ़ल्लिक़ सवाल करने वाला आदमी कहां है ? उन्हों ने कहा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं यहां हूं । आप ने फ़रमाया : فَاِذَا ضُیِّعَتِ الْاَمَانَۃُ فَانْتَظِرِ السَّاعَۃَ यानी जब अमानत ज़ाएअ़ कर दी जाए तो क़ियामत का इन्तेज़ार करो । उन्हों ने सवाल किया : کَیْفَ اِضَاعَتُھَا؟ यानी अमानत कैसे ज़ाएअ़ होगी ? आप ने फ़रमाया : اِذَا وُسِّدَ الْاَمْرُ اِلٰی غَیْرِ اَھْلِہٖ فَانْتَظِرِ السَّاعَۃَ यानी जब मन्सब ना अहल को सोंप दिया जाए तो तुम क़ियामत का इन्तेज़ार करो ।[5] हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (مَتَی السَّاعَۃُ؟) के तहत फ़रमाते हैं : क़ियामत की तारीख़ महीना दिन बताइए । मालूम होता है कि सहाबा ए किराम का अ़क़ीदा येह भी था कि अल्लाह पाक ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इल्मे ग़ैबे कुल्ली बख़्शा और येह भी अ़क़ीदा था कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को क़ियामत का इल्म दिया गया इस लिए तो आप से येह सवाल करते थे, हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी उन्हें इस सवाल पर काफ़िर या मुश्रिक ना कहा बल्कि क़ियामत की अ़लामात बयान फ़रमा दीं और अ़लामतें वोह बयान करता है जिसे हर शै का पता हो । (ضُیِّعَتِ الْاَمَانَۃُ) के तहत लिखते हैं : यहां अमानत से मुराद इमामत, हुकूमत, सल्तनत वग़ैरा है जो अल्लाह पाक की अमानतें हैं जो उस ने चन्द रोज़ के लिए बन्दों को सिपुर्द फ़रमाई हैं जैसा कि अगले मज़मून से ज़ाहिर है । (اِذَا وُسِّدَ الْاَمْرُ اِلٰی غَیْرِ اَھْلِہٖ) के तहत लिखते हैं : इस तरह कि हुकूमत फ़ासिक़ों या औ़रतों को मिले, क़ाज़ी फ़क़ीर जाहिल लोग बनें और बे वुक़ूफ़ लोग बादशाह बनें । **तौसीद** बना है विसादह से इस के माना हैं तक्या किसी के नीचे रखना यानी ना अहलों के सर तले इन अमानतों का तक्या रख दिया जाए।[6]

5 क्या जन्नत में घोड़े होंगे ? हज़रते बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक देहात के आदमी ने नबी ए अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा : یَا رَسُولَ اللّٰہِ اِنِّی اُحِبُّ الْخَیْلَ اَفِی الْجَنَّۃِ خَیْلٌ؟ या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे घोड़े पसन्द हैं, क्या जन्नत में घोड़े होंगे ? रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِنْ اُدْخِلْتَ الْجَنَّۃَ اُتِیتَ بِفَرَسٍ مِنْ یَاقُوتَۃٍ لَہٗ جَنَاحَانِ فَحُمِلْتَ عَلَیْہِ ثُمَّ طَارَ بِکَ حَیْثُ شِئْتَ यानी अगर तू जन्नत में दाख़िल किया गया तो तेरे पास एक याक़ूत का घोड़ा लाया जाएगा जिस के दो पर होंगे तू उस पर सवार किया जाएगा फिर वोह तूझे वहां उड़ा कर ले जाएगा जहां तू चाहेगा ।[7] हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि वहां येह दुन्या के ऊंट या परिन्दे ना होंगे बल्कि ख़ुद जन्नत की मख़्लूक़ होंगे जैसे हूरो ग़िलमान कि जन्नत तो सिर्फ़ इन्सानों के लिए हैं। हां, चन्द जानवर वहां जाएंगे, हुज़ूर की ऊंटनी क़सवा, अस्हाबे कहफ़ का कुत्ता, सालेह عَلَیْہِ السَّلَام की ऊंटनी, हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام का दराज़ गोश जैसा कि बाज़ रिवायात में है।[8]

(जारी है)

---

(1) ترمذی، 4/236، حدیث: 2535-التیسیر بشرح الجامع الصغیر، 1/325

(2) مجمع الزوائد، 10/77، حدیث: 16770

(3) मर्द के लिए ला परवाही की वज्ह से पाजामा या तेहबन्द टख़्नों से नीचे रखना ख़िलाफ़े ऊला है और तकब्बुर की वज्ह से हराम है । (मिरआतुल मनाजीह, 3/109, मफ़हूमन)

(4) مسند احمد، 34/236، حدیث: 20633 (5) بخاری، 1/36، حدیث: 59

(6) مراٰۃ المناجیح، 7/255 (7) ترمذی، 4/244، حدیث: 2553

(8) مراٰۃ المناجیح، 7/501-

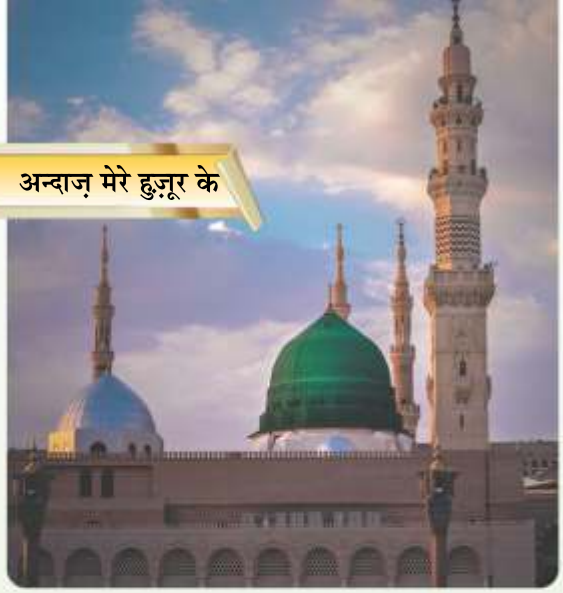

(दूसरी और आख़री क़िस्त)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सह़ाबियात के साथ अन्दाज़

गुज़श्ता से पैवस्ता

ख़ुश त़बई फ़रमाना एक सह़ाबिया थीं जिन्हें उम्मे ऐमन कहा जाता था । वोह प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में आईं और कहा कि मेरे शौहर आप को बुला रहे हैं । आप ने फ़रमाया : कौन, वोही ना जिस की आंखों में सफ़ेदी है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! अल्लाह की क़सम उन की आंखों में तो कोई सफ़ेदी नहीं । आप ने फ़रमाया : यक़ीन करो उन की आंखों में सफ़ेदी है । उन्हों ने कहा : नहीं, नहीं, अल्लाह की क़सम ऐसा कुछ नहीं है । फिर आप ने फ़रमाया : हर इन्सान की आंखों में (कुदरती) सफ़ेदी तो होती ही है ![1]

सह़ाबिय्यात की शादियां करवाना

ह़ज़रते उम्मे ऐमन आप का नाम बर्का बिन्ते सालबा है । आप अपनी कुन्यत "उम्मे ऐमन" से मश्हूर हैं । आप रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आज़ाद कर्दा बांदी हैं । आप ने इन को आज़ाद फ़रमा कर इन का निकाह़ ह़ज़रते उ़बैद बिन ज़ैद ख़ज़रजी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से किया था, जिन से ह़ज़रते ऐमन बिन उ़बैद पैदा हुवे । जब ह़ज़रते उ़बैद ग़ज़्वए हुनैन में शहीद हुवे तो आप ने ह़ज़रते उम्मे ऐमन का दूसरा निकाह़ अपने मुंह बोले बेटे ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से कर दिया जिन से ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا पैदा हुवे ।[2]

ज़बाआ़ बिन्ते ज़ुबैर आप रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा ज़ुबैर बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब की साह़िबज़ादी हैं । इन का निकाह़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मिक़्दाद बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से किया जिन से ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह और करीमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا पैदा हुवे ।[3]

सह़ाबियात की शादी मदनी दौर में

उमामा बिन्ते ह़म्ज़ा आप रसूलुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते अमीरे ह़म्ज़ा की प्यारी साह़िबज़ादी थीं । रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें ह़ज़रते जाफ़र बिन अबी त़ालिब और ह़ज़रते अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की कफ़ालत में दिया था । उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के बेटे सलमह बिन अबू सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से इन की शादी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद की थी ।[4]

फ़ात़िमा बिन्ते क़ैस आप ह़ज़रते ज़ह़्ह़ाक बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की बहेन हैं । इन के शौहर अबू ह़फ़्स बिन मुग़ीरा ने इन्हें त़लाक़ दे दी । त़लाक़ के बाद इन्हें रिश्तों के पैग़ामात आने लगे तो इन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मश्वरा करना ज़रूरी समझा । ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर बताया कि दो रिश्ते आए हैं : एक जुहम बिन हुज़ैफ़ा का है और दूसरा ह़ज़रते मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान का । रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन से फ़रमाया : जुहम बिन हुज़ैफ़ा सख़्त मिज़ाज इन्सान हैं और मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान ग़रीब व नादार हैं इन के पास माल नहीं है । फिर आप ने उन्हें मश्वरा दिया कि ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से शादी कर लें, फिर आप ने उन्ही से निकाह़ किया ।[5]

---

(1) سبل الہدی والرشاد، 7/114 (2) طبقات ابن سعد، 8/179 (3) طبقات ابن سعد، 8/38 (4) طبقات ابن سعد، 8/126، اسد الغابہ، 7/24 (5) اسد الغابہ، 7/248۔

(क़िस्त् : 03)

जन्नत वाजिब करवाने वाली नेकियां

जन्नत वाजिब करने वाली कुछ नेकियां गुज़श्ता क़िस्तों में बयान हो चुकीं, मज़ीद चन्द नेकियों के मुतअ़ल्लिक़ 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़िए।

1 नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से इरशाद फ़रमाया : मैं "सैयदुल इस्तिग़फ़ार" पर तुम्हारी राहनुमाई ना करूं ? (फिर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सैयदुल इस्तिग़फ़ार के अल्फ़ाज़ बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया :) اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰی عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ وَأَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ، وَاَعْتَرِفُ بِذُنُوْبِیْ فَاغْفِرْ لِیْ ذُنُوْبِیْ اِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ (इस के बाद) इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स इन कलेमात को शाम के वक़्त पढ़ ले और सुब्ह़ होने से पेहले उसे मौत आ जाए तो उस के लिए जन्नत वाजिब हो जाती है, और जो शख़्स सुब्ह़ के वक़्त इन कलेमात को पढ़े और शाम होने से पेहले उस का इन्तेक़ाल हो जाए तो (भी) उस के लिए जन्नत वाजिब हो जाती है।[1]

2 जो शख़्स 12 साल अज़ान दे उस के लिए जन्नत वाजिब हो गई।[2] जबकि एक ह़दीसे मुबारका में इस त़रह़ है : जो सात बरस सिर्फ़ सवाब के लिए अज़ान दे तो अल्लाह पाक उस के लिए आग से आज़ादी लिख देता है।[3] इस ह़दीसे मुबारका की शर्ह़ में ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : यानी जो बग़ैर तनख़्वाह सात साल अज़ान दे तो रब्बे करीम उसे जहन्नम से आज़ादी और जन्नत में दाख़िले का परवाना (पासपोर्ट और वीज़ा) लिख देता है जो क़ियामत में उसे दिया जाएगा, जिस से बे खटक वोह दोज़ख़ से गुज़र कर जन्नत में दाख़िल होगा। बाज़ मोअज़्ज़िन येह तै कर लेते हैं कि हम तनख़्वाह मस्जिद की सफ़ाई वग़ैरा की लेंगे अज़ान फ़ी सबीलिल्लाह देंगे उन का मआख़िज़ येह ह़दीस है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस का ज़रूर फ़ैज़ पाएंगे।[4]

3 जब मोअज़्ज़िन اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहे तो तुम में से कोई اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहे, फिर मोअज़्ज़िन اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहे तो वोह शख़्स اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहे, फिर मोअज़्ज़िन اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه कहे तो वोह शख़्स اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه कहे, फिर मोअज़्ज़िन حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ कहे तो वोह शख़्स لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه कहे, फिर मोअज़्ज़िन حَيَّ عَلَى الْفَلَاح कहे तो वोह शख़्स لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه कहे, फिर जब मोअज़्ज़िन اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहे तो वोह शख़्स اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहे और जब मोअज़्ज़िन لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहे और वोह शख़्स لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहे तो उस के लिए जन्नत वाजिब हो गई।[5]

4 जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ पढ़े, फिर बैठा ज़िक्रुल्लाह करता रहे यहां तक कि सूरज तुलूअ़ हो जाए तो उस के लिए जन्नत वाजिब हो जाती है।[6]

5 जो शख़्स मुसलमानों को ईज़ा देने वाली चीज़ को उन के रास्ते से एक त़रफ़ धकेल दे तो अल्लाह पाक इस के सबब उस के लिए एक नेकी लिखता है, और जिस के लिए अल्लाह पाक अपने पास एक नेकी लिखे तो इस के सबब अल्लाह पाक उस के लिए जन्नत वाजिब कर देता है।[7]

बक़िय्या आइन्दा शुमारे में

(1)ترمذی، 5/252، حدیث:3404 (2)ابن ماجہ، 1/402، حدیث:728
(3)ابن ماجہ، 1/402، حدیث:727 (4)مراٰۃ المناجیح، 1/415 (5)سنن کبریٰ للنسائی، 6/15، حدیث:9868 (6)مسند ابی یعلیٰ، 2/36، حدیث:1485
(7)مکارم الاخلاق للخرائطی، 1/157۔

मेहंगाई

मेहंगाई बहुत हो गई है, गुज़ारा नहीं होता, घर चलाना मुश्किल हो गया है, बिजली गेस का बिल भरूं या मकान का किराया दूं ? घर में खाने को नहीं तो बच्चों की फ़ीसें कहां से भरूं ?

इस त़रह़ के कई जुम्ले आप को भी सुनाई देते होंगे, मेहंगाई बहरह़ाल इन्टरनेशनल प्रोब्लम है, अल्लाह पाक हम सब की ह़ालत पर रेह़मत की नज़र फ़रमाए, हमारी परेशानियां दूर हों और ख़ुशियां हमारा मुक़द्दर बनें।

ऐसों की ख़िदमत में गुज़ारिश है कि येह दुन्या आ़लमे अस्बाब है और तवक्कुल का आसान सा मत़लब येह है कि अस्बाब इख़्तियार कर के नतीजा रब्बे काइनात पर छोड़ दिया जाए कि वोह चाहेगा तो हमारी कोशिशें कामयाब होंगी। इस लिए मेहंगाई कम होने का इन्तेज़ार ही ना करते रहिए बल्कि मेहंगाई का मुक़ाबला करने के लिए ह़स्बे ह़ाल कम अज़ कम 3 काम फ़ौरी त़ौर पर कर लेने चाहिएं :

1 अपने अख़राजात की लिस्ट बनाइए और अच्छी त़रह़ ग़ौरो फ़िक्र कर के ग़ैर ज़रूरी ख़र्चे फ़ौरी त़ौर पर रोक दीजिए। इस से जो रक़म बचेगी वोह आप के ज़रूरी अख़राजात में काम आएगी।

2 सिर्फ़ बचत पर ही ज़ोर ना दीजिए बल्कि पेहले से ज़ियादा वक़्त दे कर या काम तब्दील कर के या किसी भी जाइज़ त़रीक़े से अपनी आमदनी बढ़ाने की भी कोशिश कीजिए, इस से भी आप के मसाइल ह़ल होना शुरूअ़ हो जाएंगे, ! (اِن شآءَ اللہ)

3 एक कमाने वाला बाक़ी सब खाने वाले हों तो मेहंगाई का मुक़ाबला उ़मूमन मुश्किल हो जाता है, इस लिए फ़ेमेली में कमाने वाले अफ़राद में इज़ाफ़े की कोशिश करें, इस के लिए घरेलू कस्ब भी अपनाया जा सकता है जैसे किसी प्रोडक्ट की पेकिंग और कम्पोज़िंग वग़ैरा। शुरूअ़ शुरूअ़ में अगर्चे वोह थोड़ा कमाएंगे लेकिन कुछ ना होने से कुछ होना बेहतर है। एक दिन आएगा कि आप की मजमूई़ आमदनी इतनी हो जाएगी कि मेहंगाई की परेशानी में कमी हो जाएगी اِن شآءَ اللہ

इन के इ़लावा इस पेहलू पर तवज्जोह रखना बहुत ज़रूरी है कि कोई भी काम करने के लिए वक़्त दरकार होता है, अगर हम वक़्त को ज़ाएअ़ कर देंगे तो काम का मौक़अ़ गंवा देंगे और जब काम नहीं करेंगे तो आमदनी कहां से आएगी और फिर मेहंगाई का मुक़ाबला क्यूं कर हो सकेगा ? वक़्त ज़ाएअ़ होने से हमारी आमदनी कैसे कम हो सकती है, इस को तरतीब वार पढ़िए :

1 सब से पेहले आप अपनी आमदनी को 30 दिनों पर तक़्सीम कीजिए, आप की रोज़ाना की औसत़ आमदनी निकल आएगी फिर इस रक़म को उतने घंटों पर

तक़्सीम कर लें जितने घंटे आप रोज़ाना काम करते हैं (मसलन 6 या 7 या 8 घन्टे) अब येह आप की फ़ी घन्टा आमदनी है।

2 अब अगर हम काम करने के औक़ात में इधर उधर के फ़ुज़ूल या गुनाह वाले कामों में जितने घन्टे मसरूफ़ रहेंगे तो दीगर नुक़्सानात के साथ साथ हमारा माली नुक़्सान भी होगा और रक़म की कमी की वज्ह से घर चलाना मज़ीद मुश्किल हो जाएगा। इस लिए ऐसे कामों से बचिए जो आप को मेहंगाई से छुड़वा नहीं सकते अलबत्ता दुन्या या आख़ेरत में फंसवा ज़रूर सकते हैं मसलन अपना काम छोड़ कर कई कई घन्टे स्टेडियम या टी वी पर मेच, फ़िल्म, ड्रामे या म्यूज़िक प्रोग्राम्ज़ देखने या सोश्यल मीडिया में मसरूफ़ रेहना, पतंग बाज़ी, कबूतर बाज़ी, दोस्तों यारों और रिश्तेदारों की गेदरिंग में घन्टों ग़ीबतों, चुग़लियों, तोहमतों में लगे रेहना वग़ैरा। आप ही बताइए कि इन कामों में अपना वक़्त ज़ाएअ़ करने वाला मेहंगाई का रोना रोएगा तो कौन इस के आंसू पोंछने के लिए आगे बढ़ेगा!

अल्लाह पाक हमें मेहंगाई का मुक़ाबला करने का शुऊ़र अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ताजिरों के लिए

कामयाब तिजारत में इस्तिक़ामत का किरदार

ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना है कि जब अल्लाह पाक किसी त़रीक़े से तुम्हारे लिए रिज़्क़ का सबब बना दे तो उसे उस वक़्त तक ना छोड़ो जब तक उस ज़रीअ़ए मआ़श में तब्दीली ना आ जाए (यानी नुक़्सान हो या नफ़्अ़ ना हो)।

(ابن ماجہ، 3/11، حدیث: 2148- مرقاۃ المفاتیح، 6/34)

एक और ह़दीसे पाक में फ़रमाया: مَنْ رُزِقَ فِیْ شَیْءٍ فَلْیَلْزَمْہُ यानी जिस को किसी काम में रोज़ी मिल रही हो उसे चाहिए कि वोह उसी में लगा रहे।

(شعب الایمان، 2/89، حدیث: 1241)

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं: तिजारत से पेहले येह ख़ूब सोच लो कि मैं किस क़िस्म की तिजारत में कामयाब हो सकता हूं। (अपने बारे में फ़रमाते हैं:) मेरा मश्ग़ला शुरूअ़ से ही इ़ल्म का रहा। मुझे भी तिजारत का शौक़ था कि मैं ने ग़ल्ले की मुख़्तलिफ़ तिजारतें कीं मगर हमेशा नुक़्सान उठाया। अब किताबों की तिजारत को हाथ लगाया।

अल्लाह पाक ने बड़ा फ़ाइदा दिया।

(इस्लामी ज़िन्दगी, स. 153)

मोहतरम क़ारेईन ! यक़ीनन ज़मीन में बीज बोने के फ़ौरन बाद ही फलदार दरख़्त नहीं उग आता बल्कि मुसलसल हिफ़ाज़त, आबपाशी और सब्र आज़मा लम्बे इन्तेज़ार के बाद येह अपनी Life cycle से गुज़र कर दरख़्त में तब्दील होता और फल देता है, तिजारत का आग़ाज़ करने के बाद इस के मनाफ़ेअ़ हासिल होने वाला मुआ़मला भी अक्सर इसी त़रह़ होता है, ख़ास त़ौर पर जब कारोबार करने वाला तिजारत के मैदान में नया हो, उस ने पेहले कोई कारोबार ना किया हो तो उसे कारोबार जमाने और इस से बेहतरीन फ़वाइद हासिल करने के लिए मेहनत, सब्र और इस्तेक़ामत के साथ सहीह़ वक़्त का इन्तेज़ार करना पड़ता है, मगर बहुत से लोग हथेली पर सरसों जमाना चाहते हैं येही वज्ह है कि ऐसे लोग बहुत बे सब्री से हर कारोबार के थोड़े ही अ़र्से बाद कोई दूसरा कारोबार अपना लेते हैं और जल्द से जल्द मनाफ़ेअ़ हासिल करने की आरज़ू में मनाफ़ेअ़ के बजाए अस्ल पूंजी में ख़सारे पर ख़सारा उठाते रेहते हैं। ऐसे लोगों को चाहिए कि अल्लाह के फ़ज़्लो करम की उम्मीद रखते हुवे जो भी जाइज़ कारोबार करें जम कर करें और इस के नफ़्अ़ व नुक़्सान की वुजूहात को अच्छी त़रह़ परखें, समझें और संवारें।

याद रखिए ! कारोबार की तरक़्क़ी इस्तेक़ामत के बग़ैर तक़रीबन ना मुमकिन है अलबत्ता इस के इलावा नीचे दिए गए मश्वरे भी इस में मददगार साबित होंगे।

कारोबारी ह़ज़रात के लिए मुफ़ीद मश्वरे

❁ कारोबारी मद्दे मुक़ाबिल की कामयाबी पर घबराने के बजाए अपने और उस के कारोबारी मुआ़मलात का मुवाज़ना व तजज़िया कर के सीखें।

❁ उतार चढ़ाव कारोबार का लाज़मी हिस्सा है लेहाज़ा नाज़ुक ह़ालात में मायूसाना जज़्बात से ख़ुद को बचाएं वरना कारोबारी सरगर्मी और आप के फ़ैसला करने की सलाहिय्यत में रुकावट आएगी।

❁ लगे बन्धे त़ौर त़रीक़ों के पाबन्द ना रहें बल्कि ह़ालात, मुशाहदात, तजरिबात, वक़्त की ज़रूरिय्यात और साबेक़ा फ़वाइदो नुक़्सानात के मुत़ाबिक़ नित नए जाइज़ त़रीक़ए कार और मन्सूबे सोचने और अपनाते रहें, अच्छी तब्दीलियां लाते रहें।

❁ कारोबारी मुआ़मलात के अख़राजात का बेहतर बजेट बनाएं और उस बजेट के इलावा भी आमदनी से एक मुनासिब रक़म अ़लाह़दा रखें ताकि छोटे बड़े ग़ैर मुतवक़्क़ेअ़ ख़र्चों की वज्ह से बजेट मुतास्सिर ना हो।

❁ अख़राजात व ख़ालिस नफ़्अ़ का ह़िसाब रखें और हर माह या तीन माह या छे माह या सालाना ह़िसाब किताब के वक़्त साबेक़ा ह़िसाब को सामने रख कर नफ़्अ़ नुक़्सान का मुवाज़ना करें और नुक़्सान की सूरत में वुजूहात पर ग़ौर कर के उन्हें दूर करें।

❁ आमदनी के मनाफ़ेअ़ से अपने कारोबारी और ज़ाती अख़राजात पूरे करने के इलावा बचत कर के अपने कारोबार की बेहतरी या किसी और सरमाया कारी पर लगाइए, इस से आमदन में इज़ाफ़ा होगा।

❁ जितना मुमकिन हो कारोबार शुरूअ़ करने या वसीअ़ करने के लिए भारी क़र्ज़ा लेने से बचें बिल ख़ुसूस सूदी क़र्ज़ा तो हरगिज़ ना लें, अलबत्ता सरमाए की मामूली कमी पूरी करने के लिए ग़ैर सूदी छोटा क़र्ज़ा लेना ज़रूरी हो तो ग़ौर किया जा सकता है मगर इतना लिया जाए जो ब आसानी अदा किया जा सके।

❁ अपनी फ़ील्ड के मुख़्लिस व जहानदीदा लोगों के मुफ़ीद मश्वरों को कभी नज़र अन्दाज़ ना करें कि येह मश्वरे आप में ख़ुद एतेमादी पैदा करते हैं और मुश्किल ह़ालात में सहारा बनते हैं।

अम्बियाए किराम के वाक़ेआत

(क़िस्त : 01)

ह़ज़रते सैयदना शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام

अल्लाह पाक ने अपने एक बहुत प्यारे नबी عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी भेजी : जब सुब्ह़ हो तो सफ़र पर निकल जाना, सब से पेहली चीज़ जो मिले उसे खा लेना, दूसरी चीज़ को दफ़्न कर देना, तीसरी चीज़ मिले तो उसे अपने पास रख लेना, चौथी चीज़ मिले तो उसे कोई चीज़ खिला देना, अगले दिन नबी عَلَيْهِ السَّلَام को सब से पेहले जो चीज़ मिली वोह हवा में एक ऊंचा पहाड़ था, आप ने दिल में कहा : मैं इस पहाड़ को कैसे खा सकता हूं ? मैं तो इस की ताक़त नहीं रखता अचानक वोह पहाड़ सुकड़ना शुरूअ़ हो गया यहां तक कि वोह एक मीठी खजूर की त़रह़ हो गया, आप ने उसे खा लिया, आगे बढ़े तो रास्ते के बीच में किसी ने बरतन फेंका हुवा था, आप ने एक गढ़ा खोदा और उसे दफ़्न कर दिया लेकिन वोह बाहर निकल आया आप ने जब जब उसे दफ़्नाया वोह ख़ुद ही बाहर आ जाता आख़िरे कार आप ने उसे वैसे ही छोड़ दिया और आगे बढ़ गए, कुछ आगे एक कबूतरी नज़र आई आप ने उसे अपनी आस्तीन में रख लिया, मज़ीद आगे बढ़े तो एक उ़क़ाब नज़र आया जो किसी अन्डे वग़ैरा को तोड़ कर उस में से गोश्त नोचना चाहता था। आप ने एक छुरी निकाली ताकि उस कबूतरी को ज़ब्ह़ कर के उस का गोश्त उस उ़क़ाब को खिला दें, अचानक एक फ़रिश्ते ने पीछे से आवाज़ दी : मैं एक फ़रिश्ता हूं, अल्लाह पाक ने मुझे आप के पास भेजा है ताकि मैं आप को उन बातों के बारे में ख़बर दूं, वोह पहाड़ जिस को खाने का हुक्म मिला था, वोह ग़ुस्सा है जब आप उसे भड़काते हैं तो वोह भड़क जाता है और एक बड़े पहाड़ जैसा हो जाता है कि जिसे निगलने की आप ताक़त नहीं रखते और ना उसे उठाए रखने की सकत रखते हैं और अगर आप उसे पुर सुकून रखेंगे तो वोह साकिन रहेगा यहां तक कि एक खजूर के बराबर हो जाएगा आप उस के खाने को अच्छा जानेंगे और उस के ख़त्म हो जाने पर अल्लाह करीम की ह़म्दो सना करेंगे, रास्ते में फेंका हुवा बरतन लोगों के आमाल हैं जो अच्छा अ़मल करेगा अल्लाह उसे ज़ाहिर कर देगा यहां तक कि लोगों में वोह मश्हूर हो जाएगा और जो बुरा अ़मल करेगा अल्लाह उसे भी ज़ाहिर कर देगा यहां तक कि लोगों में मश्हूर हो जाएगा, और वोह कबूतरी जिसे पनाह में लेने का हुक्म दिया था वोह सिलए रेह़मी है आप के क़रीबी या दूर वाले रिश्तेदार अगर वोह आप से क़त़्अ़ तअ़ल्लुक़ी करें तो आप उन से सिलए रेह़मी कीजिए, बहरह़ाल वोह उ़क़ाब जिसे खिलाने का हुक्म दिया था वोह नेकी और भलाई है उसे अहले ख़ाना व दीगर ह़ज़रात तक पहुंचाइए और ह़क़दार व ग़ैर ह़क़दार के साथ ख़ूब भलाई से पेश आइए।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक के येह प्यारे नबी एक क़ौल के मुताबिक़ ह़ज़रते सैयदना शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام थे, आइए ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام की सीरते मुबारका के कुछ नूरानी और बा बरकत पेहलूओं का मुत़ालआ़ कीजिए और अपने लिए राहे नजात का सामान कीजिए।

मुख़्तसर सीरत ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद से हैं, आप की दादी ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام की बेटी थीं[2] आप का ज़माना ह़ज़रते हूद, ह़ज़रते सालेह़ और ह़ज़रते यूसुफ़ के बाद का है और ह़ज़रते मूसा से कुछ पेहले का है (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام)[3] आप का शहेर "मदयन" तबूक के महाज़ (यानी सामने की त़रफ़) में बह़रे अह़मर (लाल सागर) के साह़िल पर वाक़ेअ़ है[4] और मिस्र से आठ मन्ज़िल (तक़रीबन 144 मील) के फ़ास्ले पर है।[5] आप काफ़ी मालदार थे।[6] जानवर पालते और उन के दूध से मआ़श ह़ासिल करते थे।[7] बल्कि अपनी बकरियां ख़ुद चराया करते थे[8] किताबों में आप عَلَيْهِ السَّلَام की सिर्फ़ दो बेटियों का तज़किरा मिलता है एक का नाम सफ़ूरा जबकि दूसरी का नाम शर्क़ा था।[9] जब आप ज़ईफ़ हो गए और बकरियां चराने के लिए कोई क़ाबिले एतेमाद ख़ादिम ना मिला तो आप की दोनों बेटियों ने इस काम को संभाल लिया लेहाज़ा दोनों बेटियां बकरियों को चरागाह ले जाती थीं।[10] वापसी में एक कुंवें के क़रीब अपनी बकरियों को ले आती थीं, वहां मर्द ह़ज़रात कुंवें से पानी निकाल

कर अपने जानवरों को सेराब करते थे, लेकिन नबी की येह दोनों पाकीज़ा और इफ़्फ़त मआब बेटियां मर्दों से दूर खड़ी हो जातीं और मर्दों के जाने का इन्तेज़ार करती रेहतीं, जब वोह लोग चले जाते तो आगे बढ़तीं और बचा खुचा पानी अपनी बकरियों को पिलाती थीं और घर वापस लौट आतीं, मिस्र से हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام तशरीफ़ लाए तो देखा कि 2 ख़वातीन अपनी बकरियों के साथ मर्दों से अलग थलग खड़ी हैं वज्ह पूछने पर हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने क़रीब दूसरे कुंवें के मुंह पर से भारी पथ्थर हटाया और उस में से पानी खींच कर बकरियों को सेराब कर दिया, दोनों बेटियों ने घर जा कर हज़रते शुऐब عَلَیْہِ السَّلَام से इस वाक़िए का ज़िक्र किया तो हज़रते शुऐब عَلَیْہِ السَّلَام ने हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को घर लाने का इरशाद फ़रमाया, वालिद साहिब के हुक्म पर एक साहिब ज़ादी अपना जिस्म छुपाए हुवे चेहरा आस्तीन से ढांपे हुवे शर्मो हया और पर्दा व वक़ार के तक़ाज़ों को सामने रखते हुवे हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के पास पहुंचीं और वालिद साहिब का पैग़ाम पहुंचाया। हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام हज़रते शुऐब عَلَیْہِ السَّلَام की ज़ियारत और उन से मुलाक़ात करने के इरादे से चल दिए, पेहले इफ़्फ़त मआब साहिबज़ादी आगे चल रही थीं और हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام पीछे चल रहे थे, लेकिन फिर हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने मज़ीद पर्दे के एहतेमाम के लिए हज़रते शुऐब عَلَیْہِ السَّلَام की बेटी से फ़रमाया : आप मेरे पीछे रेह कर रास्ता बताती जाइए। इस त़रह़ हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام हज़रते शुऐब عَلَیْہِ السَّلَام के पास तशरीफ़ ले आए।[11]

हज़रते शुऐब عَلَیْہِ السَّلَام ने हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को अपने साथ खाना खिलाया और फिर बकरियां चराने की ज़िम्मेदारी दी और एक बा बरकत अ़सा उन के सिपुर्द किया, येह जन्नती अ़सा था जिसे हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام अपने साथ जन्नत से लाए थे।[12] येह अ़सा मुबारक सुर्ख़ रंग का था।[13] हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने कई बरस तक हज़रते शुऐब عَلَیْہِ السَّلَام के पास इक़ामत फ़रमाई और उन की बकरियों की देख भाल करते, उन्हें चराते और दीगर कामों में हज़रते शुऐब عَلَیْہِ السَّلَام का हाथ बटाते रहे, आप ने अपनी एक साहिबज़ादी हज़रते सफ़ूरह या शुरक़ा के साथ हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام का निकाह़ कर दिया।[14] हज़रते शुऐब عَلَیْہِ السَّلَام का एक मोजिज़ा येह भी है कि आप ने हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को कुछ बकरियां तोह़फ़े में दे कर कहा : येह बकरियां सफ़ेद और सियाह बच्चे जनेंगी। चुनान्चे, जैसे आप ने कहा था वैसे ही हुवा।[15] आप उन सह़ाइफ़ को पढ़ा करते थे जो अल्लाह करीम ने हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام पर नाज़िल फ़रमाए थे।[16] एक क़ौल के मुत़ाबिक़ आप को भी सह़ाइफ़ अ़त़ा हुवे थे।[17]

क़ौमे शुऐब हज़रते शुऐब عَلَیْہِ السَّلَام दो क़ौमों की जानिब रसूल बना कर भेजे गए 1 अहले मदयन और 2 अस्ह़ाबुल ऐका[18] आप ने अपनी क़ौम को इन्तेहाई बेहतरीन त़रीक़े से दावते दीन दी और दावते दीन देने में नर्मी और मेहरबानी को पेशे नज़र रखा इसी वज्ह से रसूले करीम प्यारे आक़ा मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब भी हज़रते शुऐब عَلَیْہِ السَّلَام का ज़िक्रे ख़ैर करते तो फ़रमाते : वोह ख़तीबुल अम्बिया हैं।[19] आप عَلَیْہِ السَّلَام सारा दिन वाज़ फ़रमाते और सारी रात नमाज़ में गुज़ारते थे।[20] एक रिवायत में है कि आप बहुत ज़ियादा नमाज़ पढ़ा करते थे, जब आप की क़ौम आप को नमाज़ पढ़ते हुवे देखती तो मज़ाक़ उड़ाती और हंसती थी।[21] आप ने लोगों को अल्लाह وحدہٗ لاشریک की इबादत की त़रफ़ बुलाया और नाप तोल में कमी और रास्ते में मुसाफ़िरों को डराने से मन्अ़ किया, जिस के सबब बाज़ ख़ुश नसीब लोग ईमान ले आए मगर ज़ियादा तर लोगों ने कुफ़्र किया[22] और अपने तुग़यान व इस्यान का मुज़ाहरा और अपनी सरकशी का इज़हार करते हुवे आप के साथ बे अदबी और बद ज़बानी की। आख़िरे कार दोनों क़ौमें अ़ज़ाबे इलाही से हलाक कर दी गईं। **"अस्ह़ाबे मदयन"** पर तो येह अ़ज़ाब आया कि فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ यानी हज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام की चीख़ और चिंघाड़ की हौलनाक आवाज़ से ज़मीन दहल गई और लोगों के दिल ख़ौफ़े देहशत से फट गए और सब बहुत जल्द मौत के घाट उतर गए।[23] जबकि ऐका वालों पर सियाह बदली से आग बरसाई गई जिस से वोह सब जल भुन गए।[24]

बक़िय्या अगले माह के शुमारे में

(1)اسد الغابہ، 5/277-فنون العجائب للنقاش، ص53 (2)خازن، الاعراف:85، 2/118 (3)اعلام للزرکلی، 3/165-البدایۃ والنہایۃ، 1/274 (4)سیرت مصطفیٰ، ص41 (5)صراط الجنان، 6/198 (6)تفسیر کبیر، ھود، تحت الآیۃ:88، 6/388 (7)اسلامی زندگی، ص143 (8)المنتظم فی تاریخ الملوک والامم، 1/326 (9)مستدرک، 3/175، حدیث:3583 (10)لطائف الاشارات للقشیری، 2/433 (11)بیضاوی، 3/289-خازن، 3/429-تفسیر ثمر قندی، 2/514، القصص، تحت الآیۃ:23 تا 25 (12)تفسیر قرطبی، ج6، 11/91 (13)نہایۃ الارب، 13/160 (14)مستدرک، 3/175، حدیث:3583 (15)صراط الجنان، 3/371 (16)تاریخ ابن عساکر، 23/78 (17)سیرت حلبیہ، 1/314 (18)تفسیر طبری، الشعراء:189، 9/473 (19)نوادر الاصول، 4/60 (20)صراط الجنان، 4/481 (21)تفسیر کبیر، ھود:87، 6/387 (22)البدایۃ والنہایۃ، 1/267 (23)عجائب القرآن، ص353 (24)تفسیر طبری، الشعراء:189، 9/473۔

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन ह़ातिब जुमह़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا

रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस बारगाह में बचपन में ह़ाज़री देने वाले ख़ुश नसीबों में से एक नाम ह़ज़रते सैयदना मुह़म्मद बिन ह़ातिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का भी है।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते ह़ातिब व ह़ज़रते उम्मे जमील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के बेटे, ह़ज़रते जाफ़र व ह़ज़रते अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के रज़ाई बेटे और अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र के रज़ाई भाई हैं। उम्मतियों में सब से पेहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम "मुह़म्मद" रखा गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदा ए माजिदा मक्का से ह़ब्शा की जानिब हिजरत के सफ़र में थीं कि कश्ती में आप की विलादत हुई।[1]

ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लुआ़बे दहन लगाया

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मेरी वालिदा ह़ज़रते उम्मे जमील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मेरे बचपन का वाक़ेआ़ बयान करते हुवे फ़रमाती हैं कि मैं तुम्हें ह़ब्शा से ले कर मदीनए मुनव्वरा आ रही थी तो मदीनए मुनव्वरा से एक या दो दिन के फ़ास्ले पर रुकी और तुम्हारे लिए खाना पकाने लगी कि लकड़ियां ख़त्म हो गईं, मैं लकड़ियां तलाश करने निकली तो तुम ने हांडी गिरा दी जो उलट कर तुम्हारे बाज़ू पर गिरी, मैं तुम्हें ले कर रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान ! येह मुह़म्मद बिन ह़ातिब है। नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तुम्हारे मुंह में अपना लुआ़बे दहन डाला, तुम्हारे सर पर हाथ फेरा, तुम्हारे लिए बरकत की दुआ़ फ़रमाई, अपना लुआ़बे दहन तुम्हारे हाथ पर लगाया और येह अल्फ़ाज़ पढ़े : اَذْهِبِ الْبَاْسَ رَبَّ النَّاسَ وَاشْفِ اَنْتَ الشَّافِیْ لَا شِفَاءَ اِلَّا شِفَاؤُكَ شِفَاءً لَا یُغَادِرُ سَقَمًا यानी ऐ लोगों के रब ! इस तक्लीफ़ को दूर फ़रमा और शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा क्यूंकि तू ही शिफ़ा देने वाला है तेरे सिवा कोई शिफ़ा देने वाला नहीं, ऐसी शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा जो बीमारी का नामो निशान भी ना छोड़े। ह़ज़रते उम्मे जमील केहती हैं कि मैं तुम्हें रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास से ले कर उठी भी नहीं थी कि तुम्हारा हाथ ठीक हो गया था।[2]

रिवायते ह़दीस आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से 2 अह़ादीसे मुबारका मरवी हैं।[3]

विसाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने 74 हिजरी में मक्कए मुकर्रमा में वफ़ात पाई।[4]

अल्लाह पाक की इन पर रेह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(1) الاصابہ فی معرفۃ الصحابہ، 6/8- سیر اعلام النبلاء، 4/512 (2) مسند امام احمد، 5/265، حدیث: 15453 (3) تاریخ الاسلام للذہبی، 5/523 (4) الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، 3/424۔

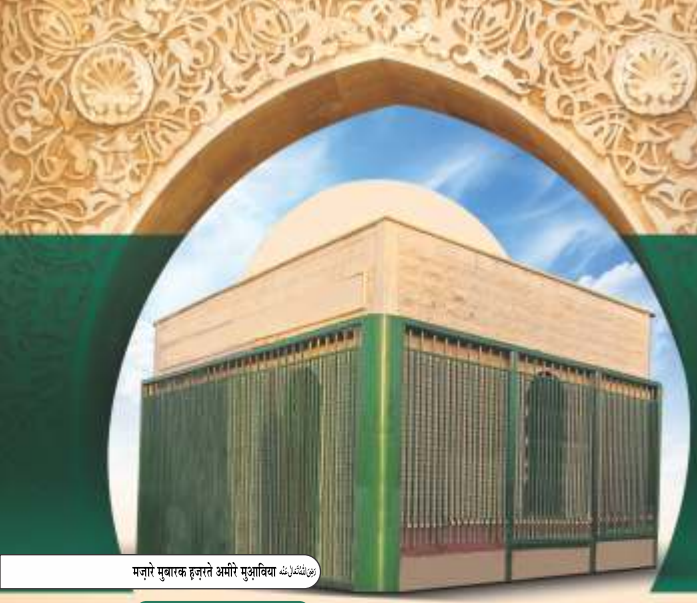

मज़ारे मुबारक हज़रते अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

शाने अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ब ज़बाने सह़ाबा व बुज़ुर्गाने दीन

दुआ ए मुस्त़फ़ा

सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी ह़याते त़ैयबा में सह़ाबा ए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان पर जो करम नवाज़ियां फ़रमाते थे उन में से एक येह है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबा ए किराम को दुआ़ओं से नवाज़ते थे । जिन सह़ाबा के लिए हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नाम ले कर दुआ़एं कीं उन में से एक ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी हैं । सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिए मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर रब्बे करीम से यूं दुआ़ की : ऐ अल्लाह ! इसे हादी व मेहदी बना, इसे हिदायत दे और इस के ज़रीए़ लोगों को हिदायत दे ।[1] ऐ अल्लाह ! मुआ़विया को किताब का इ़ल्म और ह़िक्मत सिखा दे और इसे अ़ज़ाब से बचा ।[2] ऐ अल्लाह ! मुआ़विया को हलाकत से मेह़फ़ूज़ फ़रमा और दुन्या ओ आख़ेरत में इस की मग़फ़ेरत फ़रमा ।[3] ऐ अल्लाह ! इस (मुआ़विया) को इ़ल्म व ह़िल्म से मामूर फ़रमा दे ।[4]

मोह़तरम क़ारेईन ! येह बात ज़ेह़न नशीन फ़रमा लीजिए कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़एं बारगाहे इलाही में निहायत आला शान के साथ मक़्बूल होती हैं । इमाम इब्ने ह़जर हैतमी शाफ़ेई़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ बिला शुबा आप की उम्मत के ह़क़ में बिल ख़ुसूस आप के सह़ाबा ए किराम के ह़क़ में मक़्बूल है ।[5]

आक़ा ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिस शख़्सिय्यत को इतनी अ़ज़ीम दुआ़ओं से नवाज़ा हो और उन के लिए मह़ब्बत भरे जज़्बात का इज़्हार करते हुवे कहीं यूं फ़रमाया हो : मुआ़विया ! मैं तुम से हूं और तुम मुझ से हो ।[6] और कहीं यूं फ़रमाया हो : अल्लाह व रसूल मुआ़विया से मह़ब्बत करते हैं ।[7] यक़ीनन उस शख़्सिय्यत का ज़िक्रे ख़ैर कसीर ज़बानों पर जारी हुवा होगा । आइए ! ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शानो अ़ज़मत, मक़ामो मर्तबे पर मुश्तमिल सह़ाबा ए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और बुज़ुर्गाने दीन के फ़रामीन पढ़िए और अपना ईमान ताज़ा कीजिए ।

शाने मुआ़विया ब ज़बाने सह़ाबा

1 मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते सैयदना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : तुम क़ैसरो किसरा और उन के रोबो दबदबे की बात करते हो ! जबकि तुम्हारे पास मुआ़विया मौजूद हैं ।[8]

2 मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जंगे सिफ़्फ़ीन से वापसी पर फ़रमाया : (ह़ज़रते) मुआ़विया की ह़ुकूमत को बुरा ना समझो, ख़ुदा की क़सम ! जब वोह नहीं होंगे तो सर कट कट कर इन्दराइन के फलों की त़रह़ ज़मीन पर गिरेंगे ।[9]

3 ह़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : (1) ह़ज़रते मुआ़विया फ़क़ीह हैं ।[10] (2) मैं ने ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बढ़ कर मुल्की ह़ुकूमत को

ज़ीनत देने वाला कोई नहीं देखा ।[11] (3) अमीरे मुआ़विया को कुछ ना कहो येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहा़बी हैं ।[12]

4 हज़रते सैयदना उ़मैर बिन सअ़्द رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ का ज़िक्र सिर्फ़ ख़ैरो भलाई से ही करो ।[13]

5 हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : मैं ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बाद लोगों में हज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बड़ा सरदार कोई नहीं देखा ।[14]

6 हज़रते सैयदना सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ केहते हैं : मैं ने सैयदना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ के बाद मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ से बढ़ कर ह़क़ के मुता़बिक़ फ़ैस्ला करने वाला कोई नहीं देखा ।[15]

7 हज़रते सैयदना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सैयदना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इलावा कोई ऐसा शख़्स नहीं देखा जिस की नमाज़ नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नमाज़ से ज़ियादा मुशाबेहत रखती हो ।[16]

8 हज़रते सैयदना कअ़्ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जैसी हुक्मरानी हज़रते सैयदना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने की है वैसी हुकूमत इस उम्मत का कोई भी फ़र्द नहीं करेगा ।[17]

शाने मुआ़विया ब ज़बाने बुज़ुर्गाने दीन

1 ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते सैयदना मुजाहिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अगर तुम हज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखते तो केहते येही मेहदी यानी हिदायत याफ़्ता हैं ।[18]

2 हज़रते सैयदना मुआ़फ़ा बिन इमरान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह में किसी ने सवाल किया : हज़रते सैयदना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ अफ़्ज़ल हैं या हज़रते सैयदना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ? येह सवाल सुनते ही आप के चेहरे पर जलाल के आसार नमूदार हुवे और निहायत सख़्ती से इरशाद फ़रमाया : क्या तुम एक ताबेई का सहा़बी से मुक़ाबला करते हो ? हज़रते सैयदना मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहा़बी, आप के सुसराली रिश्तेदार, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कातिब और अल्लाह पाक की त़रफ़ से अ़ता़कर्दा वह़ी के अमीन थे ।[19]

3 हज़रते सैयदना क़ुबैसा बिन जाबिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सैयदना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ से बढ़ कर दरगुज़र करने वाला, जेहालत से बेह़द दूर और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बढ़ कर बा वक़ार किसी और को नहीं देखा ।[20]

मोह़तरम क़ारेईन ! हज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़एं और मह़ब्बतें और जलीलुल क़द्र सहा़बा ए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के तारीफ़ी कलेमात आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ की अ़ज़्मत और मक़ामो मर्तबे को वाज़ेह़ करते हैं । इस लिए हर मुसलमान पर लाज़िम है कि तमाम सहा़बा ए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के साथ साथ हज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अ़ज़्मत भी अपने दिल में बिठाए ।

इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शारानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जिस ने सहा़बा ए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की इ़ज़्ज़त पर ह़म्ला किया यक़ीनन उस ने अपने ईमान पर ह़म्ला किया, इसी लिए इस का सद्दे बाब लाज़िम है ख़ा़स तौ़र पर हज़रते सैयदना अमीरे मुआ़विया और हज़रते सैयदना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के ह़वाले से येह ज़ियादा अहम है ।[21]

अल्लाह पाक हमें तमाम सहा़बा ए किराम का बा अदब बनाए और इन की मह़ब्बत हमारे दिलों में रासिख़ फ़रमाए । اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)ترمذی،5/455،حدیث:3868(2)مجمع الزوائد، 9/594،حدیث: 15917 (3) معجم اوسط، 1/497، حدیث: 1838(4)خصائص کبریٰ، 2/293(5) تطہیر الجنان، ص11(6)تاریخ ابن عساکر، 59/98(7)تاریخ ابن عساکر، 59/89 (8)تاریخ طبری،4/39(9)دلائل النبوۃ،6/466، تاریخ ابن عساکر،59/152 (10)بخاری،2/550،حدیث:3765ملتقطاً(11)مصنف عبد الرزاق،10/371، حدیث: 21151(12)بخاری،2/550، حدیث:3764(13)ترمذی،5/455، حدیث:3869(14) معجم کبیر،12/295، حدیث:13432(15)تاریخ ابن عساکر، 59/161(16)مجمع الزوائد،9/595، حدیث:15920(17)سیر اعلام النبلاء، 4/308(18)السنۃ للخلال، 1/438، رقم:669(19)البدایۃ والنہایۃ،5/643 (20)سیر اعلام النبلاء،4/308(21)الیواقیت والجواھر، ص334۔

मज़ारे हज़रते अ़ल्लामा ख़्वाजा फ़ैज़ मुहम्मद शाह जमाली चिश्ती निज़ामी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

मज़ारे हज़रते मियां मुहम्मद उ़मर ख़ान चमकनी बाबा رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

मज़ारे हज़रते अ़ल्लामा शाह मुहिब्बुल्लाह इलाहाबादी दादामियां رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

मज़ारे अ़ल्लामा मेहर मुहम्मद ख़ां हमदम नक़्शबन्दी क़ादरी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

मज़ारे हज़रते ख़्वाजा नय्यरुद्दीन ह़ाजी शरीफ़ ज़िन्दनी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए

रजबुल मुरज्जब इस्लामी साल का सातवां महीना है । इस में जिन सह़ाबा ए किराम, औलिया ए उ़ज़्ज़ाम और उ़लमा ए इस्लाम का यौमे विसाल या उ़र्स है, उन में से मज़ीद 12 का मुख़्तसर तआ़रुफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

औलिया ए किराम رحمہم اللہ السلام

1 मख़्दूमे मिल्लत ह़ज़रते ख़्वाजा नय्यरुद्दीन ह़ाजी शरीफ़ ज़िन्दनी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की पैदाइश 492 हिजरी को ज़न्दना नज़्द बुख़ारा (उज़्बेकिस्तान) में हुई और 10 रजब 612 हिजरी को आप का इन्तेक़ाल हुवा, मज़ार हिन्द के अ़लाक़े क़न्नौज में दरिया के किनारे पर है, आप जलीलुल क़द्र वली ए कामिल, इल्मे लदुन्नी से माला माल और फ़ुक़रा ओ मसाकीन से मह़ब्बत व मदद करने वाले थे ।(1)

2 क़ुत़्बे इलाहाबाद ह़ज़रते अ़ल्लामा शाह मुह़िबुल्लाह इलाहाबादी दादा मियां رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ जैयद आ़लिमे दीन, कई कुतुब के मुसन्निफ़, शारेह़े फ़ुसूसुल ह़कम, मुबल्लिग़े नज़रिय्याते मुहि़युद्दीन इब्ने अ़रबी, मुरीदो ख़लीफ़ा शैख़ अबू सईद गंगोही और सिल्सिला चिश्तिया साबिरिया के शैख़े त़रीक़त थे, आप का विसाल 9 रजब 1057 हिजरी को हुवा, मज़ारे मुबारक बहादुरगंज, इलाहाबाद (प्रयागराज, यू पी हिन्द) में मर्जए ख़ासो आ़म है ।(2)

3 ग़ौसे ज़मां ह़ज़रते मियां मुहम्मद उ़मर ख़ान चमकनी बाबा رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की विलादत मौज़ए सैयदां वाला, फ़रीदाबाद नज़्द दरिया ए रावी लाहौर में हुई और विसाल रजब 1190 हिजरी को फ़रमाया, मज़ारे मुबारक मौज़ए चमकनी शरीफ़, शाही सड़क, पेशावर पाकिस्तान में है । आप आ़लिमे दीन, कई कुतुब के मुसन्निफ़ और नक़्शबन्दी मुजद्दिदी सिलसिले के शैख़े त़रीक़त हैं ।(3)

4 आ़रिफ़े कामिल ह़ज़रते अ़ल्लामा ख़्वाजा फ़ैज़ मुह़म्मद शाह जमाली चिश्ती निज़ामी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की विलादत क़स्बा शाह जमाल, तेह़सील जामपूर ज़िलअ़ राजनपुर, पंजाब के एक इल्मी व रूह़ानी घराने में 1290 हिजरी में हुई और विसाल 8 रजब 1364 हिजरी में फ़रमाया, रौज़ए सन्दीला शरीफ़ ज़िलअ़ डेरा ग़ाज़ीख़ान में है । आप जैयद आ़लिमे दीन, साह़िबे करामत, मुरीदो ख़लीफ़ा ख़ानक़ाहे उ़बैदिय्या मुल्तान व ख़लीफ़ा तौंसा शरीफ़ और जैयद उ़लमा के उस्ताज़े गिरामी थे ।(4)

5 इमामुल आ़रिफ़ीन ह़ज़रते पीर सैयद मुह़म्मद मख़्दूम शाह गिरदेज़ी सोहावी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की पैदाइश 1273 हिजरी में आस्तानए आ़लिया चिश्तिया निज़ामिया सोहावा ज़िलअ़ बाग़ में हुई । आप ने अपने वालिद पीर सैयद अ़ली गिरदेज़ी सोहावी, पीर मेहर अ़ली शाह और दीगर उ़लमा से उ़लूमो फ़ुनून ह़ासिल किए और ज़िन्दगी भर दर्सो तदरीस करते रहे । आप पीर मेहर अ़ली शाह के मुरीदो ख़लीफ़ा थे । 19 रजब 1349 हिजरी को विसाल फ़रमाया । मज़ार सोहावा, तेह़सील ढेर कोट ज़िलअ़ बाग़ कश्मीर में है जहां हर साल उ़र्स होता है ।(5)

6 शैख़ुल इस्लाम, शिहाबुद्दीन, मुफ़्ती ए हिजाज़ ह़ज़रते इमाम इब्ने ह़जर अह़मद बिन मुह़म्मद हैतमी शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पैदाइश रजब 909 हिजरी को मह़ल्ला अबील हैतम, सूबा ग़रबिया, मिस्र में हुई और मक्का ए मुकर्रमा में रजब 974 हिजरी को विसाल फ़रमाया, आप फ़क़ीहे शाफ़ेई, मुह़द्दिसे वक़्त, मुसन्निफ़े कुतुबे कसीरा थे । आप तक़रीबन 33 साल तदरीस, इफ़्ता और तस्नीफ़ो तालीफ़ में मसरूफ़ रहे, अहम कुतुब में सवाइ़क़े मुह़र्रिक़ा, फ़तावा ह़दीसिया, तोह़फ़तुल मोह़ताज बशर्ह़िल मिन्हाज और तोह़फ़तुल अख़्बार फ़ी मौलिदुल मुख़्तार शामिल हैं ।[6]

7 मुह़िब्बे आला ह़ज़रत मौलाना क़ाज़ी ख़लीलुद्दीन ह़सन रेह़मानी ह़ाफ़िज़े पीलीभीती رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 1276 हिजरी में पीलीभीत में पैदा हुवे और यहीं 7 रजब 1348 हिजरी को विसाल फ़रमाया । आप जैयद आ़लिमे दीन, फ़ाज़िले मद्रसतुल ह़दीस पीलीभीत, तलमीज़े मुह़द्दिसे सूरती, मौलाना अमीर मीनाई और दाग़ देहलवी जैसे शोअ़रा के ममदूह़ थे । आप के 8 नातिया मजमूए़ शाएअ़ हो चुके हैं ।[7]

8 मुअर्रिख़े अहले सुन्नत ह़ज़रते मौलाना गुलाम दस्तगीर नामी साह़िब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पैदाइश 23 जुमादल उख़रा 1300 हिजरी को रत्ता पीरां ज़िल्अ़ शैख़ूपुरा अपने नाना के घर में हुई, आप फ़ारसी, उर्दू और अ़रबी पर दस्तरस रखते थे, तारीख़ गोई, इ़ल्मुल अन्साब और शाइ़री आप का मैदान था, मोह़कमए तालीम में ख़िदमात सर अन्जाम दे कर रीटायर्ड हुवे, आप ने एक सौ से ज़ाइद कुतुबो रसाइल लिखे, जिन में बुज़ुर्गाने लाहौर, तारीख़े जलीला और इस्लामी क़ानूने विरासत मश्हूर हैं, आप का विसाल 7 रजब 1381 हिजरी को लाहौर में हुवा, तदफ़ीन रत्ता पीरां ज़िल्अ़ शैख़ूपुरा में दरबारे क़लन्दर शाह के क़रीब की गई ।[8]

9 ह़स्सानुल अ़स्र ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद मज़्हरुद्दीन मज़्हर رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 1332 हिजरी में मौज़अ़ सतकूहा ज़िल्अ़ अमृतसर हिन्द के इ़ल्मी घराने में पैदा हुवे और आप का विसाल 19 रजब 1401 हिजरी को हुवा, मज़ार मुबारक छत्तरपार्क मरी रोड नज़्द भाराकहू ज़िल्अ़ रावलपिन्डी में है । आप ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, तलमीज़े ख़लीफ़ा ए आला ह़ज़रत, फ़ाज़िले दारुल उ़लूम ह़िज़्बुल अह़नाफ़, सिलसिलए चिश्तिया के शैख़े त़रीक़त, साह़िबे सोज़ो गुदाज़ शाइ़र, मश्हूर अदीब व कॉलम निगार और कई कुतुब के मुसन्निफ़ हैं, निशाने राह, ख़ातिमुल मुर्सलीन और कुल्लियाते मज़्हर आप की यादगार कुतुब हैं ।[9]

10 सुल्त़ानुल आ़शिक़ीन अ़ल्लामा मेह़र मुह़म्मद ख़ां हमदम नक़्शबन्दी क़ादरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 1334 हिजरी को सनूर ज़िल्अ़ पटयाला मशरिक़ी पंजाब, हिन्द में हुई, आप ह़ाफ़िज़ व क़ारी ए क़ुरआन, जामेए़ माक़ूलो मन्क़ूल, तल्मीज़ व मुरीदो ख़लीफ़ा शाह अबुल बरकात, फ़ाज़िले दारुल उ़लूम ह़िज़्बुल अह़नाफ़ लाहौर, ख़त़ीबे ज़ीशान, शैख़े त़रीक़त, शाइ़रे इस्लाम, बानी ए आस्ताना ए आ़लिया हमदम छांगामांगा और मुसन्निफ़े कुतुबे कसीरा हैं, आप को सिलसिलए तवक्कुलिया और सिलसिलए मुर्तज़ाइया से भी ख़िलाफ़त ह़ासिल थी, आप का विसाल 14 रजब 1403 हिजरी को हुवा, मज़ार छांगामांगा, तेह़सील चूनियां ज़िल्अ़ क़ुसूर में है ।[10]

11 उस्ताज़ुल उ़लमा ह़ज़रते मौलाना ख़्वाजा फ़ैज़ अह़मद तोगीरवी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आस्ताना ए तोगीरा के मशाइख़ में से हैं, आप जैयद आ़लिमे दीन, फ़ाज़िले अन्वारुल उ़लूम मुल्तान, सालेह़ व सआ़दत मन्द और मुदर्रिसे मद्रसए इस्लामिया अ़रबिय्या कमालुल उ़लूम तोगीरा थे । सारी उ़म्र दर्सो तदरीस में मसरूफ़े अ़मल रहे । आप का विसाल यकुम रजब 1404 हिजरी को हुवा ।[11]

12 मुफ़क्किरे इस्लाम ह़ज़रते मौलाना प्रोफ़ेसर मुह़म्मद ह़ुसैन आसी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ दीनी तालीम से आरास्ता, हमदर्दे मिल्लत, इ़ल्मो अ़मल के पैकर, नात गो शाइ़र, फ़नाफ़िश्शैख़, सफ़ीरे तेह़रीके इ़श्क़े रसूल, मुरीदो ख़लीफ़ा नक़्शे लासानी, बानी ए नक़्शे लासानी इस्लामिक यूनीवर्सिटी शकरगढ़, 30 से ज़ाइद कुतुबो रसाइल के मुसन्निफ़ थे, आप की पैदाइश 1357 हिजरी को बिकनौर तेह़सील पठानकोट ज़िल्अ़ गुर्दासपुर के एक दीनी घराने में हुई और 12 रजब 1427 हिजरी को इन्तेक़ाल फ़रमाया । मज़ार शकरगढ़ में है ।[12]

---

(1) تحفۃ الابرار، ص72-اقتباس الانوار، ص328 (2) انسائیکلوپیڈیا اولیائے کرام، 3/118تا120 (3) جہانِ امام ربانی 6/774، 779-تذکرہ اولیا، 2/298 (4) فیض شاہ جمالی، ص3تا6، 10، 20، 24، 31، 32 (5) فیضان سیّد علی، ص186تا193 (6) الاعلام للزرکلی، 1/234-فتح الالہ فی شرح المشکاۃ، 1/31تا41-الکواکب السائرۃ باعیان المائۃ العاشرۃ، 3/101 (7) تذکرہ محدث سورتی، ص268 (8) تذکرہ اکابرِ اہلِ سنّت، ص311 تا314 (9) مجالس علما، ص150تا153-بزرگانِ امرتسر، ص66-تذکرہ مجاہدین ختم نبوت، ص317تا320 (10) شہید کربلا، ص24تا35 (11) تذکرہ مشائخ توگیرہ شریف، ص209، 210 (12) سیرت حضور مفکر اسلام پروفیسر محمد حسین آسی، ص20، 52، 212، 519۔

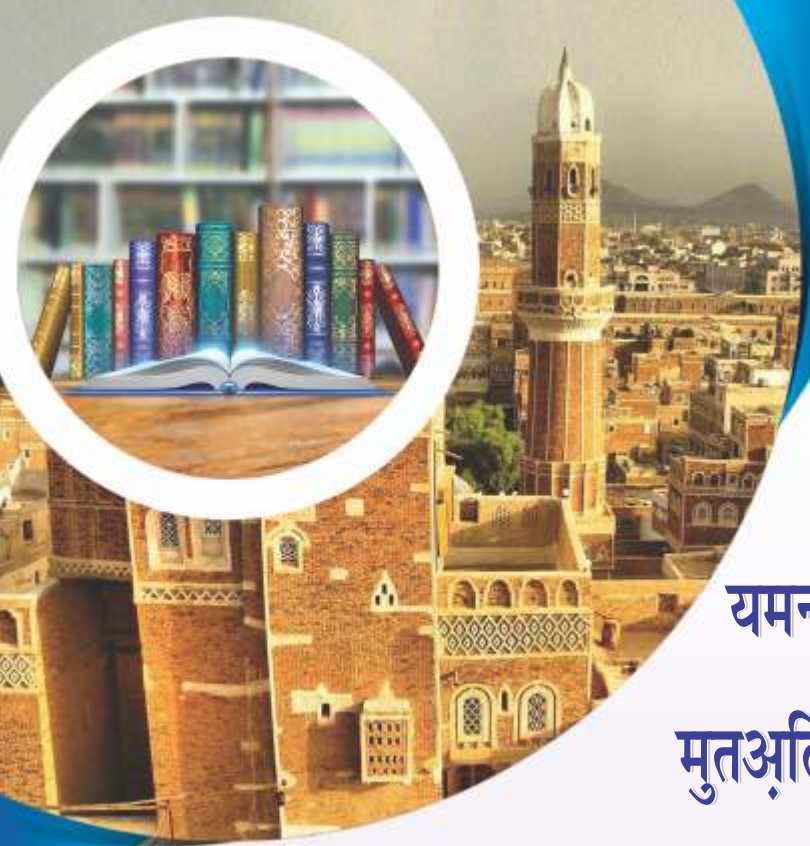

(चौथी और आख़री क़िस्त)

यमन और अहले यमन के मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीसे मुबारका

कुरआनी आयाते तैयबात की त़रह़ अह़ादीसे मुबारका में भी यमन और अहले यमन के ख़ूब ख़ूब मुबारक तज़किरे हैं, हम यहां ऐसे ही ईमान अफ़रोज़ फ़रामीने आ़ली शामिल करते हैं :

1 यमन की त़रफ़ से रह़मान की ख़ुश्बू

हुज़ूर नबी ए रेह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अहले यमन की दीन से मह़ब्बत और ह़िमायत की ख़ूबी को बयान किया। ह़ज़रते सलमह बिन नुफ़ैल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यमन की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया : اِنِّیۡ اَجِدُ نَفَسَ الرَّحۡمٰنِ مِنۡ قِبَلِ الۡیَمَن तर्जमा : बेशक मैं यमन की त़रफ़ से रह़मान की ख़ुश्बू पाता हूं।[1]

इस का माना येह है कि बेशक मैं येह मेह़सूस करता हूं कि अल्लाह पाक का मुझे कुशादगी अ़त़ा फ़रमाना और मेरी तक्लीफ़ दूर फ़रमाना यमन वालों की त़रफ़ से मेरी मददो नुस्रत फ़रमाने के ज़रीए है।[2] एक क़ौल येह है कि इस फ़रमाने नबवी से मुराद अन्सार हैं क्यूंकि अल्लाह पाक ने इन के ज़रीए मुसलमानों से तक्लीफ़ को दूर फ़रमाया और अन्सार क़बील ए अज़्द से तअ़ल्लुक़ रखने की वज्ह से यमनी हैं।[3] अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه नक़्ल करते हैं : बाज़ शारेह़ीन के ब क़ौल इस फ़रमाने नबवी में ह़ज़रते उवैस क़रनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की त़रफ़ इशारा है।[4]

2 अहले यमन की नर्म दिली और ईमान व ह़िक्मत

हुज़ूर नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अहले यमन के ईमान, ह़िक्मत और दिल की नर्मी को पसन्द फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया : अहले यमन आए, वोह दिलों के नर्म हैं, ईमान यमन का है, फ़िक़्ह तो यमनी है और ह़िक्मत यमनी है।[5]

अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ईमान को अहले यमन की त़रफ़ मन्सूब किया गया क्यूंकि येह बग़ैर किसी तक्लीफ़ व मशक़्क़त के ईमान को तस्लीम करने वाले हैं।[6] इमाम जज़री फ़रमाते हैं : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह इस लिए फ़रमाया क्यूंकि ईमान मक्कए मुकर्रमा से शुरूअ़ हुवा और येह तिहामा की सरज़मीन है और तिहामा यमन की ज़मीन से है, इसी लिए कहा जाता है : काबा यमानी है।[7]

इमाम मुहम्मद बिन अबू इस्हाक़ किलाबाज़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मज़्कूरा हदीसे पाक के तहत लिखते हैं : आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यमन वालों को दिलों की नर्मी और रिक़्क़त से मौसूफ़ फ़रमाया, फिर ईमान व हिक्मत को इन की तरफ़ मन्सूब कर के गोया ख़बर दी कि ईमान की बुन्याद मख़्लूक़े इलाही के साथ शफ़्क़त व मेहरबानी पर रखी गई है क्यूंकि येही सिफ़त है उन लोगों की जिन की तरफ़ ईमान को मन्सूब किया गया है ।[8]

शैख़ुल हदीस अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه लिखते हैं : अहले यमन इल्म व सफ़ाई ए क़ल्ब और हिक्मतो मारिफ़ते इलाही की दौलतों से हमेशा माला माल रहे । ख़ास कर हज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه कि येह निहायत ही ख़ुश आवाज़ थे और क़ुरआन शरीफ़ ऐसी ख़ुश इलहानी के साथ पढ़ते थे कि सहाबा ए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم में इन का कोई हम मिस्ल ना था । इल्मे अ़क़ाइद में अहले सुन्नत के इमाम शैख़ अबुल हसन अश्अ़री رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इन्ही हज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की औलाद में से हैं ।[9]

3 इन के दिल उधर लगा दे

अहले यमन के दिलों के लिए रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ईमान व इस्लाम की तरफ़ फिर जाने की ख़ास दुआ़ फ़रमाई, हज़रते ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि एक बार हुज़ूर नबी ए पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यमन की तरफ़ देख कर यूं दुआ़ फ़रमाई : اَللّٰهُمَّ اَقْبِلْ بِقُلُوْبِهِم यानी ऐ अल्लाह पाक ! इन के दिल उधर लगा दे ।[10] यानी अहले यमन के दिलों में हमारी महब्बत पैदा फ़रमा दे, उन्हें ईमान की दौलत से माला माल कर दे । (दर अस्ल) अहले मदीना पर रिज़्क़ की तंगी थी यमन में दाने फल कसरत से थे इन के उधर आने से अहले मदीना को दुन्यावी फ़ाइदे थे और इन्हें दीनी फ़ाइदे इस लिए (हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने) येह दुआ़ फ़रमाई ।[11]

4 यमन के लिए बरकत की दुआ़

हुज़ूर नबी ए पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यमन को अपना कहा और वहां के लिए दो बार यूं दुआ़ ए बरकत फ़रमाई : اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْ يَمَنِنَا यानी ऐ अल्लाह ! हम को हमारे यमन में बरकत दे ।[12]

अ़ज़ीम हनफ़ी आ़लिम हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ली क़ारी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ज़ाहिरी ओ बातिनी दोनों बरकतों की दुआ़ की गई है, येही वज्ह है कि यमन वालों में औलिया ए किराम कसरत से हुवे और यमन व शाम को दुआ़ ए बरकत से ख़ास करना ब ज़ाहिर इस लिए था कि मदीने वालों के लिए ख़ूराक इन दो शेहरों से आती थी । बाज़ बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : इन दो शेहरों के लिए बरकत की दुआ़ इस लिए फ़रमाई क्यूंकि आप की विलादतगाह मक्क ए मुकर्रमा है और येह सर ज़मीने यमन से है और आप का मस्कन व मदफ़न शरीफ़ मदीना ए तैयबा है और येह अ़लाक़ा शाम से है और इन दोनों की फ़ज़ीलत के लिए इतना ही काफ़ी है कि एक आप की जाए विलादत और दूसरी जाए तदफ़ीन है, जभी इन को अपनी तरफ़ मन्सूब फ़रमाया ।[13] हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इस दुआ़ के तहत लिखते हैं : यमन हज़रते उवैस क़रनी का वतन है वहां का ईमान, वहां की हिक्मत हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पसन्द है ।[14]

5 अहले यमन बेहतरीन लोग हैं

आख़री नबी मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अहले यमन को ज़मीन पर बसने वाले बेहतरीन लोगों में शुमार फ़रमाया । चुनान्चे हज़रते जुबैर बिन मुत़इम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि हम एक सफ़र में रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ थे, आप ने इरशाद फ़रमाया : यमन वाले बादलों की तरह तुम्हारे पास आएंगे, वोह ज़मीन में रेहने वालों में से बेहतरीन लोग हैं । एक अन्सारी ने अ़र्ज़ की : वोह हमारे इलावा दीगर से बेहतरीन हैं ? तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे, उन्हों ने तीन बार येह सवाल दोहराया कि या रसूलल्लाह ! सिवाए हमारे दीगर से बेहतरीन हैं ? तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आहिस्ता से फ़रमाया : सिवाए तुम्हारे ।[15]

6 यमन वालों से महब्बते रसूल

अल्लाह के आख़री रसूल हज़रते मुहम्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कई मवाक़ेअ़ पर अहले यमन से मह़ब्बत व शफ़्क़त का इज़्हार फ़रमाया, अपनाइय्यत से भरपूर येह इरशादे रसूल मुलाह़ज़ा कीजिए :

اِذَا مَرَّ بِكُمْ اَهْلُ الْيَمَنِ يَسُوقُونَ نِسَاءَهُمْ وَيَحْمِلُونَ اَبْنَاءَهُمْ عَلٰى عَوَاتِقِهِمْ، فَاِنَّهُمْ مِنِّي وَاَنَا مِنْهُمْ

तर्जमा : जब यमन वाले अपनी औ़रतों को ले कर और अपने बच्चों को कांधों पर उठाए हुवे तुम्हारे पास से गुज़रें तो वोह मुझ से और मैं उन से हूं।[16]

और एक बार यूं लुत़्फ़ो करम और इनायतों का इज़्हार किया : اَيْنَ اَصْحَابِي الَّذِينَ هُمْ مِنِّي وَاَنَا مِنْهُمْ، وَاَدْخُلُ الْجَنَّةَ وَيَدْخُلُونَهَا مَعِي؟ तर्जमा : मेरे वोह अस्ह़ाब कहां हैं जो मुझ से और मैं उन से हूं, मैं जन्नत में दाखि़ल होऊंगा तो वोह भी मेरे साथ जन्नत में दाखि़ल होंगे।[17]

और यमन वालों पर ना सिर्फ़ खु़द मेहरबान थे बल्कि दूसरों को भी मेहरबानी करने और इन के साथ अच्छा सुलूक करने का हु़क्म दिया, चुनान्चे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَلْاِيمَانُ يَمَانٍ، وَهُمْ مِنِّي وَاِلَيَّ، وَاِنْ بَعُدَ مِنْهُمُ الْمَرْبَعُ، وَيُوشِكُ اَنْ يَاْتُوكُمْ اَنْصَارًا وَاَعْوَانًا فَآمُرُكُمْ بِهِمْ خَيْرًا तर्जमा : ईमान तो यमन वालों का है, वोह मुझ से हैं और मेरी त़रफ़ आएंगे अगर्चे उन की ज़रखे़ज़ ज़मीन उन से दूर हो जाएगी और क़रीब है कि वोह तुम्हारे मुआ़विन और मददगार बन कर आएंगे तो मैं तुम्हें उन के साथ भलाई का हु़क्म देता हूं।[18]

7 नबी ए रेह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सब से पेहले मुसाफ़ह़ा करने वाले

ब वक़्ते मुलाक़ात मुसाफ़ह़ा करना सुन्नते सह़ाबा है बल्कि सुन्नते रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है।[19] और अहले यमन को येह शरफ़ो फ़ज़ीलत ह़ासिल है कि सब से पेहले इन्हों ने आ कर हु़ज़ूर नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुसाफ़ह़ा करने की सआ़दत ह़ासिल की । चुनान्चे, ह़ज़रते अनस رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि जब अहले यमन हु़ज़ूर नबी ए पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की खि़दमते बा बरकत में ह़ाज़िर हुवे तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम्हारे पास अहले यमन आए हैं और वोह पेहले लोग हैं जिन्हों ने आ कर मुसाफ़ह़ा किया।[20]

अल्लाह पाक यमन और तमाम बिलादे इस्लामिय्या पर अपना खु़सूसी फ़ज़्लो करम फ़रमाए और दुन्या भर में बसने वाले तमाम मुसलमानों को अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों का पाबन्द बनाए।

اٰمِيْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) معجم کبیر، 7/52، حدیث:6358- مسند الشامیین، 2/149، حدیث:1083 (2) مشکل الحدیث وبیانہ، 1/198 (3) النہایۃ فی غریب الحدیث والاثر، 5/80 (4) فیض القدیر، 4/170 (5) مسلم، ص50، حدیث:182 (6) التیسیر بشرح الجامع الصغیر، 1/427 (7) مرقاۃ المفاتیح، 10/319، تحت الحدیث:5969 (8) بحر الفوائد المشہور بمعانی الاخیار للکلاباذی، ص72 (9) مدارج النبوت، 2/366- المواہب اللدنیۃ مع شرح الزرقانی، 5/163 تا 166- سیرت مصطفی، ص510 (10) ترمذی، 5/489، حدیث:3960 (11) مرأۃ المناجیح، 8/579 (12) بخاری، 4/440، حدیث:7094 (13) مرقاۃ المفاتیح، 10/639، تحت الحدیث:6271 (14) مرأۃ المناجیح، 8/578 (15) مسند بزار، 8/351، حدیث:3429 (16) معجم کبیر، 17/123، حدیث:304 (17) معجم کبیر، 13/35، حدیث:123 (18) معجم کبیر، 13/29، حدیث:96 (19) مرأۃ المناجیح، 6/355 (20) ابو داؤد، 4/453، حدیث:5213-

किताब फ़ैज़ाने अमीरे मुआ़विया (288 सफ़ह़ात) अ़ज़ीम सह़ाबी ए रसूल, कातिबे वह़ी ह़ज़रते सैयदना अमीरे मुआ़विया رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की सीरत पर लिखी गई है जिस में आप का तआ़रुफ़ और आप के फ़ज़ाइलो मनाक़िब का बयान है। येह किताब मक्तबतुल मदीना से ह़ासिल कीजिए।

मज़ारे हज़रते सैयदना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه
यौमे विसाल 25 रजबुल मुरज्जब

(क़िस्त् : 01)

अढ़ाई साल में अ़वामी ख़ुशह़ाली का राज़

99 हिजरी में ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक ने अपने बाद मन्सबे ख़िलाफ़त के लिए ख़लीफ़ा ए राशिद ह़ज़रते सैयदना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का नाम मुन्तख़ब किया।

ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ सिर्फ़ अढ़ाई साल (तीस माह) का मुख़्तसर अ़र्सा इस मन्सब पर रहे और आप ने इस क़दर ख़ुश उस्लूबी से ख़िलाफ़त संभाली कि जब आप का इन्तेक़ाल हुवा तो रिआ़या में कोई एक शख़्स भी ग़रीब ना रहा, लोग ज़कात तक़्सीम करने के लिए हाथ में रक़म लिए फिरते लेकिन कोई लेने वाला ना होता।(1)

ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के दौरे हुकूमत ने ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी की यादें ताज़ा कर दीं और आप की ख़िलाफ़त **"ख़िलाफ़ते राशिदा"** केहलाई।(2)

अलबत्ता सवाल येह है कि सिर्फ़ 30 महीने के मुख़्तसर अ़र्से में ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने किस त़रह़ इतना बड़ा इन्क़िलाब बरपा किया ? वोह कौन से अहम फ़ैसले और इक़्दामात थे कि जिन के सबब हर त़रफ़ ख़ुशह़ाली पैदा हो गई ? और सिर्फ़ माली एतेबार से ही नहीं बल्कि लोगों के किरदार व अख़्लाक़ में भी बेहतरी आई, आइए ! येह जानने के लिए आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की त़र्ज़े ख़िलाफ़त पर नज़र डालते हैं।

तरक़्क़ी के अहम अ़नासिर ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िलाफ़त में तरक़्क़ी के बुन्यादी और अहम अ़नासिर आप के कुछ अहम फ़ैसले थे जो आप की दूरअन्देशी और दानिशमन्दी का भी मुंह बोलता सुबूत हैं :

1 ज़ुल्म का ख़ातिमा ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ख़लीफ़ा मुक़र्रर होते ही सब से पेहले अपनी ममलुकत से ज़ुल्म का ख़ातिमा फ़रमाया, चुनान्चे, इस के लिए आप ने चन्द इक़्दामात फ़रमाए :

ह़क़ तलफ़ी का ख़ातिमा जहां हुक़ूक़ की ह़िफ़ाज़त की जाती हो और ह़क़ तलफ़ी को किसी सूरत बरदाश्त ना किया जाता हो तो वहां ज़ुल्म की आंधियां नहीं चल सकतीं चुनान्चे, ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ख़लीफ़ा बनते ही सब से पेहले लूटी गई दौलत और जाईदाद उन के अस्ल मालिकों को वापस दिलवाई और इस बात का एहतेमाम फ़रमाया कि जो किसी त़रह़ के ज़ुल्म का शिकार हुवा हो तो वोह आ जाए ताकि उस का ह़क़ उसे वापस किया जा सके।(3) येह त़र्ज़े अ़मल देखते ही लोगों की बड़ी तादाद अपने अपने मुक़द्दमात ले कर दूर दूर से पहुंच गई और आप ने उन में से हर एक को उस की चीज़ (माल, अश्या, ज़मीनें खेती वग़ैरा) वापस दिलवाई।(4) ह़त्ताकि एक शख़्स दूर दराज़ से सफ़र करता हुवा आप के पास आया और अपनी ज़मीन के मुतअ़ल्लिक़ मुआ़मला अ़र्ज़ किया कि जिस पर किसी ने नाजाइज़ क़ब्ज़ा कर रखा था, आप ने ना सिर्फ़ उसे उस की ज़मीन वापस दिलवाई बल्कि आप तक पहुंचने के उस शख़्स के जितने सफ़री अख़राजात हुवे थे वोह भी उसे बैतुल माल से दिलवाए, मज़ीद अपनी त़रफ़ से भी 5 दिरहम अ़त़ा फ़रमाए।(5)

(बक़िय्या अगले माह के शुमारे में)

---

(1)سیرت عمر بن عبدالعزیز لابن عبدالحکم، ص110 (2)سیرت عمر بن عبدالعزیز لابن جوزی، ص73 (3)سیرت عمر بن عبد العزیز لابن جوزی، ص125 مفہوماً (4)سیرت عمر بن عبدالعزیز لابن عبدالحکم، ص111 (5)سیرت عمر بن عبدالعزیز لابن عبدالحکم، ص129 تا130۔

Honey शहद

नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ग़िज़ाओं बल्कि मेहबूब ग़िज़ाओं में से एक शहद है, आप ने शहद को नोश फ़रमाया है । शहद कई त़रह़ के फ़वाइद से मालामाल एक ऐसी क़ुदरती ग़िज़ा है जिस का जवाब नहीं । इस में आयर्न, विटामिन्ज़ और एन्टी ऑक्सीडन्ट पाए जाते हैं, इस के मीठे ज़ाइक़े और बेहतरीन ख़ुश्बू की वज्ह से तमाम उ़म्र के अफ़राद इसे पसन्द करते हैं । इन ही ख़ुसूसिय्यात की वज्ह से शहद को सुपर फ़ूड (Super Food) कहा जाता है । अ़रबी ज़बान में शहद को "عَسَلٌ" केहते हैं । क़ुरआने पाक में एक मक़ाम पर जन्नत के शहद का ज़िक्र आया है, और वहां लफ़्ज़ عَسَل इस्तेमाल हुवा है । चुनान्चे इरशाद होता है : وَاَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और साफ़ शफ़्फ़ाफ़ शहद की नेहरें हैं ।[1] जबकि शहद की मख्खी को अ़रबी ज़बान में نَحْلٌ कहा जाता है । क़ुरआने करीम में शहद की मख्खी के नाम पर एक पूरी सूरत मौजूद है जिस का नाम النَّحْل है । इस में अल्लाह पाक ने ख़ुद शहद के फ़वाइदो कमालात बयान फ़रमाए हैं चुनान्चे एक जगह इरशाद होता है : يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : उस के पेट से एक पीने की रंग बिरंगी चीज़ निकलती है इस में लोगों के लिए शिफ़ा है ।[2]

तफ़्सीर के निकात

तफ़्सीरे ह़सनात में इस आयत के तह़त लिखा है कि शहद के चार रंग होते हैं : 1 सफ़ेद 2 ज़र्द 3 सुर्ख़ और 4 काला । येह रंग मख्खी की उ़म्र के एतेबार से होते हैं । सफ़ेद रंग जवान मख्खी से, ज़र्द रंग अधेड़ उ़म्र वाली से, सुर्ख़ रंग बूढ़ी मख्खी से और काला रंग उस मख्खी से ह़ासिल होने वाले शहद का होता है जो इस से ज़ाइद उ़म्र में पहुंच कर मेहनत करे ।[3]

शहद का मिज़ाज (तासीर)

ताज़ा शहद दूसरे दरजे में गर्म और पेहले दरजे में ख़ुश्क होता है ।[4]

शहद से मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीसे मुबारका

कई अह़ादीसे मुबारका में शहद का ज़िक्र आया है, आइए ! चन्द अह़ादीसे मुबारका मुलाह़ज़ा कीजिए।

1 ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के यहां शहद नोश फ़रमाते और उन के यहां कुछ देर तशरीफ़ फ़रमा रेहते थे।[5]

2 ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मीठी चीज़ और शहद पसन्द फ़रमाते थे।[6]

3 ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में बत़ौरे हदिया शहद पेश किया गया तो आप ने हम में एक एक लुक़्मे के बराबर शहद तक़्सीम फ़रमाया, तो मैं ने अपना ह़िस्सा ले लिया, फिर मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मैं मज़ीद ले लूं ? आप ने फ़रमाया : हां, ले लो।[7]

4 नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दो शिफ़ाओं को लाज़िम पकड़ो, एक शहद दूसरी क़ुरआन शरीफ़।[8]

5 नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने शिफ़ा देने वाली अश्या में शहद को शुमार फ़रमाया।[9]

6 ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि आक़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स हर महीने तीन दिन सुब्ह़ के वक़्त शहद चाट लिया करे उस को कोई बड़ी बला ना पहुंचेगी।[10]

7 ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक शख़्स नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की, कि मेरे भाई को पेट की बीमारी है, आप ने फ़रमाया : उस को शहद पिलाओ, फिर दूसरी बार आया तो आप ने फ़रमाया : उस को शहद पिलाओ, फिर (तीसरी बार) आया और अ़र्ज़ किया कि मैं ने पिलाया (लेकिन फ़ाइदा नहीं हुवा) आप ने फ़रमाया : अल्लाह सच्चा है और तेरे भाई का पेट झूटा है, उस को शहद पिलाओ, चुनान्चे उस ने फिर शहद पिलाया तो वोह तन्दुरुस्त हो गया।[11]

ह़दीस के निकात

❖ नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से शहद नोश फ़रमाना साबित है ❖ आक़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शहद पसन्द था ❖ शहद से शिफ़ा ह़ासिल होती है ❖ त़िब्बी फ़वाइद की वज्ह से शहद को बत़ौरे इ़लाज इस्तेमाल किया जा सकता है।

शहद के त़िब्बी फ़वाइद

शहद के कई त़िब्बी फ़वाइद हैं, इन्ही फ़वाइद की वज्ह से शहद को सेंकड़ों सालों से दुन्या के मुख़्तलिफ़ ह़िस्सों में बत़ौरे दवा इस्तेमाल किया जा रहा है। आइए ! इस के चन्द त़िब्बी फ़वाइद मुलाह़ज़ा कीजिए : ❁ शहद आवाज़ को साफ़ करता, बीनाई को तेज़ करता है और भूक को बढ़ाता है ❁ ज़ख़्म का मवाद साफ़ कर के ताज़ा गोश्त पैदा करता है ❁ जिस्म का रंग निखारता है ❁ अ़क़्ल ज़ियादा करता है ❁ ख़ांसी को ख़त्म करता है ❁ चर्बी को कम करता है।[12] ❁ शहद के इस्तेमाल से कोलेस्ट्रोल लेवल में बेहतरी आती है ❁ हाई ब्लड प्रेशर में बेहतरी आती है ❁ सर की ख़ुश्की का ख़ातिमा करता है ❁ वज़्न में कमी लाता है।[13]

नोट : हर ग़िज़ा और दवा अपने डॉक्टर या ह़कीम के मश्वरे से ही इस्तेमाल कीजिए।

---

(1)پ26، محمد، آیت 15(2)پ14، النحل:69(3)تفسیر حسنات، پ14، النحل، تحت الآیۃ: 69، 3/637 ماخوذاً(4)خزائن الاذویہ، 3/56 (5)بخاری، 3/359، حدیث:4912(6)بخاری، 4/17، حدیث: 5682 (7)ابن ماجہ، 4/94، حدیث: 3451 (8)ابن ماجہ، 4/95، حدیث: 3452 (9)دیکھئے: بخاری، 4/17، حدیث:5681(10)ابن ماجہ، 4/94، حدیث:3450(11)بخاری، 4/17، حدیث: 5684(12)خزائن الاذویہ، 3/59(13)ہیلتھ وائز ویب۔

गुर्दे की पथरी अस्बाब, अ़लामात व इलाज

ख़ूराक इन्सानी ज़िन्दगी की बुन्यादी ज़रूरत है मगर सेहतमन्द और बीमार होने की काफ़ी ह़द तक वज्ह भी येही बनती है क्यूंकि आ़म तौ़र पर हर क़िस्म की ख़ूराक के बुन्यादी अज्ज़ा चिकनाई, ह़यातीन (विटामिन्ज़), मादनिय्यात (नमकिय्यात) और कार्बोहाईड्रेटीस पर मब्नी होते हैं, लेहाज़ा अगर इन्सानी जिस्म को मुतवाज़िन ख़ूराक उस की ज़रूरत के मुत़ाबिक़ मिलती रहे तो इन्सान तन्दुरुस्त व तवाना रेहता है और अगर ख़ूराक ग़ैर मुतवाज़िन हो या मुतवाज़िन तो हो मगर ज़रूरत से ज़ियादा पेट में ठूंस दी जाए तो जिस्म में मन्फ़ी तब्दीलियां पैदा होना शुरूअ़ हो जाती हैं जो आख़िरे कार किसी ना किसी बीमारी और तक्लीफ़ का सबब बन जाती हैं। इन्ही में से एक तक्लीफ़ देह मुआ़मला गुर्दे, पित्ते और मसाने वग़ैरा जिस्म के किसी ह़िस्से में पैदा होने वाली पथरी का भी है।

पथरी की अ़लामात

❁ कमर में गुर्दे के मक़ाम पर आगे पीछे दर्द मेह़सूस होता है ❁ गदला, ख़ूनी और बदबूदार पेशाब आता है ❁ मतली और क़ै होना ❁ पेशाब आने का रुज्ह़ान बार बार होना ❁ बुख़ार और सर्दी लगना ❁ पेशाब में नमकिय्यात की ज़ियादती। आज कल अल्ट्रा साउन्ड से पथरी, पथरी के साइज़ और मक़ाम का पता लगाया जा सकता है, एक्सरे (X-Ray) में पथरी सफ़ेद धब्बे के तौ़र पर ज़ाहिर होती है।

पथरी बनने की वज्ह

पथरी की एक वज्ह ख़ून का गाढ़ा होना और इस की गर्दिश का आहिस्ता होना भी है। दर अस्ल जिस्मानी सेहत के लिए इस के अन्दर ख़ून की बेहतरीन गर्दिश ज़रूरी है ताकि ख़ून में शामिल क़ाबिले ह़ल ज़रूरी अज्ज़ा मसलन आयर्न, केल्शियम, मेग्नेशियम और ज़िन्क वग़ैरा ख़ून की बेहतरीन रवानी की वज्ह से ह़ल होते रहें। लेकिन पेशाब आवर ख़ुसूसिय्यात की ह़ामिल चीज़ों (ख़ास तौ़र पर चाए, कॉफ़ी, कोला मशरूबात और इसी तासीर की दीगर चीज़ों) के इस्तेमाल से चूंकि जिस्म से पानी ज़रूरत से ज़ियादा निकल जाता है जिस से ख़ून गाढ़ा हो जाता है। इस की वज्ह से ख़ून की ह़ल पज़ेरी की ख़ुसूसिय्यात कम हो जाती हैं और ख़ून के अन्दर मौजूद ह़ल पज़ीर अज्ज़ा, ग़ैर ह़ल पज़ीर अज्ज़ा में बदल जाते हैं और फिर जब येह ख़ून फ़िल्टर होने के लिए गुर्दे में जाता है तो येह ग़ैर ह़ल शुदा ज़र्रात गुर्दे में रेह जाते हैं जो बाद में पथरी की शक्ल इख़्तियार कर लेते हैं।

पथरी की बनावट का सबब बनने वाली चीजें

गुर्दे की पथरी, मसाने की पथरी और फिर पेशाब की नाली (Urinary Tract) की पथरी तक़रीबन इस सब के अज्ज़ा ए तरकीबिया एक जैसे होते हैं। येह पथरी कीमियाई लेहाज़ से केल्शियम के नमकिय्यात होते हैं जिस में केल्शियम फ़ॉस्फ़ेट, केल्शियम यूरेट, केल्शियम ओग्ज़ालेट (Calcium Oxalate) शामिल होते हैं। इस सूरत में अगर केल्शियम इस्तेमाल किया जाता है तो पथरी के बनने के इमकानात बढ़ जाते हैं। ख़ूराक में ऐसी अश्या जिन में ओग्ज़ालेट मौजूद होते हैं जैसे टमाटर, रीवन्ड चीनी, चोकलेट, चाए, हल्यून (Asparagus) और पकी हुई पालक (ख़ास तौर पर अगर सहीह धुली हुई भी ना हो) वग़ैरा गुर्दे की पथरी बनने का सबब बनती हैं।

पथरी के रुज्हानात

पथरी का सबब बनने में येह चीजें भी शामिल हैं : 20 से 40 साल की उम्र के दौरान पेशाब आवर अदविय्यात का इस्तेमाल, दाफ़ेए तेज़ाबिय्यत (ऐन्टी एसिड) या ग़ुदूदे दरक़िय्या (Thyroid Gland) की अदविय्यात का इस्तेमाल जिस्मानी नक़्लो हरकत की कमी (Lack of physical Activity), पुरानी बीमारियां (Chronic Diseases), ख़ूराक में केल्शियम की कमी, नमक की और सुर्ख़ (लाल) गोश्त की ज़ियादती।

पथरी के बारे में दो तेहक़ीक़ी तजज़िये

1 इटली में की गई तेहक़ीक़ के मुताबिक़ गुर्दे की पथरी बनने की तीन बड़ी वुजूहात येह हैं : 1 केल्शियम की कमी 2 सोडियम की ज़ियादती 3 गोश्त पर मब्नी प्रोटीन।

2 जदीद तेहक़ीक़ ने साबित कर दिया है कि अगर केल्शियम स्ट्रेट के मुरक्कबात को केल्शियम (Supplement) के तौर पर इस्तेमाल किया जाए तो इन्सानी जिस्म में पथरी का रुज्हान नहीं बनता। पथरी बनने में ओग्ज़ालिक एसिड (Oxalic Acid) यूरिक एसिड (Uric Acid) और फ़ोस्फ़ोरिक एसिड नुमायां किरदार अदा करते हैं। मेग्नेशियम की कमी भी पथरी पैदा करने में मुआविन होती है। लेकिन अगर जिस्म में केल्शियम की कमी ना हो तो मेग्नेशियम की भी कमी नहीं होने पाती। केल्शियम ओग्ज़ालेट (Calcium Oxalate) पर मब्नी पथरी से नजात हासिल करना क़दरे मुश्किल है।

पथरी के मरीज़ के लिए परहेज़ी व मुफ़ीद चीज़ें

पथरी के मरीज़ चाए, कॉफ़ी, कोला मशरूबात, हर क़िस्म के गोश्त, नमक और तेज़ाबी ग़िज़ाओं से मुकम्मल परहेज़ करें। मशरूब के तौर पर लस्सी, गन्ने का रस, शरबते बज़ूरी का इस्तेमाल करें।

तिब्बे यूनानी में पथरी का तरीक़ए इलाज

❁ लीथियम (Lithium) के मुरक्कबात (पथरी को तोड़ कर ज़र्रात में बदलने के तौर पर) ❁ अगर पेशाब की नाली (Urinary Tract) में पथरी की वज्ह से इन्फ़ेक्शन मौजूद हो तो चांदी के मुरक्कबात, हल्दी के मुरक्कबात इस में मोअस्सर किरदार अदा कर सकते हैं। **बतौरे पेशाब आवर :** ❁ पथ्थर चट बूटी का इस्तेमाल, शरबते बज़ूरी ❁ क़लमी शोरा ❁ तुल्सी की दाल का इस्तेमाल, गन्ने के रस का इस्तेमाल।

पथरी तोड़ने के लिए 2 नुस्ख़े मअ अज्ज़ा ए तरकीबिया की मिक़्दार व यौमिया ख़ूराक

नुस्ख़ा 1 लीथियम स्ट्रेट 10 मिली ग्राम, पोटेशियम कार्बोनेट 300 मिली ग्राम, मेग्नेशियम स्ट्रेट 30 मिली ग्राम, स्ट्रिक एसिड 40 मिली ग्राम, पथ्थर चट बूटी का सफ़ूफ़ (पावडर) 100 मिली ग्राम, तमाम अदविय्यात यकजां (Mix) कर के सिफ़र नम्बर के केप्सूल्ज़ में भर लीजिए।

ख़ूराक शरबते बज़ूरी के साथ सुब्ह, दोपहर, शाम एक एक केप्सूल इस्तेमाल करें। वक़्फ़े वक़्फ़े से 24 घन्टे में कम अज़ कम 16 ग्लास पानी पिएं और तुल्सी की आधा पाव दाल रोज़ाना ज़रूर इस्तेमाल करें।

नुस्ख़ा 2 क़लमी शोरा 20 ग्राम, जौखार (अस्ली) 10 ग्राम, तेज़ाब शोरा 5 क़तरे मिला कर सफ़ूफ़ तैयार करें।

ख़ूराक पानी मिले दूध के साथ 2 से 3 ग्राम सफ़ूफ़ इस्तेमाल करें। इस नुस्ख़े के इस्तेमाल से اِنْ شَآءَ اللّٰه बग़ैर किसी ऑपरेशन के पथरी का इलाज मुमकिन है।

नोट : हर ग़िज़ा और दवा अपने डॉक्टर या हकीम के मश्वरे से ही इस्तेमाल कीजिए।

नए लिखारी

(New Writers)

वाक़िअ़ए ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام से 5 क़ुरआनी नसीह़तें

मुह़म्मद मेहताब रज़ा मदनी
(तख़स्सुस फ़िल ह़दीस, जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने अ़त्तार नागपुर)

अल्लाह पाक ने क़ुरआन मजीद में बहुत से अम्बिया ओ रुसुल और उन की क़ौम के ह़ालात व वाक़ेआ़त को बयान फ़रमाया है । इन अम्बिया के ह़ालात व वाक़ेआ़त बयान करने के मक़ासिद का ज़िक्र करते हुवे अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया :

﴿وَ كُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَ جَآءَكَ فِیْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَ مَوْعِظَةٌ وَّ ذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِیْنَ(۱۲۰)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और सब कुछ हम तुम्हें रसूलों की ख़बरें सुनाते हैं जिस से तुम्हारा दिल ठेहराएं और उस सूरत में तुम्हारे पास ह़क़ आया और मुसलमानों को पन्दो नसीह़त । (پ11،ھود:120)

अल्लाह पाक ने क़ुरआने मजीद में अम्बिया ए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की ख़बरें ज़िक्र करने का एक मक़्सद येह इरशाद फ़रमाया कि मुसलमान नसीह़त ह़ासिल करें । क़ुरआने मजीद में बयान कर्दा वाक़ेआ़त में से एक वाक़ेआ़ ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का है जिस में मुसलमानों के लिए बहुत नसीह़तें हैं जिन में से पांच का ज़िक्र करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं :

1 काम से पेहले मश्वरा करना : अल्लाह पाक फ़रमाता है : ﴿وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓىٕكَةِ اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً ؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया : मैं ज़मीन में अपना नाइब बनाने वाला हूं । (پ1،البقرۃ:30) अल्लाह पाक इस से पाक है कि उस को किसी से मश्वरे की ह़ाजत हो, मगर आदम عَلَيْهِ السَّلَام को ख़लीफ़ा बनाने की ख़बर फ़रिश्तों को ज़ाहिरी तौ़र पर मश्वरे के अन्दाज़ में दी गई । इस से मालूम हुवा कि अहम काम से पेहले अपने मातह़त अफ़राद से मश्वरा कर लिया जाए ताकि उस काम से मुतअ़ल्लिक़ उन के ज़ेहन में कोई ख़लिश हो तो उस का इज़ाला हो जाए या कोई ऐसी मुफ़ीद राए मिल जाए जिस से वोह काम मज़ीद बेहतर अन्दाज़ से हो जाए । (सिरातुल जिनान, 1/96 ता 97)

2 इल्म फ़ज़ीलत का सबब : ﴿وَ عَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓىٕكَةِ ۙ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِیْ بِاَسْمَآءِ هٰۤؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ(۳۱)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह पाक ने आदम को तमाम अश्या के नाम सिखाए फिर सब अश्या मलाइका पर पेश कर के फ़रमाया : सच्चे हो तो इन के नाम तो बताओ ! (پ1،البقرۃ:31) इस आयत के तह़त उ़लमा फ़रमाते हैं : अल्लाह पाक ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के फ़रिश्तों पर अफ़्ज़ल होने का सबब

"इल्म" ज़ाहिर फ़रमाया। इस से मालूम हुवा कि इल्म ख़ल्वतों और तन्हाइयों की इबादत से अफ़्ज़ल है।

(सिरातुल जिनान, 1/98)

3 तकब्बुर ख़ुदा की नाराज़गी का सबब : ﴿وَ اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓىٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِیْسَ ؕ اَبٰى وَ اسْتَكْبَرَ ۫ وَ كَانَ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ(۳۴)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब हम ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो तो सब ने सज्दा किया सिवाए इब्लीस के, मुन्किर हुवा और ग़ुरूर किया और काफ़िर हो गया। (پ1، البقرۃ:34) इस आयत से येह सबक़ हासिल हुवा कि तकब्बुर ऐसा ख़तरनाक अमल है कि येह बाज़ औक़ात बन्दे को कुफ़्र तक पहुंचा देता है, देखें शैतान इन्तेहाई इबादत गुज़ार, फ़रिश्तों का उस्ताद और मुक़र्रबे बारगाहे इलाही होने के बा वुजूद बातिल अक़ीदे, हुक्मे इलाही से इन्कार और ताज़ीमे नबी से तकब्बुर की वज्ह से काफ़िर हो गया। (देखिए : सिरातुल जिनान, 1/102 ता 103)

4 ख़ुदा की तस्बीह़ बयान करना फ़रिश्तों का त़रीक़ा है : जब अल्लाह पाक ने फ़रिश्तों से कहा कि उन तमाम चीज़ों का नाम बताओ और फ़रिश्तों ने येह कहा : ﴿قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَاۤ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बोले पाकी है तुझे हमें कुछ इल्म नहीं मगर जितना तू ने हमें सिखाया। (پ1، البقرۃ:32) फ़रिश्तों ने इस के ज़रीए अपने इज्ज़ का एतेराफ़ किया। (सिरातुल जिनान, 1/100) और येह बात भी मालूम हो गई कि तस्बीह़ बयान करना येह फ़रिश्तों का त़रीक़ा है।

5 नेक बन्दों के वसीले से दुआ क़बूल होती है : उ़लमा इस आयत "﴿فَتَلَقّٰۤى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَیْهِ ؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर सीख लिए आदम ने अपने रब से कुछ कलिमे तो अल्लाह ने उस की तौबा क़बूल की (پ1، البقرۃ:37)" के तह़त फ़रमाते हैं कि आदम عَلَیْهِ السَّلَام की तौबा इस लिए क़बूल हुई कि उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से दुआ मांगी थी। (सिरातुल जिनान, 1/107)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन कुरआने करीम को ग़ौरो फ़िक्र से पढ़ना इन्सान को सही़ह़ रास्ता दिखाता है और गुमराहियों से बचाता है। लेहाज़ा हमें चाहिए कि हम कुरआने पाक को उ़लमा से पढ़ें और समझें और जो नसीह़तें कुरआन में हैं उन पर अ़मल करने की कोशिश करें।

अस्तग़फ़ार के फ़ज़ाइलो फ़वाइद अह़ादीस की रौशनी में

इमरान रज़ा अ़त्तारी मदनी
(तख़स्सुसु फ़िल ह़दीस जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने अ़त्तार नागपुर)

अस्तग़फ़ार का माना है अल्लाह पाक से मग़फ़ेरत का सवाल करना। कुरआनो ह़दीस में अस्तग़फ़ार के फ़ज़ाइल बयान किए गए ताकि बन्दे अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह से बख़्शिश त़लब कर के कुर्बे इलाही के ह़क़दार बनते रहें।

अस्तग़फ़ार का हुक्म : अस्तग़फ़ार का हुक्म हर एक को है चाहे नेक हो या बद, क्यूंकि अस्तग़फ़ार किसी के ह़क़ में मुआ़फ़ी का सबब तो किसी के लिए बाइ़से रफ़्ए़ दरजात बनता है। ख़ुद नबी ए अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तालीमे उम्मत के लिए दिन में सौ मरतबा अस्तग़फ़ार करते थे ह़ालांकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ गुनाह का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता। क्यूंकि तमाम अम्बिया ए किराम गुनाहों से मासूम हैं।

आइए अस्तग़फ़ार के मुतअ़ल्लिक़ 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा पढ़िए :

1 एक मुनादी (यानी पुकारने वाला) हर रात पुकारता है कि है कोई दुआ़ करने वाला कि उस की दुआ़ क़बूल की जाए ? है कोई साइल कि उसे अ़त़ा किया जाए ? है कोई गुनाहों से मग़फ़ेरत त़लब करने वाला कि उस की बख़्शिश कर दी जाए ? (मुनादी येह निदा करता रेहता है) यहां तक कि फ़ज्र का वक़्त हो जाए।

(مسند احمد، 5/491، حدیث:16280)

2 जो शख़्स हर नमाज़ के बाद तीन मरतबा येह अस्तग़फ़ार पढ़े : اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ उस के गुनाह बख़्श दिए जाएंगे अगर्चे वोह मैदाने जंग से भागा हो। (عمل الیوم واللیلۃ لابن السنی، ص120، حدیث:137)

3 मैं रोज़ाना अल्लाह पाक से सौ मरतबा अस्तग़फ़ार करता हूं। (ابو داؤد، 2/121، حدیث:1515)

4 जिस शख़्स ने रोज़ाना सत्तर मरतबा अस्तग़फ़ार किया वोह झूटों में नहीं लिखा जाएगा और जिस शख़्स ने हर रात सत्तर मरतबा अस्तग़फ़ार किया वोह ग़ाफ़िलों में नहीं लिखा जाएगा। (جمع الجوامع، 8/527، حدیث:20492)

5 जिस शख़्स को येह पसन्द हो कि उस का नामए आमाल उस को ख़ुश कर दे वोह कसरत से अस्तग़फ़ार करे। (الاحادیث المختارۃ، 3/84، حدیث:892)

अस्तग़फ़ार के फ़वाइद : अ़ल्लामा सिराजुद्दीन इब्ने मल्क़न शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अस्तग़फ़ार के फ़वाइद कुछ यूं लिखे हैं : गुनाहों का मुआ़फ़ होना, उ़यूब का छुपा रेहना, रिज़्क़ में बरकत होना, लोगों का सलामत रेहना, माल में पाकी नसीब होना, उम्मीदों का पूरा होना, माल में बरकत होना, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह में बुलन्द दरजात का नसीब होना। (التوضیح لشرح الجامع الصحیح، 29/193)

मज़्कूरा फ़वाइद के इ़लावा दीगर फ़वाइद भी हैं जैसे अल्लाह का फ़ज़्ल और रिज़ा ह़ासिल होना, शैत़ान के वस्वसों और बुरे ख़यालात से मेह़फ़ूज़ होना, मुसीबत व परेशानी का दूर होना, नामए आमाल का गुनाहों से पाक व साफ़ होना, सवाब ह़ासिल होना, शर्ह़े सद्र होना और निस्यान ख़त्म होना वग़ैरा।

लेहाज़ा हमें चाहिए कि रोज़ाना कम अज़ कम सौ मरतबा अस्तग़फ़ार करें बिल ख़ुसूस जब जाने अन्जाने में गुनाह सरज़द हो जाए उस वक़्त फ़ौरन अल्लाह पाक की बारगाह में तौबा ओ अस्तग़फ़ार करें कि नेकी गुनाहों को मिटा देती है।

शौहर के हुक़ूक़

फ़ैसल यूनुस

(दौरए ह़दीस, जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने मदीना)

आज कल मियां बीवी में ना इत्तेफ़ाक़ी, बात बात पर लड़ाई झगड़े एक आ़म सी बात है और जब ऐसे दो अ़फ़राद में ना इत्तेफ़ाक़ी पैदा हो जाए जिन्हों ने पूरी ज़िन्दगी एक साथ ही रेहना हो तो फिर उन की ज़िन्दगी बहुत तल्ख़ और नताइज निहायत संगीन हो जाते हैं। आपस की येह ना इत्तेफ़ाक़ी ना सिर्फ़ दिलो दिमाग़ और दुन्या का अम्नो सुकून तबाहो बरबाद कर देती है बल्कि बसा अवक़ात तो दीनो आख़ेरत की बरबादी का सबब भी बन जाती है, इस ना इत्तेफ़ाक़ी का असर ना सिर्फ़ मियां बीवी पर होता है बल्कि उन की औलाद और उन से मुतअ़ल्लिक़ा दीगर तमाम लोगों पर भी होता है। इस ना इत्तेफ़ाक़ी का सब से बड़ा सबब मियां बीवी का एक दूसरे के हुक़ूक़ को ना जानना है ख़ुसूसन बीवी जब अपने शौहर की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत को नहीं समझती तो बात बात पर लड़ाई झगड़े मामूल बन जाते हैं। औ़रत पर लाज़िम है कि अपने शौहर के हुक़ूक़ का तह़फ़्फ़ुज़ करे और शौहर को नाराज़ कर के अल्लाह पाक की नाराज़गी का वबाल अपने सर ना ले कि इस में दुन्या ओ आख़ेरत दोनों की बरबादी है।

अल्लाह पाक ने क़ुरआने पाक में फ़रमाया : तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मर्द अफ़्सर हैं औ़रतों पर इस लिए कि अल्लाह ने उन में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी और इस लिए कि मर्दों ने उन पर अपने माल ख़र्च किए तो नेक बख़्त औ़रतें अदब वालियां हैं ख़ावन्द के पीछे हिफ़ाज़त रखती हैं जिस त़रह़ अल्लाह ने हिफ़ाज़त का हुक्म दिया।

(پ5، النسآء:34)

तफ़्सीरे त़बरी में है : मर्द अपनी औ़रतों को अदब सिखाने और जो अल्लाह पाक के हुक़ूक़ और शौहर के हुक़ूक़ उन पर वाजिब हैं, उन के बारे में बाज़ पुर्स करने में उन पर निगरान हैं। (طبری، 4/59، النسآء، تحت الآیۃ:34)

शौहर के हुक़ूक़ के मुतअ़ल्लिक़ 4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा पढ़िए :

1 **औ़रत शौहर के घर व औलाद पर निगरान है :** तुम सब निगरान हो और तुम में हर एक से उस के मा तह़तों के बारे में सवाल होगा, औ़रत अपने शौहर के घर और उस की औलाद पर निगरान है।

(مسلم، ص784، حدیث:4824 ملتقطاً)

2 **शौहर की इत्तेबाअ़ करना लाज़िम है :** जब कोई आदमी अपनी बीवी को बिस्तर पर बुलाए और वोह औ़रत ना आए फिर उस का शौहर नाराज़ी की ह़ालत में रात गुज़ारे तो फ़रिश्ते सुब्ह़ होने तक उस औ़रत पर लानत भेजते रेहते हैं। (مسلم، ص578، حدیث:3541)

3 **शौहर की ह़द दरजा ताज़ीम का हुक्म :** अगर मैं किसी शख़्स को किसी के लिए सज्दा करने का

हुक्म देता तो मैं औरत को हुक्म देता कि वोह अपने शौहर को सज्दा करे। (ترمذی، 2/386، حدیث:1162)

अल्लामा अली क़ारी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : क्यूंकि औरत पर शौहर के हुक़ूक़ बहुत ज़ियादा हैं और औरत उस के एहसानात का शुक्रिया अदा करने से आजिज़ है और येह हद दरजे का मुबालग़ा है ताकि पता चले कि औरत पर अपने शौहर की इताअत किस क़दर वाजिब व लाज़िम है कि अल्लाह पाक के सिवा किसी और को सज्दा करना जाइज़ नहीं लेकिन अगर जाइज़ होता तो सिर्फ़ और सिर्फ़ शौहर को सज्दा जाइज़ होता।

(مرقاۃ المفاتیح، 6/401، تحت الحدیث:3255)

4 शौहर की रिज़ा तलब करना वाजिब है : जो भी औरत इस हाल में इस दुन्या से गई कि उस का शौहर उस से राज़ी था तो वोह जन्नत में दाख़िल होगी।

(ترمذی، 2/386، حدیث:1164)

इमाम ज़हबी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़कूरा हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : बीवी पर अपने शौहर की रिज़ा तलब करना और उस की नाराज़ी से बचना वाजिब है।

(الکبائر للذہبی، ص200)

अल्लाह पाक से दुआ है कि वोह हमें शरीअत की पाबन्दी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, मियां बीवी को आपस में महब्बत और एक दूसरे के हुक़ूक़ का ख़याल रखने और इन हुक़ूक़ को अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तेहरीरी मुक़ाबले में मौसूल होने वाले मज़ामीन के मुअल्लिफ़ीन

जामेअतुल मदीना फ़ैज़ाने कन्ज़ुल ईमान, मुम्बई : मुहम्मद शाबान अत्तारी, मुहम्मद नदीम, मुहम्मद अरशद अत्तारी, मुहम्मद नासिर नूरी, क़ैस अत्तारी, शाहरुख़ अत्तारी, साहिल अत्तारी, शाहिद अत्तारी, मुहम्मद शेहबाज़ नूरी, मुहम्मद आरिफ़ रज़ा, अयाज़ अशरफ़ी, मुहम्मद कैफ़, मुहम्मद उमर नवाज़, मुहम्मद तमीम, मुहम्मद मक़्सूद आलम क़ादरी। **जामेअतुल मदीना फ़ैज़ाने अत्तार नागपुर :** मुहम्मद मेहताब रज़ा, अबुल हामिद इमरान रज़ा बनारसी, नवाज़िश रेहमानी, वसीम अकरम। **जामेअतुल मदीना फ़ैज़ाने इमाम अहमद रज़ा हैदराबाद :** अब्दुल माजिद, मुहम्मद साबिर अत्तारी, समीउल्लाह, फ़रमानुल मुस्तफ़ा। **मुतफ़र्रिक़ जामेआत :** मुहम्मद अरबाज़ अत्तारी, (जामेअतुल मदीना फ़ैज़ाने हसन ख़तीब चिश्ती धोलका अहमदाबाद), मुहम्मद रमज़ान अली अत्तारी (जामेअतुल मदीना फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आज़म, मालेगांव महाराष्ट्रा), मुहम्मद अरशदुल क़ादरी (जामेआ अशरफ़िय्या, मुबारक पुर, आज़म गढ़), अब्दुल लतीफ़ (जामेअतुल मदीना फ़ैज़ाने औलिया, अहमदाबाद)।

तेहरीरी मुक़ाबला उनवानात बराए अप्रेल 2024 ईसवी

1 हज़रते इल्यास عَلَیْہِ السَّلَام की क़ुरआनी सिफ़ात 2 क़त्ले नाहक़ की मज़म्मत अहादीस की रौशनी में 3 हाकिम के हुक़ूक़

मज़मून जम्अ करवाने की आख़री तारीख़ : 20 जनवरी 2024 ईसवी

मज़ीद तफ़्सीलात के लिए इस नम्बर पर राबेता करें :

+91 89782 62692

mazmoonnigarihind@gmail.com

ख़्वाबों की ताबीरें

क़ारेईन की त़रफ़ से मौसूल होने वाले चन्द मुन्तख़ब ख़्वाबों की ताबीरें

ख़्वाब ख़्वाब में देखा कि भेंस ह़म्ला कर रही है।

ताबीर : भेंस का ह़म्ला आवर होना सख़्ती या मशक़्क़त में मुब्तला होने की अ़लामत है। आप को चाहिए कि अल्लाह पाक की बारगाह में आ़फ़िय्यत के लिए दुआ़ करें और कुछ सदक़ा करें। अगर कोई सख़्त ह़ाजत दरपेश हो या कोई बड़ा और अहम काम करना हो तो इस से पेहले दो रक्अ़त नमाज़ सलातुल ह़ाजात की निय्यत से अदा कर के अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ़ करें।

ख़्वाब मैं ने ख़्वाब में देखा कि एक काला ख़त़रनाक सांप है जिस के सर पर 3 सफ़ेद निशान हैं, उसे देखने के बाद मैं बहुत डर गया और उस से भागने छुपने लगा, इस की ताबीर बता दीजिए।

ताबीर : ख़्वाब में सियाह सांप का काटना या ह़म्ला करना अच्छा नहीं, किसी बुरे शख़्स की त़रफ़ से नुक़्सान पहुंचाने की अ़लामत है, आप अपने अत़राफ़ पर नज़र रखें, बुरे लोगों से दूर रहें, अपने मुआ़मलात को ज़ियादा बारीक बीनी से देखते रहें। बहुत बेहतर होगा कि अल्लाह पाक की राह में इस निय्यत से कुछ ख़र्च करें कि अल्लाह पाक इस ख़्वाब के बुरे असर से आप को मेह़फ़ूज़ फ़रमाए, आमीन।

ख़्वाब मेरी अम्मी ने ख़्वाब में देखा कि वोह ऊंट पर सवार हैं और साथ और भी ऊंट हैं। इस की क्या ताबीर हो सकती है, राहनुमाई फ़रमा दीजिए।

ताबीर : इस की ताबीर सफ़र करने से है। जिसे ऊंट पर सवार देखा गया वोह किसी सफ़र पर रवाना होगी।

ख़्वाब मैं ने ख़्वाब में देखा कि मेरे बहेनोई बड़े जानवर का गोश्त दे रहे हैं, पेहले मेरी अम्मी को रान दी, फिर एक और रान से गोश्त का टुकड़ा काट कर मेरी बहेन को दिया और बाक़ी रान मेरी बड़ी बाजी को दी, मेरा छोटा भाई गोश्त के बारे में कोई बात करता है और मैं गोश्त की अगली टांग पकड़ कर खड़ी करती हूं और केहती हूं कि येह रान नहीं है बल्कि बाज़ू का गोश्त है, इस की ताबीर ज़रूर बता दीजिए। मैं ने सुना था कि ख़्वाब में कच्चा गोश्त देखना अच्छा नहीं होता, इस ख़्वाब में मेरे बहेनोई का हमारी फ़ेमेली में गोश्त बांटना कैसा है? अस्ल में हमारे उस बहेनोई का रवय्या हमारी फ़ेमेली से बहुत ख़राब था, वोह हमारे नुक़्सान का कोई मौक़अ़ हाथ से जाने नहीं देते थे मगर अब अचानक बग़ैर किसी वज्ह के उन्हों ने अपना रवय्या यक्सर तब्दील कर लिया है जिस ने हमें ह़ैरत में डाल दिया है।

ताबीर : ख़्वाब अच्छा है, ख़ुशह़ाली की अ़लामत है जैसा कि आप ने ख़ुद बयान किया कि मुआ़मलात में पेहले के मुक़ाबले में ज़ियादा बेहतरी है तो वोह इस ख़्वाब की बुन्याद पर ख़ुश ख़बरी है, अल्लाह पाक आप के ख़ानदान को सलामत रखे और मुआ़मलात को मज़ीद बेहतर बनाए, आमीन।

ख़्वाब मैं ने ख़्वाब देखा कि मेरी मां ने मुझे मेरे शौहर की वफ़ात की इत्त़ेलाअ़ दी, जिस पर मैं बहुत रोती हूं।

ताबीर : जिस की मौत ख़्वाब में देखी अगर वोह ज़िन्दा है तो उस के लिए दराज़ी ए उ़म्र बिल ख़ैर की दुआ़ करें। मगर याद रहे इस ख़्वाब की बुन्याद पर किसी की मौत की ख़बर नहीं दी जा सकती।

क्या आप अपने ख़्वाब की ताबीर जानना चाहते हैं?

ख़्वाब की तफ़्सीलात बज़रीए डाक माहनामा फ़ैज़ाने मदीना के पेहले सफ़्हे पर दिए गए एड्रेस पर भेजिए या इस नम्बर पर वोट्सएप कीजिए। +918978262692

आओ बच्चो ! हदीसे रसूल सुनते हैं

अज़ान
की फ़ज़ीलत व अहमिय्यत

हमारे प्यारे और आख़री नबी हज़रते मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِذَا نَادَى الْمُنَادِى فُتِحَتْ اَبْوَابُ السَّمَاءِ وَاسْتُجِيبَ الدُّعَاء यानी मुअज़्ज़िन जब अज़ान देता है तो आस्मान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और दुआ क़बूल होती है। (مستدرک للحاکم، 2/243، حدیث:2048)

मुसलमानों को नमाज़ में शिर्कत की दावत देने के लिए बुलन्द आवाज़ से कहे जाने वाले कलिमात "اللہ اکبر، اللہ اکبر۔۔۔" को अज़ान केहते हैं। अज़ान मुसलमानों की इबादात में से एक इबादत है, अल्लाह पाक की रिज़ा के लिए अज़ान देने वाले और उस का जवाब देने वाले को भी बहुत सारा सवाब मिलता है।

अज़ान की बहुत सारी बरकतें हैं जैसा कि अज़ान से डर और ख़ौफ़ ख़त्म हो जाता है, जब नमाज़ के लिए अज़ान दी जाती है तो शैतान वहां से भाग जाता है, जहां अज़ान होती है वहां रेहमत नाज़िल होती है।

प्यारे बच्चो ! जब अज़ान की इतनी अहमिय्यत है तो इस के आदाब भी इतने ही ज़ियादा हैं लेहाज़ा जब मस्जिद में अज़ान हो तो आप खेल कूद, होम वर्क वग़ैरा छोड़ कर ख़ामोशी से अज़ान सुनें और जैसे जैसे मुअज़्ज़िन साहिब केह रहे हैं वोही अल्फ़ाज़ आप भी दोहराते जाएं, हर कलिमे पर बहुत सारी नेकियां मिलेंगी, अल्लाह पाक राज़ी होगा। अज़ान के बाद दुआ की क़बूलिय्यत का वक़्त है इस लिए उस वक़्त दुआ मांगें, बेहतर येही है कि अज़ान के बाद वाली दुआ याद कर के वोही दुआ मांगें दीगर दुआएं भी मांग सकते हैं।

येह दुआ मक्तबतुल मदीना के शाएअ शुदा रिसाले **"फ़ैज़ाने अज़ान"** में से याद कर सकते हैं।

अल्लाह पाक हमें अज़ान की अहमिय्यत व फ़ज़ीलत को समझने और अमल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

हुरूफ़ मिलाइए !

रजब इस्लामी साल का सातवां महीना है, इस महीने में अल्लाह पाक के बहुत सारे नेक लोगों का इन्तेक़ाल हुवा, उन नेक लोगों में से एक बुज़ुर्ग हज़रते इमाम जाफ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه भी हैं, आप के वालिद का नाम : इमाम मुहम्मद बाक़िर, वालिदा का नाम : उम्मे फ़रवा, दादा का नाम : इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन और पर दादा का नाम : इमामे हुसैन है। आप अपने ज़माने के बहुत बड़े आ़लिम थे और आप से बड़े बड़े उ़लमा जैसे इमामे आज़म अबू हनीफ़ा, इमाम मालिक और इमाम सुफ़्यान सौरी वग़ैरा ने इ़ल्म हासिल किया है, आप की वफ़ात 15 रजब 148 हिजरी को मदीने में हुई और आप को जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न किया गया।

प्यारे बच्चो ! आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिला कर पांच नाम तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़ "जाफ़र" तलाश कर के बताया गया है। तलाश किए जाने वाले 5 नाम येह हैं : 1 हुसैन 2 बाक़िर 3 उ़म्मे फ़रवा 4 अबू हनीफ़ा 5 मालिक

م	ف	ع	ج	و	ی	س	ح	م
ق	ز	ہ	ہ	و	ر	ف	م	ا
ع	م	ز	ق	س	د	ا	م	ل
ث	ز	ن	ر	ف	ع	ج	ب	ع
ہ	ف	ی	ن	ح	و	ب	ا	م
ب	چ	ح	ث	س	ا	م	ق	ا
ا	ل	س	د	ی	ل	ا	م	ل
ق	د	ی	ے	ن	د	ل	ی	ک
ر	ا	ہ	ف	م	ا	ع	ق	ب
ن	م	ح	م	ا	م	ث	ع	ء

बा बरकत कुर्ता

दादाजान ! वैसे तो आ़म पानी बैठ कर पीते हैं और येही सुन्नत है तो फिर इसे खड़े हो कर क्यूं पिया जाता है ?

दर अस्ल अह़मद मामूं और उम्मे फ़ातिमा मुमानी पिछले हफ़्ते ही उ़मरा कर के आए थे, आज वोह भांजी भांजों को मदीने शरीफ़ की खजूरें, आबे ज़मज़म शरीफ़ और कुछ तह़ाइफ़ देने घर आए हुवे थे, दादाजान ने सब बच्चों को आबे ज़मज़म पिलाया तो उम्मे ह़बीबा ने पीने के बाद اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن पढ़ते ही सवाल कर दिया।

दादाजान : (सवाल पर मुस्कुराते हुवे) बेटा ! आबे ज़मज़म को ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام से निस्बत है, वोह आप عَلَیْہِ السَّلَام के क़दम से पैदा हुवा है इस लिए एह़तेराम के क़ाबिल है और खड़े हो कर पिया जाता है[1] और एक वज्ह येह भी है कि हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आबे ज़मज़म शरीफ़ को खड़े हो कर पिया[2] तो खड़े हो कर पीना हमारे लिए सुन्नत और सवाब का काम हो गया। इस मुबारक पानी के बारे में ह़दीसे पाक में है : आबे ज़मज़म हर बीमारी से शिफ़ा है।[3]

वाह ! दादाजान येह पानी तो दवा की त़रह़ हो गया कि जो पी ले उसे शिफ़ा मिल जाए। खुबैब जो आबे ज़मज़म पीने के बाद से अब तक ख़ामोश था आबे ज़मज़म का कमाल सुन कर चुप ना रेह सका।

जी बेटा ! ऐसा ही है, चलें मैं ऐसे ही एक शिफ़ा देने वाले पानी का वाक़ेआ़ सुनाता हूं जो यक़ीनन हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मोजिज़ा भी है।

सुहैब : (ख़ुशी और जोश से) येह हुई ना बात !

दादाजान : बेटा ह़ज़रते जाबिर के वालिद ह़ज़रते सिनान बिन त़लक़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर ईमान लाए थे। ईमान लाने के बाद उन्हों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मुझे अपने कुर्ते का एक टुकड़ा इ़नायत फ़रमा दीजिए, प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की दरख़्वास्त मान कर अपने कुर्ते का एक टुकड़ा उन्हें अ़त़ा फ़रमा दिया था। ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बेटे को बताया कि वोह टुकड़ा हमारे पास था, हम बीमारों के लिए उसे धो कर उस का पानी शिफ़ा के त़ौर पर उन्हें पिलाया करते थे।[4]

उम्मे ह़बीबा : दादाजान उन्हों ने हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से क़मीस का टुकड़ा किस वज्ह से मांगा था ?

दादाजान : (मुस्कुराते हुवे) बेटा सह़ाबा ए किराम नबी ए पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बहुत ज़ियादा मह़ब्बत करते थे, वोह ह़ज़रात आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की चीज़ें तबर्रुक और यादगार के त़ौर पर रखना पसन्द करते थे जैसा कि ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास भी एक जुब्बा मुबारका था एक बार उन्हों ने वोह जुब्बा निकाला और फ़रमाया कि येह वोह मुबारक जुब्बा है जिसे ह़बीबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पहेना करते थे और हम इसे धो कर बीमारों को पिलाते और शिफ़ा ह़ासिल करते हैं।[5] तो ह़ज़रते सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी क़मीस का टुकड़ा ह़ुज़ूर से मह़ब्बत की वज्ह से मांगा था और येह उन्ही की बात से ज़ाहिर हो रहा है क्यूंकि मांगते वक़्त उन्हों ने अ़र्ज़ की थी कि मैं इस क़मीस के टुकड़े से मानूस होता रहूंगा।[6]

ख़ुबैब : سُبْحٰنَ اللّٰہ ! क्या बात है हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की और आप के प्यारे प्यारे मोजिज़ात की।

---

(1) مراٰۃ المناجیح، 1/290 مفہوماً (2) مسلم، ص 862، حدیث: 5280 (3) جمع الجوامع، 6/190، حدیث: 18373 (4) الخصائص الکبریٰ، 2/25، ملخصاً (5) مسلم، ص 883، حدیث: 5409 (6) الخصائص الکبریٰ، 2/147، حجۃ اللہ علی العالمین، ص 426 ملخصاً۔

HOME WORK

कल शाम से नन्हे मियां को हल्का सा बुख़ार था, बदलते मौसम के बाइ़स हल्की सी बे एह़तियाती़ भी बीमारी को मज़ीद बढ़ा देती है इस लिए दादीजान के केहने पर नन्हे मियां को आज स्कूल से छुट्टी करवा ली गई थी। कुछ त़बीअ़त बेहतर हुई तो नन्हे मियां ने अम्मीजान से पूछा : मैं अपने दोस्त के घर जाऊं ?

लेकिन बेटा आप अभी तो बिस्तर से उठे हो ऐसी भी क्या जल्दी है दोस्त से मिलने की। अम्मीजान ने प्यार से नन्हे मियां के सर पर हाथ फेरते हुवे कहा।

नन्हे मियां : अम्मीजान एक तो उन से होम वर्क पूछना है वरना कल हर पीरियड़ में खड़ा होना पड़ेगा और साथ ही उन की कोंपी भी ले आऊंगा।

अम्मीजान : चलें ठीक है, एह़तियात़ से जाना और जल्दी वापस आना। जी बेहतर अम्मीजान, नन्हे मियां येह केहते हुवे बाहर निकल गए।

बिलाल भाई आप ने सभी किताबों का होम वर्क कर लिया है ? नन्हे मियां बिलाल भाई के घर के बाहर खड़े उन से पूछ रहे थे।

बिलाल : जी भाई ! सर फ़ारूक़ तो आए ही नहीं थे तो दो किताबों का काम मैं ने उन्ही के पीरियड में कर लिया था और बाक़ी किताबों का घर पहुंच कर लंच के बाद किया है।

चलें फिर आप मुझे गुजराती की नोट बुक दे दें, मैं आप को रात तक वापस कर जाऊंगा, नन्हे मियां ने कहा तो बिलाल ने अन्दर से कोंपी ला कर देते हुवे कहा : नहीं भाई ! रात को वापस देने की ज़रूरत नहीं है आप सुब्ह़ स्कूल लेते आइएगा।

लेकिन वादा (Promise) करें कि लाज़मी लाएंगे।

और नन्हे मियां जी अच्छा केहते हुवे घर वापस आ गए।

नन्हे मियां अपनी किताबें और कोंपियां बेग में रख कर सोना, यूं बिखरी ना पड़ी रहें, रात का खाना खाने और होम वर्क करने के बाद नन्हे मियां अभी अपनी जगह पर ही बैठे हुवे थे कि आपी ने पास से गुज़रते हुवे कहा। लेकिन नन्हे मियां पर तो नींद सवार थी लेहाज़ा आपी की बात सुनी अन सुनी करते हुवे अपने बिस्तर पर जा गिरे।

अगले दिन स्कूल में ब्रेक के दौरान नन्हे मियां क्लास रूम में ही बैठे लंच कर रहे थे। तभी बिलाल नन्हे मियां के पास आए तो नन्हे मियां ने उन्हें लंच की दावत दी, बिलाल ने कहा : "بَارَكَ اللهُ अल्लाह पाक आप को बरकत दे" मुझे मेरी कोंपी लौटा दें। नन्हे मियां ने जब कोंपी निकालने के लिए बेग देखा तो कोंपी ग़ाइब, सारी किताबें कोंपियां बाहर निकाल कर बारी बारी देखा लेकिन कोंपी ना मिली अब नन्हे मियां को एह़सास हुवा कि बिलाल भाई की कोंपी घर ही रेह गई थी। बिलाल भाई नाराज़ी का इज़्हार करते हुवे बोले : नन्हे मियां ! आप ने वादा किया था।

नन्हे मियां : जी भाई ! मैं ने वादा किया था लेकिन सुब्ह़ बेग में रखना भूल गया हूं आप नाराज़ मत हों।

इतने में ब्रेक ख़त्म हो चुकी थी सर आए तो इब्तेदाई सलाम व दुआ़ के बाद बच्चों को अपने होम वर्क वाली नोट बुक टेबल पर रखने का कहा और ना करने वाले बच्चों को अपनी जगह पर खड़े होने का कहा। और फिर बिलाल को खड़ा देख कर हैरानी से कहा : बिलाल बेटा ! आप ने भी होम वर्क नहीं किया ?

बिलाल : नहीं नहीं सर ! मैं ने होम वर्क तो किया था लेकिन कॉपी नन्हे मियां ले कर गए थे और वादा करने के बा वुजूद नहीं लाए।

जी नन्हे मियां ! क्या केह रहे हैं? बिलाल भाई ! सर ने नन्हे मियां की त़रफ़ घूमते हुवे पूछा।

नन्हे मियां : सर ! मेरी ग़लती नहीं है, रात होम वर्क करने के बाद मैं ने टेबल पर रखी थी लेकिन सुब्ह़ बेग में रखना भूल गया।

सर : नन्हे मियां ! ठीक है आप ने जान बूझ कर कॉपी घर में नहीं छोड़ी लेकिन जब आप ने वादा किया था तो आप को रात में ही बे परवाई नहीं करनी चाहिए थी। फिर सर ने पूरी क्लास को मुख़ातब करते हुवे कहा : बच्चो ! हमारे प्यारे और आख़री नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि तुम्हारे बेहतरीन लोग वोह हैं जो वादा पूरा करते हैं। (مسند ابی یعلیٰ، ج1، ص451، حدیث:1047)

हमारे बुज़ुर्ग वादे को इतनी अहमिय्यत देते थे कि एक बार शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه वादे की वज्ह से एक साल तक एक शख़्स का इन्तेज़ार करते रहे। (اخبار الاخیار، ص12) वादा पूरा करने से आदमी पर लोगों का एतेमाद बढ़ता है और अपनी ज़बान और वादे का भरम रखने वाली क़ौमें ही दुन्या में तरक़्क़ी करती हैं। तो प्यारे बच्चो ! जब भी किसी से वादा किया जाए तो उसे निभाने में किसी क़िस्म की बे परवाई या सुस्ती नहीं करनी चाहिए।

बच्चों और बच्चियों के 6 नाम

सरकारे मदीना ﷺ ने फ़रमाया : आदमी सब से पेहला तोह़फ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है लेहाज़ा उसे चाहिए कि उस का नाम अच्छा रखे। (جمع الجوامع، 3/285، حدیث:8875) यहां बच्चों और बच्चियों के लिए 6 नाम, उन के माना और निस्बतें पेश की जा रही हैं।

बच्चों के 3 नाम

नाम	पुकारने के लिए	माना	निस्बत
मुह़म्मद	अ़ब्दुस्समद	बेनियाज़ का बन्दा	अल्लाह पाक के सिफ़ाती नाम की त़रफ़ लफ़्ज़े अ़ब्द की इज़ाफ़त के साथ
मुह़म्मद	जाफ़र	बहुत वसीअ़ नेहर	सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबी का मुबारक नाम
मुह़म्मद	ख़ब्बाब	तेज़ तेज़ चलने वाला	सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबी का मुबारक नाम

बच्चियों के 3 नाम

उमामा	इरादा करने वाली	सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी नवासी का मुबारक नाम
रबाब	सफ़ेद बादल	सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सह़ाबिया का मुबारक नाम
सारिया	रात में चलने वाली	ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की सहेली का नाम

ख़वातीन की विरासत

अल्लाह पाक के प्यारे और आख़री नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तशरीफ़ लाने से जहां दुन्या के बहुत से हिस्से से कुफ़्रो शिर्क का ख़ातिमा हुवा, बातिल रस्में ख़त्म हुईं वहीं यतीमों के माल और औरतों के हुक़ूक़े मीरास के सिलसिले में भी तफ़्सीली अहकामात नाज़िल हुवे। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी के नतीजे में औरतों पर होने वाले एहसानात में से एक अ़ज़ीम एहसान येह भी है कि ख़वातीन को भी विरासत का हक़दार क़रार दिया गया है।

इस्लाम से पेहले औरत मीरास के हक़ से ना सिर्फ़ मेहरूम थी बल्कि ख़ुद ही सामाने मीरास बनी हुई थी। इस के बर अ़क्स इस्लाम ने मर्दों और औरतों दोनों को विरासत के माल में हिस्सेदार ठेहराया है। चुनान्चे पारह 4, सूरतुन्निसा, आयत नम्बर 7 में अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ﴿لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۪ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ؕ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا(۷)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : मर्दों के लिए उस (माल) में से (विरासत का) हिस्सा है जो मां-बाप और रिश्तेदार छोड़ गए और औरतों के लिए उस में से हिस्सा है जो मां-बाप और रिश्तेदार छोड़ गए, माले विरासत थोड़ा हो या ज़ियादा। (अल्लाह ने येह) मुक़र्रर हिस्सा (बनाया है।)[1] इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में लिखा है : ज़मानए जाहिलिय्यत में औरतों और बच्चों को विरासत से हिस्सा ना देते थे, इस आयत में उस रस्म को बातिल किया गया। इस से येह भी मालूम हुवा कि बेटे को मीरास देना और बेटी को ना देना सरीह ज़ुल्म और क़ुरआन के ख़िलाफ़ है दोनों मीरास के हक़दार हैं और इस से इस्लाम में औरतों के हुक़ूक़ की अहमिय्यत का भी पता चला।[2]

केहते हैं कि येह तरक़्क़ी याफ़्ता दौर है मगर अफ़्सोस की बात है कि आज के तरक़्क़ी याफ़्ता केहलाने वाले इस दौर में भी उ़मूमन ख़वातीन को उन के हक़ के मुताबिक़ विरासत में हिस्सा नहीं मिलता। कई जगह जेहालत की वज्ह से और कई जगह ग़फ़्लत की वज्ह से और कई जगह ज़ुल्म की वज्ह से मुस्तहिक़ वारिस को उस का हिस्सा नहीं दिया जाता। ऐसा लगता है कि हमारे तर्ज़े ज़िन्दगी (Life style) का महवर इस्लामी तालीमात के बजाए रस्मो रवाज की पाबन्दी बनता जा रहा है। जहेज़ रवाज है शायद इस लिए ज़रूर देते हैं, ग़रीब से ग़रीब लड़की की शादी भी बग़ैर जहेज़ के हो गई हो ऐसा सुनने

में बहुत ही कम आता है लेकिन विरासत फ़र्ज़ होने के बा वुजूद इस में सुस्ती और काहिली से काम लेना आ़म होता जा रहा है।

कभी येह उ़ज़्र बयान किया जाता है कि लड़की की शादी धूम धाम से कर दी थी, इस लिए वोह मीरास की ह़क़दार नहीं है तो कभी दूसरी शादी कर लेने की वज्ह से बेवा को उस के पेहले शौहर के तर्के से ह़िस्सा नहीं दिया जाता जबकि जो औ़रत शौहर के इन्तेक़ाल के वक़्त उस के निकाह़ में हो उसे शरई एतेबार से अपने शौहर की विरासत से ह़िस्सा मिलेगा, अगर्चे वोह इ़द्दत पूरी होने के बाद दूसरी शादी कर ले जब भी उस का ह़क़्क़े विरासत बाक़ी रेहता है, ख़त्म नहीं हो जाता।[3] बाज़ औक़ात विरासत की ह़क़दार औ़रतों जैसे बेटियां और बहेनों को दीगर रिश्तेदार अपना ह़िस्सा ना लेने और लिए बग़ैर मुआ़फ़ कर देने का केहते और इस पर ज़ोर देते हैं। जबकि मुआ़फ़ करने या करवाने से उन का ह़िस्सा ख़त्म नहीं होगा, मर्दों पर लाज़िम है कि वोह ह़क़दार औ़रतों को उन का ह़िस्सा दें और ख़ानदान की औ़रतें भी इस में अपना मुस्बत किरदार अदा करें। नीज़ अपने प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान भी ज़रूर अपने पेशे नज़र रखें, चुनान्चे अल्लाह पाक के आख़री नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ”مَنْ قَطَعَ مِيْرَاثَ وَارِثِهٖ قَطَعَ اللّٰهُ مِيْرَاثَهٗ مِنَ الْجَنَّةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ“ यानी जो शख़्स अपने वारिस की मीरास काटेगा अल्लाह पाक क़ियामत के दिन जन्नत से उस की मीरास को काट देगा।[4]

ब ह़ैसिय्यते औ़रत मैं ख़वातीन से गुज़ारिश करूंगी कि वोह अपनी हम सिन्फ़ को मिलने वाले शरई ह़क़ की वसूली में मुआ़विन व मददगार बनें। अगर आप मां हैं और बेटे ग़ैर मुन्सिफ़ाना तक़्सीम का फ़ैसला कर रहे हों तो ग़ैर जानिबदारी के साथ अल्लाह पाक के अह़कामात और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन पर अ़मल पैरा होने की हिदायत व ताकीद कर के ना सिर्फ़ अल्लाह की रिज़ा की ह़क़दार बन सकती हैं बल्कि औलाद में इन्साफ़ करने की रविश इख़्तियार कर के ख़ानदान को टूटने से भी बचा सकती हैं।

अगर आप भाभी हैं तो अपने शौहर को बहेन का ह़िस्सा दबा लेने की तरग़ीब देने के बजाए अपनी नन्द के हुक़ूक़ की अदाएगी में मददगार बनें। अपने ऊपर रख कर सोचें कि अगर आप को अपने वालिद या वालिदा के तर्के में से ह़िस्सा ना मिले या आप के बाद आप की बेटी को उस ह़क़ से मेह़रूम कर दिया जाए तो क्या येह आप को गवारा होगा ? जब भी विरासत की तक़्सीम का मुआ़मला दरपेश हो तो हमें चाहिए कि सब से पेहले दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत से राहनुमाई ह़ासिल करें, और फिर जो राहनुमाई मिले उसी के मुत़ाबिक़ विरासत के माल को तक़्सीम करें और उस की तक़्सीम में हरगिज़ हरगिज़ ताख़ीर ना करें बल्कि जिस क़दर जल्दी हो सके हर शख़्स को उस का ह़िस्सा दे दें ताकि वोह अपनी मर्ज़ी के मुत़ाबिक़ उसे इस्तेमाल कर सके, नीज़ मीरास की तक़्सीम में ताख़ीर की वज्ह से वक़्त गुज़रने के साथ साथ पेचीदगियां भी बढ़ती जाती हैं, नस्ल दर नस्ल तर्का तक़्सीम ना करने से आ़म तौ़र पर येही होता है कि तर्का कई कई पुश्तों तक ऐसे अफ़राद के तसर्रुफ़ व इस्तेमाल में रेहता है जिन का उस पर कोई ह़क़ नहीं होता मगर इस के बा वुजूद उस से नफ़्अ़ उठा रहे होते हैं जबकि बहुत से ह़क़दार अपने ह़क़ से मेह़रूम रेह जाते हैं और उन का माल ग़ैर मुस्तह़िक़ अफ़राद के हाथों में चला जाता है। लेहाज़ा आ़फ़िय्यत इसी में है कि इस्लाम के दिए हुवे अह़कामात के मुत़ाबिक़ जल्द अज़ जल्द मीरास का माल तक़्सीम कर दिया जाए।

अल्लाह पाक से दुआ़ है कि हमें इन बातों पर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) پ4، النسآء:7 (2) صراط الجنان، 2/149 (3) دیکھئے: فتاوٰی فیض الرسول، 2/728 (4) مشکاۃ المصابیح، 1/567، حدیث:3078۔

केमरे की आंख

कुछ मक़ासिद की बिना पर मुख़्तलिफ़ मक़ामात मसलन ऑफ़िसिज़, फ़ेक्ट्रीज़, बेन्कों, कमरए इम्तेहान और दीगर कई अहम जगहों पर केमरे लगे होते हैं और बाज़ जगह लिखा भी होता है कि "ख़बरदार ! केमरे की आंख आप को देख रही है !" जिस के सबब लोग मोहतात़ हो जाते और वहां ऐसा काम करने से परहेज़ करते हैं जो बाद में उन के लिए किसी परेशानी का सबब बने, उन को येही डर लगा होता है कि केमरे में सब रीकॉर्ड हो रहा है, अगर हम ने कुछ ग़लत़ किया तो वोह सब के सामने आ जाएगा और लोगों के नज़दीक हमारा जो ईमेज बना हुवा है वोह ख़राब हो जाएगा । यूंही अगर केमरा तो ना हो मगर कोई देख रहा हो तो भी बहुत से लोग रुस्वाई और बे इ़ज़्ज़ती वग़ैरा के डर से कई ग़लत़ और ना करने वाले कामों से खुद को रोक कर रखते हैं । मगर कई लोग ऐसे होते हैं कि उन्हें जब ऐसी तन्हाई मुयस्सर हो कि जहां उन्हें ना कोई दूसरा इन्सान देख रहा हो और ना ही वहां कोई केमरा लगा हो तो फिर वोह लोग वहां अल्लाह पाक की ना फ़रमानी कर गुज़रते हैं, येह समझते हुवे कि कोई नहीं देख रहा तो किसी का माल उठा कर जेब में रख लिया, दुकान पर सामान में मिलावट कर दी, नाप तोल में कमी कर दी और घर पर कमरे में छुप कर मोबाइल पर ग़लत़ चीज़ें देख लीं । ह़ालांकि मुसलमान का तो इस बात पर ईमान होता है कि मैं लोगों के सामने होऊं या फिर तन्हाई में, मेरा रब तो हर वक़्त ही मुझे देख रहा है । चुनान्चे क़ुरआने करीम में है : ﴿اِنَّ اللّٰهَ بَصِیْرٌۢ بِالْعِبَادِ(۴۴)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह बन्दों को देखता है । (پ24، المومن:44) नीज़ मुसलमान का तो इस बात पर भी ईमान है कि अल्लाह पाक हमारे साथ है, चुनान्चे क़ुरआने पाक में है :

﴿وَهُوَ مَعَكُمْ اَیْنَ مَا كُنْتُمْؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ(۴)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह तुम्हारे साथ है तुम कहीं हो और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है (پ27، الحدید : 4) लेहाज़ा जब लोग मौजूद हों या फिर केमरे की आंख देख रही हो तो हम कुछ ग़लत़ करने से डरते हैं तो फिर अल्लाह पाक तो इस बात का ज़ियादा ह़क़दार है कि हम उस से ह़या करते हुवे हर वक़्त और हर जगह ही बुरा काम करने से बचें । तन्हाई में गुनाह करने वालों के बारे में प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं अपनी उम्मत में से उन लोगों को जानता हूं कि जब वोह क़ियामत के दिन आएंगे तो उन की नेकियां तिहामा के पहाड़ों की मानिन्द होंगी लेकिन अल्लाह पाक उन्हें रौशनदान से नज़र आने वाले गुबार के बिखरे हुवे ज़र्रों की त़रह़ (बे वुक़ूअ़त) कर देगा । किसी ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! हमारे सामने उन लोगों का साफ़ साफ़ ह़ाल बयान फ़रमा दीजिए ताकि हम जानते हुवे उन लोगों में शरीक ना हो जाएं । हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "वोह तुम्हारे भाई, तुम्हारे हम क़ौम होंगे, रातों को तुम्हारी त़रह़ इ़बादत किया करेंगे, लेकिन वोह लोग तन्हाई में बुरे अफ़्आ़ल के मुर्तकिब होंगे ।" (ابن ماجہ، 4/489، حدیث:4345)

काश ! आंखों से ह़राम देखते वक़्त, कानों से ह़राम सुनते वक़्त, हाथ से ह़राम रोज़ी कमाते वक़्त, अल ग़रज़ कि जल्वत हो या ख़ल्वत, कहीं भी कोई भी गुनाह करते वक़्त हमें येह ख़याल आ जाए कि "अल्लाह हमें देख रहा है !" काश कि उस वक़्त हमें अपने पैदा करने वाले रब से ह़या आ जाए और हम ज़िस त़रह़ लोगों के सामने गुनाहों से बचते हैं ऐसे ही तन्हाई में भी गुनाहों से बचने में कामयाब हो जाएं ।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

इस्लामी बहेनों के शरई मसाइल

1 आंख में काजल लगे होने की सूरत में वुज़ू और ग़ुस्ल का हुक्म

सवाल : क्या फरमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि आंख में काजल लगे होने की सूरत में क्या वुज़ू और गुस्ल हो जाएगा ? या फिर वुज़ू और गुस्ल से पेहले काजल साफ़ करना होगा ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

वुज़ू और गुस्ल में आंख के अन्दरूनी हिस्से में पानी पहुंचाना वाजिब या सुन्नत नहीं, लेहाज़ा आंख में काजल लगे होने की सूरत में भी वुज़ू और गुस्ल अदा हो जाएगा। अलबत्ता काजल या सुर्मे का जिर्म अगर आंख के कोए (यानी नाक की त़रफ़ आंख के कोने) पर या पलकों पर लगा हो तो वुज़ू और गुस्ल में उसे छुड़ाना होगा, क्यूंकि वुज़ू या ग़ुस्ल में चेहरा धोते हुवे आंखों के कोए और पलकों को धोना फ़र्ज़ होता है।

(फ़तावा आ़लमगीरी, 1/7,13 मुलख़्ख़सन – बदाइउ़ल सनाएअ़, 1/19–फ़तावा रज़विय्या, 1 (अलिफ़) /444)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 शौहर की वफ़ात के बाद देवर से शादी करना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि एक औ़रत के चार बच्चे हैं उस के शौहर का इन्तेक़ाल हो गया है और इन्तेक़ाल की इद्दत भी ख़त्म हो चुकी है, तो क्या इस सूरत में उस औ़रत का निकाह़ शौहर के छोटे भाई यानी अपने देवर से हो सकता है, जबकि उस औ़रत की सब से बड़ी लड़की और उस के देवर की उ़म्र में फ़क़त़ चार साल का ही फ़र्क़ है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जी हां ! पूछी गई सूरत में उस औ़रत का अपने देवर से निकाह़ करना जाइज़ है जबकि मुमानेअ़त की कोई और वज्ह ना हो, क्यूंकि क़ुरआने अ़ज़ीम में मोह़रिमात यानी जिन औ़रतों से निकाह़ ह़राम क़रार दिया गया है उन को वाज़ेह़ त़ौर पर बयान कर दिया गया है और भाभी इन मोह़रिमात में से नहीं। नीज़ देवर का अपनी भाभी से उ़म्र में काफ़ी छोटा होना भी कोई वज्हे मुमानेअ़त नहीं।

(फ़तावा रज़विय्या, 11/290–फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल, 1/578)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 नफ़्ली रोज़े में ह़ैज़ आ गया तो क्या नफ़्ली रोज़े की क़ज़ा लाज़िम होगी ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि अगर किसी औ़रत ने नफ़्ली रोज़ा रखा और उसे रोज़े के दौरान ह़ैज़ आ गया तो क्या नफ़्ली रोज़े की क़ज़ा लाज़िम होगी या रोज़ा मुआ़फ़ है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में मज़कूरा औ़रत पर उस नफ़्ली रोज़े की क़ज़ा लाज़िम है।

दुर्रे मुख़्तार में है। ولو شرعت تطوّعاً فيهما فحاضت قضتهما यानी अगर औ़रत ने नफ़्ली रोज़ा रखा या नफ़्ली नमाज़ शुरूअ़ की और इस दौरान ह़ैज़ आ गया तो नफ़्ली नमाज़ या नफ़्ली रोज़े दोनों सूरतों में क़ज़ा लाज़िम है।

(अद्दुर्रुल मुख़्तार मअ़ रद्दुल मुह़तार, 1/533)

सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃ फ़रमाते हैं : "रोज़े की ह़ालत में ह़ैज़ या निफ़ास शुरूअ़ हो गया तो वोह रोज़ा जाता रहा उस की क़ज़ा रखे, फ़र्ज़ था तो क़ज़ा फ़र्ज़ है और नफ़्ल था तो क़ज़ा वाजिब।"

(बहारे शरीअ़त, 1/382)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

"या रब करम कर" के नौ हुरूफ़ की निस्बत से कम्प्यूटर वग़ैरा इस्तेमाल करने वालों के लिए 9 मदनी फूल

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

1 कम्प्यूटर मोनीटर की जगह कम्प्यूटर एल सी डी (L.C.D) या एल ई डी (L.E.D) आंखों के लिए कम नुक़्सान देह है 2 कम्प्यूटर स्क्रीन (Screen) की रौशनी ज़ियादा तेज़ ना रखें और ना ही सेवर या ट्यूब लाईट का अ़क्स उस पर पड़ने दें 3 स्क्रीन पर तवज्जोह रखने की कोशिश पलकें झपकाना कम कर देती है जिस की वज्ह से आंखों में तक्लीफ़ हो सकती है, लेहाज़ा ह़स्बे मामूल पलकें झपकाते रहिए 4 पंखे (Fan) वग़ैरा की हवा बराहे रास्त आंखों पर ना पड़ने दीजिए 5 आंखों और स्क्रीन का दरमियानी फ़ास्ला दो से अढ़ाई फुट रखिए 6 स्क्रीन को आंखों से 4 या 5 इंच (Inch) नीचे होना चाहिए 7 अगर नज़र के ऐनक (Glasses) इस्तेमाल करते हैं तो कम्प्यूटर पर काम करते वक़्त भी उसे पहेने रहिए 8 हर 19 मिनट बाद स्क्रीन से नज़रें हटा कर 19 फुट दूर रखी चीज़ को 19 सेकन्ड देख लीजिए। मसलन सब्ज़ गुम्बद शरीफ़ का मॉडल (Model) रख लिया और हो भी मदीने के रुख़ पर 9 ह़दीस शरीफ़ में है : तमाम सुर्मों में बेहतर सुर्मा इस्मिद है कि येह निगाह को रौशन करता और पलकें उगाता है। (ابن ماجہ،4/115، حدیث:349) हो सके तो सोते वक़्त रोज़ाना इस्मिद सुर्मा लगा लिया करें।

मक्तबतुल मदीना की किताबें घर बैठे ह़ासिल करने के लिए इस नम्बर 9978626025 पर Call SMS WhatsApp करें

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी इन्डिया का साथ दीजिए और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर मदनी अ़त़िय्यात (Donation) के ज़रीए माली तआ़वुन कीजिए !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही (Reformatory), फ़लाही (Welfare) ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER
HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI - BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD - 380028. (GUJARAT)
PLACE OF PRINTING : MODERN ART PRINTERS - OPP : PATEL TEA STALL, DABGARWAD NAKA, DARIYAPUR, AHMEDABAD - 380001.
PLACE OF PUBLICATION : BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD-380028. (GUJARAT) INDIA.